सिक्किम विश्वविद्यालय

(संसद के अधिनियम द्वारा वर्ष 2007 में स्थापित एक केंद्रीय विश्वविद्यालय)

वार्षिक रिपोर्ट
2012-13

6 ठा मील, सामदुर, पो. तादोंग
गंगटोक 737 102
www.sikkimuniversity.ac.in

विषय-वस्तु

1.	कुलपति की कलम से	1
2.	कार्यकारी सारांश	2-3
3.	सिक्किम विश्वविद्यालय के बारे में	3-5
4	विश्वविद्यालय के पदाधिकारी	5
•	शैक्षणिक परिषद	6-9
•	वित्त समिति	9-10
•	कार्यकारिणी परिषद	10-12
5.	अध्ययन विद्यापीठ	13-66
•	कंप्यूटर विज्ञान विद्यापीठ	13-14
•	पर्यावरण अध्ययन विद्यापीठ	14-15
•	वैश्विक अध्ययन विद्यापीठ	16-21
•	मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ	21-32
•	स्वदेशी एवं लोक अध्ययन विद्यापीठ	32-36
•	भाषा एवं भाषा विज्ञान विद्यापीठ	37-40
•	विधि एवं शासन विद्यापीठ	40-42
•	जीवन विज्ञान विद्यापीठ	42-45
•	प्रबंधन एवं वाणिज्य विद्यापीठ	46-47
•	मीडिया, संचार एवं सूचना विज्ञान विद्यापीठ	47-49
•	शांति, द्वंद्व एवं मानव सुरक्षा अध्ययन विद्यापीठ	50-54
•	भौतिक एवं रासायनिक विज्ञान विद्यापीठ	54-60
•	नीति नियोजन एवं अध्ययन विद्यापीठ	60-63
•	सतत विकास एवं आजीविका प्रबंधन विद्यापीठ	63-66
6.	केंद्रीय सेवाएँ	67-75
•	केन्द्रीय पुस्तकालय	67-68
•	छात्रों की गतिविधियाँ	68-70
•	परीक्षा विभाग	70-71
•	वित्त विभाग	71-72
•	स्वास्थ्य केन्द्र	73
•	हिन्दी प्रकोष्ठ	73-75

कुलपति की कलम से

मैंने इस आलोच्य वर्ष के मध्य 15 अक्टूबर को सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया.जब मैं यहाँ आया, मेरे सामने कुछ बहुत ही उत्साहवर्धक और कुछ बेहद निराशाजनक स्थितियाँ सामने आई. खुशी इस बात की थी कि यहाँ बहुत ही उच्च स्तर की कार्य संस्कृति के साथ बेहद अनुशासित और प्रतिबद्ध शिक्षण और प्रशासनिक स्टाफ था. दूसरे, अधिकांश कर्मचारी युवा और ऊर्जावान थे. तीसरे, विश्वविद्यालय विभिन्न जाति, नस्ल और धर्म का सम्मिलित समुदाय था. अंत में, यहाँ जाति या लिंग के आधार पर शायद ही कोई भेदभाव रहा तथा रैगिंग की भी कोई घटना नहीं थी. नकारात्मक पक्ष यह था कि विश्वविद्यालय स्थानीय समाज और राज्य सरकार से कटा हुआ था. स्थानीय लोग इसे अपने विश्वविद्यालय के रूप में नहीं मानते थे और यहाँ तक, कि अगर उनकी पसंद के अनुसार विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्य नहीं होता तो वे विश्वविद्यालय के सुचारु संचालन में बाधा डालते थे. कई प्रशासनिक कर्मचारियों की भर्ती पूरी नहीं हुई थी और छह महीने से अधिक समय तक लंबित रखी गई थी तथा परिसर की भूमि का भी कोइ नामो-निशान नहीं था. विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद ने भी विश्वविद्यालय परिसर के निर्माण के उद्देश्य से गंगटोक के आसपास के क्षेत्र में दो हिस्से में जमीन खरीदने की मंजूरी दी थी. इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालय में पुस्तकालयाध्यक्ष को छोड़कर सभी वैधानिक पद रिक्त पड़े थे, जिससे विश्वविद्यालय प्रशासनिक रूप से कमजोर हो गया.

कुछ अच्छी बातें पूरे वर्ष जारी रहीं, जिससे आलोच्य वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय की बाधाओं को आंशिक रूप से दूर किया जा सकता है. विश्वविद्यालय को 25 जनवरी 2013 को 265.94 एकड़ जमीन हस्तांतरित कर दी गई है और शेष 34.06 एकड़ जमीन जल्द ही हस्तांतरित हो रही है. विश्वविद्यालय ने किसी भी प्रतिरोध के बिना कुछ प्रशासनिक कर्मचारियों की भर्ती प्रक्रिया को पूरा किया पिछले साल की तुलना में स्थानीय समाचार पत्रों में विश्वविद्यालय के लिए प्रतिकूल टिप्पणियाँ भी कम हो रही है. यह प्रतीत हो रहा है कि स्थानीय लोग और राज्य सरकार मोटे तौर पर विश्वविद्यालय को अपनाने लगे हैं .

उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए मैं विश्वविद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की आशा करता हूं. एक बार अपने परिसर में स्थानांतरित हो जाने के बाद सामान्य रूप में देश के और विशेष रूप से राज्य के युवाओं को अधिक रोजगारोन्मुख, राष्ट्र के प्रति अधिक प्रतिबद्ध और अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है. जब हम वास्तव में ये सब करेंगे तो अनेक अन्य चुनौतियाँ भी आएंगी किन्तु उन चुनौतियों को संस्था-निर्माण की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करना होगा, जिससे कि राष्ट्र का भी निर्माण होता है।

टी.बी. सुब्बा

कार्यकारी सारांश

राष्ट्रीय राजमार्ग 31 ए के किनारे लगभग 17 किलोमीटर की दूरी में फैले 19 से अधिक भवनों में कार्य करने के कारण सामने आई कई गंभीर समस्याओं का सामना करने के बावजूद वर्ष 2012-13 सिक्किम विश्वविद्यालय गतिविधियों से भरपूर रहा. इस वर्ष के दौरान कई विभागों से एमफिल के पहले बैच उत्तीर्ण हुए और उनमें से अधिकांश छात्रों ने पीएचडी करने के लिए प्रवेश लिया. एनएमआर नामक एक बहुत कीमती उपकरण, जिसकी स्थापना बहुत लम्बे समय से विभिन्न कारणों से लंबित थी, अंतत: स्थापित किया गया और यह अच्छी तरह से काम कर रहा है. पर्याप्त वोल्टेज की कमी के कारण लंबित रहे कुछ अन्य कीमती उपकरण भी समीक्षाधीन वर्ष के दौरान स्थापित किए गए. यद्यपि इस वर्ष अधिक कीमती उपकरण नहीं खरीदे गए फिर भी सभी उपकरणों को स्थापित किया गया और संकाय सदस्यों और छात्रों ने उनका भरपूर इस्तेमाल किया. विश्वविद्यालय के दो संकाय सदस्य अंतरराष्ट्रीय पेटेंट अधिकार प्राप्त करने में भी सफल रहे.

आलोच्य वर्ष का एक मुख्य आकर्षण सिक्किम सरकार द्वारा जनवरी 2013 में विश्वविद्यालय परिसर के लिए 265.94 एकड़ जमीन सौंपना हैं. शेष 34.06 एकड़ जमीन प्राप्त करने की प्रक्रिया शुरू की गई है और शीघ्र ही विश्वविद्यालय को जमीन सौंपी जा सकती है. परिसर की 265.94 एकड़ जमीन का समोच्च मानचित्रण का कार्य पूरा हो चुका है. वनस्पति वैज्ञानिक और प्राणि वैज्ञानिकों के एक समूह द्वारा परिसर की जैव विविधता का सर्वेक्षण-कार्य भी पूरा हो गया है. चारदीवारी के डिजाइन और अनुमान संबंधित अधिकारियों द्वारा अनुमोदित किया जा रहा हैं और चारदीवारी का निर्माण कार्य जल्द ही शुरू होने की उम्मीद है.

आलोच्य वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय ने यूजीसी के निर्देशानुसार अपने शैक्षिक कार्यक्रमों, अर्द्ध शैक्षिक कार्यक्रमों, परीक्षा और प्रशासनिक मामलों आदि पर निगरानी रखने के लिए एक समीक्षा समिति का गठन किया. समिति की रिपोर्टों को अधिकारियों के समक्ष उनके विचार के लिए रखा गया था और जो भी अनुमोदित किया गया था उसको आंशिक रूप से लागू किया गया है. इस सुधार की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि अध्ययन विद्यापीठ और विभागों से संबन्धित कानून 15 में संशोधन किया गया. इस क़ानून में पहले के 17 विद्यापीठों के बजाय अब 6 विद्यापीठ हैं, जिससे विश्वविद्यालय के विद्यापीठों के प्रशासन को बनाए रखने की स्थापना लागत को लगभग एक तिहाई कम कर दी है. इसके अलावा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देश के तहत या सिक्किम राज्य में स्नातक और स्नातकोत्तर विषयों के बीच एक संपर्क बनाने के क्रम में कुछ नए विभाग (जैसे 'शिक्षा' और 'हिन्दी') शुरू किए गए थे.

युवा संकाय सदस्यों की एक बड़ी संख्या ने देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पुनश्चर्या या अभिविन्यास पाठ्यक्रमों में भाग लिया और उनमें से कई संकाय सदस्यों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों और कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए सहायता दी गई. शिक्षण समुदाय में लगभग सभी सहायक प्राध्यापक होने पर भी और प्रत्येक विभाग में संकाय सदस्यों की कम संख्या के कारण भारी शिक्षण भार होने के बावजूद भी उनमें से अनेकों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में महत्वपूर्ण प्रकाशन किया है और अपनी परियोजनाओं के लिए कोष की पर्याप्त राशि प्राप्त की है. उनमें से अनेकों के पास भारत में और विदेशों मे अन्य संस्थानों के साथ सहयोग के लिए सफल प्रस्ताव थे .

विश्वविद्यालय भारतीय संसद द्वारा दिए गए जनादेश को पूरा करने हेतु आगे बढ़ने के लिए तैयार है और बड़ी संख्या में इन युवा

और ऊर्जावान संकाय सदस्यों और प्रशासनिक कर्मचारियों के साथ कुछ भी हासिल करना असंभव प्रतीत नहीं होता. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सिक्किम सरकार और सिक्किम के लोगों से प्राप्त की जारी रही निरंतर सहायता के साथ विश्वविद्यालय निस्संदेह पूर्वी हिमालय के लिए एक शैक्षिक केंद्र बनने का अपना लक्ष्य पूरा कर सकेगा.

संबद्ध महाविद्यालय

निम्नलिखित कॉलेज सिक्किम विश्वविद्यालय से संबद्ध हैं:

I. सिक्किम सरकारी महाविद्यालय, गंगटोक (पूर्वी सिक्किम)

II. रैनॉक सरकारी महाविद्यालय, रैनक (पूर्वी सिक्किम)

III. नामची सरकारी महाविद्यालय, नामची (दक्षिणी सिक्किम)

IV. सिक्किम सरकारी विधि महाविद्यालय, बुरतुक, (पूर्वी सिक्किम)

V. सरकारी बी.एड. महाविद्यालय, सोरेंग (पश्चिमी सिक्किम)

VI. डंबर सिंह महाविद्यालय, गंगटोक (पूर्वी सिक्किम)

VII. पेलेटाइन महाविद्यालय, पाकियोंग (पूर्वी सिक्किम)

VIII. लॉयला शिक्षा महाविद्यालय, नामची (दक्षिणी सिक्किम)

IX. हरकामाया शिक्षा महाविद्यालय, गंगटोक (पूर्वी सिक्किम)

X. हिमालयन फार्मेसी संस्थान, माझीतार (पूर्वी सिक्किम)

XI. ग्यालशिंग महाविद्यालय (पश्चिमी सिक्किम)

सिक्किम विश्वविद्यालय के बारे में

सिक्किम विश्वविद्यालय 2 जुलाई 2007 को संसद के अधिनियम द्वारा एक केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए स्थापित किया गया था:

(1) निर्देशात्मक एवं शोध संबंधी सुविधाएँ प्रदान करके विश्वविद्यालय द्वारा उचित समझी जानी वाली ज्ञान-शाखाओं का प्रसार तथा विकास करना,

(2) विश्वविद्यालय के शैक्षणिक कार्यक्रमों में मानविकी, प्राकृतिक एवं भौतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान, वानिकी तथा अन्य सम्बंधित अध्ययन शाखाओं में एकीकृत पाठ्यक्रमों का प्रावधान करना,

(3) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, अंतर्विषयक अध्ययन तथा शोध कार्यों में नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए उचित कदम उठाना,

(4) सिक्किम के विकास के लिए जन-शक्ति को शिक्षित और प्रशिक्षित करना, तथा

(5) राज्य के लोगों की सामाजिक तथा आर्थिक स्थितियों को सुधारने और उनके कल्याण के लिए उनके बौद्धिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विकास पर विशेष ध्यान देना

लक्ष्य कथन

विश्वविद्यालय का लक्ष्य सामान्य तौर पर पूरे देश और विशेष तौर पर सिक्किम के गरीब योग्य छात्रों को वहन करने योग्य खर्च पर उच्च शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता, दोनों पर केन्द्रित करते हुए पूर्वी हिमालय में उच्च शिक्षा का एक केंद्र बनना है.

विजिटर और चीफ रेक्टर

- भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी विश्वविद्यालय के विजिटर है.
- सिक्किम के माननीय राज्यपाल श्री बी.पी. सिंह आलोच्य वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय के चीफ रेक्टर थे

भौगोलिक स्थिति और परिवहन के साधन

विश्वविद्यालय वर्तमान में गंगटोक और इसके आसपास किराए की इमारतों में चल रहा है. विश्वविद्यालय ने दक्षिण सिक्किम के यांगयांग में 300 एकड़ भूमि में अपने परिसर की निर्माण प्रक्रिया शुरू कर दी है जो सिंगताम से 28 किलोमीटर दूरी पर है और यह दूरी सिंगताम और गंगटोक की बीच की दूरी के समान है. परिसर के उत्तरी किनारे पर पारंपरिक घरों, अति आधुनिक कॉन्फ्रेंसिंग की सुविधा, बच्चों के पार्क, आदि के साथ एक पर्यटन गाँव है और इसके पश्चिमी सीमा पर 11 हजार फीट ऊंचाई पर स्थित गगचुम्बी भालेधुंगा है, जहां से विश्वविद्यालय परिसर दिखाई पड़ता है. भालेधुंगा साहसिक पर्यटकों के लिए प्रमुख गंतव्य स्थल है और विश्वविद्यालय परिसर से एक पहाड़ी रास्ते से होकर वहाँ पहुंचा जा सकता है.

विश्वविद्यालय का दौरा करने के लिए निकटतम हवाई अड्डा बागडोगरा है, जो सिलीगुड़ी से कुछ दूरी पर दार्जिलिंग की तलहटी में स्थित है. निकटतम हवाई अड्डे और गंगटोक के बीच की दूरी 124 किलोमीटर है. सिक्किम पर्यटन विकास निगम द्वारा एक दैनिक हेलीकाप्टर सेवा बागडोगरा और गंगटोक के बीच संचालित है. बागडोगरा हवाई अड्डे और गंगटोक के बीच यात्रा के लिए टैक्सी भी उपलब्ध हैं.

निकटतम रेलवे स्टेशन न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन है जो कि गंगटोक से लगभग 125 किलोमीटर दूर है. पूर्वोत्तर भारत के लिए जाने और और उधर से आने वाली सभी ट्रेनें इस स्टेशन पर रुकती हैं.

गंगटोक राष्ट्रीय राजमार्ग 31 ए से सिलीगुड़ी, दार्जिलिंग और कलिमपोंग के साथ सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है. गंगटोक और सिलीगुड़ी के बीच नियमित रूप से सिक्किम राष्ट्रीयकृत परिवहन की बसें चलती हैं. सिक्किम आने के लिए निजी बसों और हल्के वाहनों को भी सिलीगुड़ी और बागडोगरा से किराए पर लिया जा सकता है.

विश्वविद्यालय में कोष्ठक में उल्लेख पाठ्यक्रमों के साथ निम्नलिखित विभाग है:

1. नृ-विज्ञान (एमए/एमएससी)
2. रसायन विज्ञान (एमएससी, एमफिल/पीएचडी)
3. चीनी (5 वर्ष एकीकृत बीए एमए)
4. वाणिज्य (एम कॉम)
5. कम्प्यूटर एप्लीकेशन (5 वर्ष एकीकृत बीसीए, एमसीए)
6. अर्थशास्त्र (एमए, एमफिल/पीएचडी)
7. शिक्षा (एमए)
8. अंग्रेजी (एमए)
9. वनस्पति विज्ञान (एमएससी, एमफिल / पीएचडी)
10. भूगोल (एमए/एमएससी, एमफिल/पीएचडी)
11. भूविज्ञान (5 वर्ष एकीकृत बीएससी, एमएससी)
12. हिंदी (एमए)
13. इतिहास (एमए, एमफिल/पीएचडी)

14. बागवानी (6 वर्ष एकीकृत बीएससी, एमएससी, एमफिल/पीएचडी और चाय प्रबंधन में 1 साल का पीजी डिप्लोमा)
15. अंतरराष्ट्रीय संबंध (एमए, एमफिल/पीएचडी)
16. विधि (7 वर्ष एकीकृत बीए एलएलबी, एलएलएम)
17. प्रबंधन (एमबीए)
18. जन संचार (एमए, एमफिल/पीएचडी)
19. गणित (एमए/एमएससी)
20. सूक्ष्म जीव विज्ञान (एमएससी, एमफिल/पीएचडी)
21. संगीत (5 वर्ष एकीकृत बीपीए-एमपीए)
22. नेपाली (एमए, एमफिल/पीएचडी)
23. शांति और प्रतिद्वंद्व अध्ययन और प्रबंधन (एमए, एमफिल/पीएचडी)
24. भौतिकी (एमएससी, एमफिल/पीएचडी)
25. राजनीति विज्ञान (एमए)
26. मनोविज्ञान (5 वर्ष एकीकृत बीएससी, एमएससी, एमए/एमएससी)
27. समाजशास्त्र (एमए, एमफिल/पीएचडी)
28. पर्यटन (एमए)
29. जीव विज्ञान (एमएससी)

विश्वविद्यालय के पदाधिकारी

अधिनियम, 2006 की धारा 10 के अनुसार विश्वविद्यालय के अधिकारी निम्नलिखित हैं:

चांसलर	: न्यायधीश (श्रीमती) रूमा पाल
कुलपति	: प्रोफेसर टीबी सुब्बा
उप कुलपति	: रिक्त
स्कूल के डीन	: प्रोफेसर जे पी तामंग और प्रोफेसर प्रताप सी. प्रधान
कुलसचिव	: श्री के.एम. देव (स्थानापन्न)
वित्त अधिकारी	: श्री दिबाकर कानूनज्ञ (स्थानापन्न)
परीक्षा नियंत्रक	: डॉ. सुरेश गुरुंग (स्थानापन्न)
पुस्तकालयाध्यक्ष	: डॉ. तमल कुमार गुहा

शैक्षणिक परिषद के सदस्य

क्र.स. संख्या	अधिकारी	पदनाम
1	प्रो टी.बी. सुब्बा कुलपति, सिक्किम विश्वविद्यालय	पदेन अध्यक्ष
	विद्यापीठ के डीन	
2	प्रोफेसर ज्योति प्रकाश तामंग, डीन, विज्ञान विद्यापीठ नीति नियोजन एवं अध्ययन	
3	प्रो. प्रताप चंद्र प्रधान, डीन, सामाजिक विज्ञान और मानविकी विद्यापीठ	
4	डॉ. धनीराज छेत्री, डीन, छात्र कल्याण	
	विभागों और अध्ययन केंद्रों के प्रमुख/अध्यक्ष,	
5	डॉ. सुबीर मुखोपाध्याय सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, भौतिक विज्ञान विभाग	
6	डॉ. सोहेल फिरदौस, सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, भूगोल और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन विभाग	पदेन सदस्य
7	डॉ. एन.के. पासवान, सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, शांति, प्रतिद्वंद्व अध्ययन और प्रबंधन विभाग	पदेन सदस्य
8	डॉ. वी.कृष्ण अनंत सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग	पदेन सदस्य
9	डॉ. ए.एन. शंकर, सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, प्रबंधन और वाणिज्य विभाग	पदेन सदस्य

10	डॉ. एन. सत्यनारायण, सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, एथ्नो बॉटनी और सामाजिक चिकित्सा अध्ययन विभाग	पदेन सदस्य
11	डॉ. एच.के. तिवारी, सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग	पदेन सदस्य
12	डॉ. मनीष श्रीवास्तव, सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय संबंध/राजनीति विभाग	पदेन सदस्य
13	डॉ. कबिता लामा सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, नेपाली भाषा एवं साहित्य विभाग	पदेन सदस्य
14	डॉ. एस. मनिवन्णन, सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पुष्प खेती और बागवानी प्रबंधन विभाग	पदेन सदस्य
15	डॉ. मनेश चौबे, सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, नीति नियोजन एवं अध्ययन विद्यापीठ	पदेन सदस्य
16	विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष	पदेन सदस्य
17	परीक्षा नियंत्रक	पदेन सदस्य
	मद संख्या (2), (3), (4) और (5)में प्रत्येक अध्ययन विद्यापीठ, विशेष केन्द्रों के निर्दिष्ट उन लोगों के अलावा वरिष्ठता क्रमानुसार विद्यापीठ में एक प्राध्यापक और एक सह प्राध्यापक होंगे.	
18	डॉ. अमिताभ भट्टाचार्य, सह प्राध्यापक, भौतिक विज्ञान विभाग	पदेन सदस्य
	संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य **संबद्ध महाविद्यालयों के दो प्राचार्यों को कुलपति द्वारा मनोनीत** किया जाएगा **: परंतु केवल वे प्राचार्य जो यूजीसी के नियमों के अनुसार होंगे**	

19	डॉ. एम. पी. थापा प्राचार्य नामची सरकारी कॉलेज कमरंग, नामची 737 126	सदस्य
20	श्री (डॉ.) डैनियल बारा प्राचार्य लॉयला शिक्षा महाविद्यालय नामची 737 126	सदस्य
	विज़िटर द्वारा मनोनीत **विज़िटर विशेष ज्ञान वाले ऐसे पांच व्यक्तियों को मनोनीत करेंगे जो न तो विश्वविद्यालय के और न ही विश्वविद्यालय से संबद्ध किसी महाविद्यालय या संस्थानों के कर्मचारी होंगे**	
21	प्रो पीटर रोनाल्ड डी सूजा, निदेशक, भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास, शिमला - 171 005	सदस्य
22	प्रो एस एस सिंह, निदेशक, नेशनल लॉ इंस्टीट्यूट यूनिवर्सिटी, भड़भड़ा रोड, भोपाल - 462044	सदस्य
23	श्री ताशी देन्सपा निदेशक नामग्याल तिब्बतीय संस्थान देवराली गंगटोक - 737 101	सदस्य
24	श्रीमती. कीपु छेरिंग लेपचा सामाजिक कार्यकर्ता सिविल सेवक और पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित - 2009 गंगटोक - 737101	सदस्य
25	प्रोफेसर राजकिशोर गुप्ता विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ नॉर्थ महाराष्ट्र विश्वविद्यालय पोस्ट बॉक्स संख्या 80 नागपुर-सूरत राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 6 जलगांव-425001 महाराष्ट्र	सदस्य

	कुलपति द्वारा मनोनीत सदस्य कुलपति द्वारा दो व्यक्ति मनोनीत किये जाएंगे जो विश्वविद्यालय या इससे संबद्ध किसी महाविद्यालय या संस्थान के कर्मचारी नहीं होंगे.	
26	प्रो एस. एफ. पाटिल कार्यकारी निदेशक अंतरराष्ट्रीय मामलों (शोध एवं प्रशिक्षण) भारती विद्यापीठ मानद विश्वविद्यालय भारती विद्यापीठ भवन लाल बहादुर शास्त्री मार्ग पुणे - 411 030	सदस्य
27	लेफ्टिनेंट जनरल आदित्य सिंह, पीवीएसएम, एवीएसएम (सेवानिवृत्त) टी -11 / 8, डीएलएफ सिटी फेस -3 गुड़गांव, 122 002-03 हरियाणा	सदस्य
	कुलसचिव, सिक्किम विश्वविद्यालय	पदेन सचिव

वित्त समिति के सदस्य

अध्यक्ष	प्रो टी.बी. सुब्बा, कुलपति

विजिटर द्वारा मनोनीत

क्र. संख्या	नाम व पदनाम	संपर्क
1.	श्री अनंत कुमार सिंह संयुक्त सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई दिल्ली	011-23387648 (कार्यालय) 011-23070927 (फैक्स) 09868948454 (मोबाइल) ईमेल: anant.edu @ nic.in
2.	डॉ. (श्रीमती) रेणु बत्रा संयुक्त सचिव विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली	011-23238876 (कार्यालय) 011-23238858 (फैक्स) 09873333824 (मोबाइल) ई मेल: rcnu@ugc.ac.in renusrb@gmail.com
3	श्री योगेन्द्र त्रिपाठी संयुक्त सचिव और सलाहकार वित्तीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली	

कार्यकारिणी समिति के लिए मनोनीत सदस्य

1.	श्री सोनम वांगड़ी पूर्व मुख्य सचिव सिक्किम सरकार	03592-223308/224466 (निवास) 9434033786 (मोबाइल)
2.	प्रो अशोक कुमार दत्ता प्रथम निदेशक राजीव गांधी भारतीय प्रबंधन संस्थान, शिलांग	
3	श्री एम.जी. किरण प्रधान सचिव वित्त, राजस्व और व्यय विभाग सिक्किम सरकार, गंगटोक	03592-202792 (कार्यालय) 03592-231889 (निवास) ईमेल: mgkiran@hotmail.com

कार्यकारी परिषद के सदस्य

क्र. संख्या	अधिकारी	पदनाम
1	कुलपति, सिक्किम विश्वविद्यालय	प्रो टी. बी. सुब्बा पदेन अध्यक्ष
2	उपकुलपति/रैक्टर (स्थान खाली है और अभी भरा जाना है)	पदेन सदस्य
3	छात्र-कल्याण डीन	डॉ. धनी राज छेत्री पदेन सदस्य
4	विद्यापीठों के चार डीन वरिष्ठता क्रम के अनुसार कुलपति द्वारा मनोनीत किए जाएंगे. (दो डीन सदस्य हैं)	प्रो जे पी तामंग प्रो प्रताप सी. प्रधान सदस्य
5	एक डीन के अलावा अन्य एक प्राध्यापक वरिष्ठता क्रम के अनुसार कुलपति द्वारा मनोनीत किये जाएंगे. (स्थान खाली हैं और अभी भरा जाना है)	सदस्य
6	कुलपति द्वारा एक सह प्राध्यापक को वरिष्ठता क्रम के अनुसार मनोनीत किया जाएगा.	डॉ. सुबीर मुखोपध्याय सदस्य
7	कोर्ट के दो सदस्य विजिटर द्वारा मनोनीत किए जाएंगे जो विश्वविद्यालय या इनसे संबद्ध किसी महाविद्यालय या संस्थान के कर्मचारी नहीं होंगे. (अभी तक कोर्ट का गठन नहीं किया गया है)	सदस्य

8	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से एक प्रतिनिधि	
(I)	प्रो.ए.एन. राय कुलपति पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय शिलांग - 793022 मेघालय	सदस्य
9	विजिटर द्वारा मनोनीत तीन व्यक्ति	
(एक)	डॉ. (श्रीमती.) किरण दातार महाविद्यालयों के पूर्व डीन दिल्ली विश्वविद्यालय नई दिल्ली - 110 007	सदस्य
(दो)	श्री सोनम वांगड़ी पूर्व मुख्य सचिव सिक्किम सरकार गंगटोक-737101	सदस्य
(तीन)	प्रो एस. सी. सिंह डीन, कॉलेज डेवलपमेंट काउंसिल, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर, उत्तराखंड - 246 174	सदस्य
10	विजिटर द्वारा कुलपति की सिफ़ारिश पर पाँच व्यक्ति मनोनीत किए जाएंगे जिनमें से एक मानव संसाधन विकास विभाग, सिक्किम सरकार के सचिव होंगे.	
(I)	प्रो वी.एस. प्रसाद पूर्व निदेशक, एनएएसी फ्लैट नंबर 302, हॉलमार्क रेजीडेंसी अरोड़ा कालोनी, रोड नंबर 3 बंजारा हिल हैदराबाद - 500034	सदस्य सदस्य

(II)	सचिव मानव संसाधन विकास विभाग, सिक्किम सरकार गंगटोक - 737 101	सदस्य
(III)	प्रो डॉ. (सुश्री) आशुम गुप्ता फुलब्राइट सीनियर रिसर्च स्कॉलर मनोविज्ञान विभाग प्रोवोस्ट, महिलाओं के लिए विश्वविद्यालय छात्रावास दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली - 110 007	सदस्य
(IV)	डॉ. आर. आर. राव पूर्व सीएसआईआर, अवकाश प्राप्त वैज्ञानिक 328, बी 4, केंद्रीय विहार, येलाहंका, बंगलौर - 560064	सदस्य
(V)	प्रो. अतुल शर्मा, पूर्व कुलपति, राजीव गांधी विश्वविद्यालय और अर्थशास्त्र के प्राध्यापक मानव विकास संस्थान इंद्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली -110002	सदस्य
	कुलसचिव, सिक्किम विश्वविद्यालय	पदेन सचिव

अध्ययन विद्यापीठ

कंप्यूटर विज्ञान विद्यापीठ
कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग

विभागीय प्रभारी का नाम : सुश्री रेबिका राय

कार्यालय दूरभाष : 03592-251788

मोबाइल नंबर : 9933450552

ईमेल आईडी : rebika.rai.su @ gmail.com

संकाय सदस्य

चुन्नु खवास, सहायक प्राध्यापक, 2011 में सिक्किम मणिपाल प्रौद्योगिकी संस्थान, माझीतार, रंगपो से कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग में विशेषज्ञता सहित प्रौद्योगिकी में (एम. टेक.) प्रौद्योगिकी में 8.4 (सीजीपीए) के साथ स्नातकोत्तर है. 2008 में ज्योति निवास कॉलेज, बंगलौर विश्वविद्यालय से कंप्यूटर अनुप्रयोग में 81% के साथ स्नातकोत्तर (एमसीए) और 2005 में इसी कॉलेज से 68.98% के साथ कंप्यूटर एप्लीकेशन (बीसीए) में स्नातक भी हैं. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में रिमोट सेंसिंग एंड जीआईएस/इमेज प्रोसेसिंग हैं.

सुश्री रेबिका राय, सहायक प्राध्यापक, एम. टेक (कंप्यूटर और इंजीनियरिंग) है और उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र स्वर्म इंटेलिजेंस एंड इमेज प्रोसेसिंग हैं. उन्हें सिक्किम में नेपाली विषय में सर्वाधिक अंक हासिल करने के लिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मेरिट प्रमाणपत्र दिया गया. वह वर्ष 2006 में प्रो राम मेघे प्रौद्योगिकी और अनुसंधान संस्थान, अमरावती, महाराष्ट्र (2002-2003 और 2004-2005) से बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग में कॉलेज में अव्वल और 2006 में (बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग, अमरावती विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र) से विश्वविद्यालय टॉपर रही. उन्हें आगे के स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय योग्यता छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया.

श्री पार्थ प्रतिम राय, सहायक प्राध्यापक 9.60 डीजीपीए के साथ 2011 में पश्चिम बंगाल प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोलकाता से एंबेडेड सिस्टम में विशेषज्ञता के साथ इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार इंजीनियरिंग में एम. टेक है. उन्होंने इसी विश्वविद्यालय से 8.15 डीजीपीए के साथ 2008 में कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग में बी टेक. किया है.

प्रकाशन

रेबिका राय, रतिका प्रधान, एमके घोष, "एंट बेस्ड स्वर्म कम्प्यूटिंग फॉर इमेज क्लासिफिकेशन - अ ब्रीफ़ सर्वे "इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन", के, कम्प्यूटेशनल खुफिया और सूचना सुरक्षा सीआईएसएस पर विशेषांक (1), पृष्ठ .17-21 नवंबर 15, 2012 आईएसबीएन: 973-93-80870-58-7.

रेबिका राय, रतिका प्रधान, एमके घोष, " एंट बेस्ड स्वर्म कम्प्यूटिंग टैक्नीक्स फॉर एड्ज डिटेक्शन ऑफ इमेज - अ ब्रीफ़ सर्वे", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एमर्जिंग टेक्नालॉजी एंड एडवांस्ड इंजीनियरिंग, (आईएसएसएन 2250-2459, आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित पत्रिका), खंड 3, अंक 4/43, अप्रैल 2013

राय, पी पी, औटोमटेड बग लोकलाइज़ेशन इन एम्बेडेड सॉफ्टवेयर : अ न्यू पैराडाईम थ्रू होलिस्टिक अप्रोचेस, लैम्बर्ट पब्लिशिंग हाउस,

जर्मनी, मार्च 2012.

राय, पी पी, "ऑटोमेटा मॉडलिंग ऑफ हॉर्मोनल मलैक्युलर कम्युनिकेशन चैनल इन ह्यूमन बॉडी", इंटरनेशनल जर्नल ऑन रिसेंट ट्रेंड्स इन इंजीन्यरिंग अँड टेक्नलॉजी, (आईजेआरटीईटी), वॉल्यूम. 8 (1),आईएसएसएन : 2158-5563, पृष्ठ सं .8 -12, डीओआई : 01 आईजेआरटीईटी.8.1.35,2013

मजुमदार, पी., राय, पी पी, "हैच-सेंस : अ थिओरायटिकल बायो-इंस्पायार्ड मॉडल टु मॉनिटर द हैचिंग ऑफ प्लांकटन कल्चर इन द विसिनिटी ऑफ वायरलेस सेंसर नेटवर्क" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्प्यूटर साइन्स एंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजिस (आई. जे. सी.एस.आई.टी.), आईएसएसएन : 0975-9646, वॉल्यूम. 3 (4), पृष्ठ सं 4764-4769, 2012

राय, पी पी, " रेज स्कीम : "ग्राफिकेल पासवर्ड बेस्ड हाइब्रिड ऑथेंटिकेशन सिस्टम फॉर स्मार्ट हैंड हेल्ड डिवाइसेस", जर्नल ऑफ इन्फॉर्मेशन इंजीनियरिंग एंड एप्लिकेशन्स, (जेआईईए), वॉल्यूम. 2 (2), : आईएसएसएन :2225-0506, पृष्ठ 1-11, 2012.

राय, पीपी, "ट्रांसलेशन ऑफ बेंगाली टर्म्स इन मोबाइल फ़ोन : अ सिंप्लिफाइड अप्रोच बेस्द ऑन द प्रिस्क्रिप्शन्स ऑफ कॉन्वेंशनल असेंट अंडरस्टैंड एबिलिटी", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्प्युटर एंड ऑर्गनाइज़ेशन ट्रेंड्स (आईजेसीओटी), आईएसएसएन : 2249-2593, वॉल्यूम 2 (1), पृष्ठ 33-38, 2012.

राय, पीपी, "नैनो कम्प्युटर डिज़ाइन बेस्ड ऑन इंट्रा बॉडी नैनोस्केल न्यूरो-स्पाईक कम्युनिकेशन्स : अ नैनोनेटवर्क पैराडाइम", इन प्रोसीडिंग्स ऑफ आईईईई इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन कम्युनिकेशन्स, डिवाइसेस एंड इंटेलिजेंट सिस्टम्स (सीओडीआईएस), पृष्ठ - 314-317, 2012

अन्य शैक्षणिक गतिविधियां

श्रीमती चुन्नु खवास ने जनवरी 2012 को सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा "स्मारक और सांस्कृतिक विरासत" पर आयोजित "शीतकालीन प्रवास" नामक 11 दिवसीय क्षेत्रीय कार्य में सक्रिय रूप से भाग लिया और उन्हें 'सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति' सम्मान से सम्मानित किया गया .

सुश्री रेबिका राय ने 4-16 जून 2012 को एनएनएमआरएस/इसरो द्वारा प्रायोजित सिक्किम मणिपाल प्रौद्योगिकी संस्थान में "रिमोट सेंसिंग और भौगोलिक सूचना प्रणाली" पर आयोजित दो सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया.

श्री पार्थ प्रतिम राय ने 07-11 मार्च 2013 को गुवाहाटी विश्वविद्यालय में संयुक्त रूप में भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कोलकाता द्वारा "एडवांसेस इन डॉकयुमेंट एनालिसिस एंड रिट्रीवल" विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया.

पर्यावरण अध्ययन विद्यापीठ
पृथ्वी-विज्ञान विभाग

विभाग प्रभारी का नाम	: डॉ. राकेश कुमार रंजन
कार्यालय दूरभाष	: +91-3592-231151
मोबाइल नं	: +91-8100420032
ई मेल आईडी	: rakeshranjan.jnu @ gmail.com

संकाय सदस्य :

डॉ. राकेश कुमार रंजन, सहायक प्राध्यापक ने जुलाई 2011 में विभाग में कार्यभार ग्रहण किया है. उन्होंने जून 2010 में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के पर्यावरण विज्ञान विद्यापीठ से "ग्रामीण क्षेत्रों में परिवेश एयरोसौल्ज़ के लक्षण पर जलती फसल अवशेष का प्रभाव : बिहार के शाहाबाद क्षेत्र के एक केस अध्ययन" शीर्षक पर शोध के लिए पीएचडी प्राप्त की है. उन्होंने उसी विद्यापीठ

से एम. फिल और स्नातकोत्तर किया है. वे वर्तमान विभिन्न आकार पर्वतमाला में परिवेश कारबोनकेयस एयरोसौल्ज़ की विशेषताएं और जलवायु पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करने में लगे हुए है. उनका वर्तमान शोध भी कारबोनकेयस एयरोसौल्ज़ ग्रामीण परिवेश में विकरणशील हस्तांतरण के बजट को प्रभावित कैसे करते हैं उसका पता लगाने के लिए है. इसके अलावा, वे रिमोट सेंसिंग और जीआईएस तकनीक का उपयोग करके जल बायोमास और संबद्ध कार्बन घनत्व का आकलन करने में भी लगे हुए है.

डॉ. निश्चल वंजरी ने दिल्ली विश्वविद्यालय से 2008 में जियोकेमिकल एवल्यूशन ऑफ आमगाँव ग्रिनिसिक कॉम्प्लेक्स, सेंट्रल इंडिया पर पीएचडी किया. उन्होंने इंडियन स्कूल ऑफ माइंस, धनबाद से एप्लाइड जियोलॉजी में परास्नातक किया. उन्होंने भूविज्ञानी के रूप में भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के साथ काम किया है और बिहार और झारखंड के कुछ हिस्सों में , विशेष रूप से गया, नालंदा, जमुई, बांका और देवघर जिला में, विशेष थीमेटिक मैपिंग और जियोकेमिकल मानचित्रण पर काम किया. उनके शोध क्षेत्रों में खनिज, आग्नेय शिला, भू-रसायन और भारतीय उपमहाद्वीप के क्रस्टल विकास से संबंधित भू-कालक्रम अध्ययन शामिल हैं.

डॉ. मोहम्मद अब्दुल्ला खान, सहायक प्राध्यापक ने अप्रैल 2012 को विभाग में कार्यभार ग्रहण किया. इससे पहले वे कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा के भूविज्ञान विभाग में सहायक प्राध्यापक के रूप में पढ़ाते थे. उन्होंने एमएससी (अनुप्रयुक्त पृथ्वी-विज्ञान) (2002) और पीएचडी (पृथ्वी-विज्ञान) (2010) ये दोनों डिग्री अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ से किया. उनका शोध का विषय "जियो एनवायरनमेंटल पैरामीटर्स एंड देयर इंप्लीकेशन इन पार्ट्स ऑफ इम्फ़ाल वैलि, मणिपुर, एनई हिमालयन रिजन" था. उनके शोध क्षेत्रों में जल विज्ञान और हाइड्रोकैमिस्ट्री, पर्यावरण मापदंडों का विश्लेषण और मानव स्वास्थ्य के विशेष संदर्भ में पर्यावरणीय प्रभाव के अध्ययन शामिल हैं.

प्रकाशन

मोहम्मद अब्दुल्ला खान, एस अहमद और हुमा मतलूब (2012). " लैंडयूज पैटर्न, हाउस डिज़ाइन एंड हैल्थ इन इम्फ़ाल वैलि" द नेहू जर्नल.वॉल्यूम. एक्स, नंबर *1*, जनवरी, *2012*, पृष्ठ सं *81-92*.

सरफराज अहमद, मोहम्मद अब्दुल्ला खान, अबू हुसैन, हुमा मतलूब और टी.आर. वारसी, और (2012). " मोनिटोरींग ऑफ द एयर क्वालिटी इन अलीगढ़ सिटि, इंडिया यूजीङ्ग स्पॉट :वीजीटी डेटा", जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल रिसर्च एंड डेव्लपमेंट, वॉल्यूम. 6, स. 4, अप्रैल से जून, *2012*, पृष्ठ *1000-005*. आईएसएसएन *0973-6921*.

मोहम्मद अब्दुल्ला खान, सरफराज अहमद और शादाब खुर्शीद (2012). "जियोलॉजी एंड जियोमोर्फोलॉजी ऑफ मणिपुर वैलि यूजिंग डिजिटैली एनहैन्स्ड सैटिलाइट इमेज एंड एसआरटीएम डीईएम इन द ईस्टर्न हिमालयन, इंडिया" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जियोसाइंसेस में ऑनलाइन 2012 अक्टूबर में प्रकाशित 2012, 3,1010-1018, अक्टूबर (डीओआई :10.4236/आईजेजी. 2012.325101 http://www.Scirp.org/journal/ijg). आईएसएसएन प्रिंट: 2156-8359 आईएसएसएन ऑनलाइन 2156-8367.

वैश्विक अध्ययन विद्यापीठ
अंतरराष्ट्रीय संबंध / राजनीति विभाग

अध्यक्ष का नाम : डॉ. मनीष श्रीवास्तव
कार्यालय दूरभाष : 03592-251168
ईमेल आईडी : departmentofir@gmail.com

फैलोशिप और पुरस्कार

यूजीसी / जेआरएफ	4 छात्र
यूजीसी / नेट	2 छात्र
सामरिक अध्ययन के लिए क्षेत्रीय केंद्र (आरसीएसएस), कोलंबो से कोडीकारा पुरस्कार	1 छात्र
मौलाना आजाद नेशनल फैलोशिप	2 छात्र
राजीव गांधी नेशनल फैलोशिप	1 छात्र

संकाय प्रोफाइल

डॉ. मनीष श्रीवास्तव, सह प्राध्यापक ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से भौतिकी, गणित और रक्षा एवं सामरिक अध्ययन में बीएससी और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से राजनीति (अंतरराष्ट्रीय अध्ययन) में एमए की. उन्होंने जेएनयू, नई दिल्ली के अंतरराष्ट्रीय अध्ययन विद्यापीठ के अंतरराष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र (सीआईपीओडी) से डिसार्मामेंट स्टडीज में एमफ़िल की. उन्हें जेएनयू, नई दिल्ली के निरस्त्रीकरण अध्ययन, अंतरराष्ट्रीय अध्ययन विद्यापीठ से "कंप्रिहेंसिव टेस्ट बैन नेगोसिएशन्स: 1994-1996" शीर्षक शोध के लिए डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया था. डॉक्टरेट करने के दौरान उन्होने ला सल्ले विश्वविद्यालय, फिलीपींस, मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (अमेरिका), सामरिक अध्ययन के लिए क्षेत्रीय केंद्र, कोलंबो और संयुक्त राष्ट्र संघ, जिनेवा सहित विभिन्न स्थानों/विदेशी संस्थानों का दौरा किया. उनको अपने डॉक्टरेट कार्य के लिए भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) फैलोशिप से सम्मानित किया गया. वे इंडियन पूगवाश सोसाइटी के आजीवन सदस्य हैं. इससे पहले उन्होंने नई दिल्ली स्थित सामरिक मामलों से संबन्धित थिंक- टैंक रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान, भारत सरकार (2001-2015) में सह प्राध्यापक के रूप में और भारत सरकार में (2005-2012) में विशेष कार्यभारी अधिकारी के रूप में कार्य किया था. उन्होंने कई लेख प्रकाशित किए. वे "जम्मू-कश्मीर में जेहादी" नामक पुस्तक के सह लेखक हैं. उनके शिक्षण/अनुसंधान के क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांत, विदेश नीति, शस्त्र नियंत्रण/निरस्त्रीकरण, आतंकवाद और दक्षिण एशिया

शामिल हैं.

डॉ. सेबेस्टियन एन, सहायक प्राध्यापक ने अक्टूबर 2008 में सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया. सिक्किम विश्वविद्यालय में आने से पहले वे पश्चिम एशियाई अध्ययन और हिंद महासागर अध्ययन केंद्र, कालीकट विश्वविद्यालय (2004-2007) में पढ़ाते थे. उन्होंने केरल सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय (2007-2008) के साथ भी काम किया है. उन्होंने महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, केरल के अंतरराष्ट्रीय संबंध विद्यापीठ से एमए और अंतरराष्ट्रीय अध्ययन विद्यापीठ, जेएनयू, नई दिल्ली के पश्चिम एशियाई अध्ययन केंद्र से एमफ़िल की. उन्होने "वैश्वीकरण और सामाजिक विकास : मिस्र और भारत, 1991-2001 का एक तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक विषय पर वर्ष 2009 में जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से पीएचडी किया. उन्होंने संपादित पुस्तकों में कई शोध पत्र प्रकाशित किए. वे इंडस द्वारा प्रकाशित "पर्वतीय क्षेत्रों मे जलवायु परिवर्तन और स्थिरता" के संपादकों में से एक हैं. उन्होंने समाचार पत्रिकाओं में अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर कई लेख लिखे हैं. उनके वर्तमान शिक्षण/अनुसंधान के क्षेत्रों में पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका में अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांत, वैश्वीकरण और राजनीति शामिल हैं.

डॉ. टेबोर्लोंग टी खार्सिटीऊ, सहायक प्राध्यापक ने अक्टूबर 2008 में सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया. सिक्किम विश्वविद्यालय से जुड़ने से पहले वे धर्मसभा कॉलेज, शिलांग में राजनीति विज्ञान के व्याख्याता रहे. डॉ. खार्सिटीऊ ने सेंट एंथनी कॉलेज, शिलांग से बी.ए. किया. उन्होंने अंतरराष्ट्रीय अध्ययन विद्यापीठ, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से एमए पूरा किया. उनकी एम. फिल के शोध प्रबंध 1993 के बाद यूरोपीय संघ की पर्यावरण नीति 'पर था और पीएचडी के शोध का विषय "यूरोपीय संघ की सामान्य विदेश और सुरक्षा नीति की दिशा में ब्रिटीश रवैया" था. उनके शोध के क्षेत्रों में यूरोपीय संघ के विदेश और सुरक्षा नीति, वैश्विक और स्थानीय पर्यावरण नीति और मुद्दे शामिल हैं. उनको भारतीय सामाजिक विज्ञान शोध (आईसीएसएसआर) डॉक्टरल फेलोशिप (2004-2007) और मेघालय राज्य सरकार अनुसंधान छात्रवृत्ति (2000-2004) से सम्मानित किया गया था.

फैरेंबम न्यूटन सिंह, सहायक प्राध्यापक ने अक्टूबर 2008 में सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया. उन्होंने एमए और एमफिल जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अंतर्गत राजनीति अध्ययन केंद्र से.किया. उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में राजनीतिक विचार और सिद्धांत, तुलनात्मक राजनीति और भारतीय राजनीति शामिल हैं.

प्रकाशन

सेबेस्टियन एन (2013) "औपनिवेशिक अल्जीरिया में इस्लामी आंदोलनों और राष्ट्रवाद के उभार". कुमार राजेश और नवाज़ निजार (संपादक), "मध्य पूर्व में इस्लाम, इस्लामी आंदोलनों और लोकतंत्र में: चुनौतियां, अवसर और प्रतिक्रियाएँ", नई दिल्ली, ग्लोबल विजन पब्लिशिंग हाउस, आईएसबीएन 9788182205482

सेबेस्टियन एन और अन्य (2012) (संपादक) "पर्वतीय क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन और स्थिरता: क्षेत्रीय सहयोग और एकता के लिए सीमा और चुनौतियां", नई दिल्ली: इंडस प्रकाशन कंपनी, आईएसबीएन 9788173872310.

सेमिनार/सम्मेलन

डॉ. मनीष श्रीवास्तव 16-20 नवंबर 2012 को सीआरआरआईडी, चंडीगढ़ में समकालीन परमाणु सत्संग : सिद्धांतों, शक्ति संतुलन और निरस्त्रीकरण पर युवा विद्वानों के लिए आयोजित चौथे वार्षिक आईपीसीएस आवासीय कार्यशाला में संसाधन व्यक्ति के रूप में उपस्थित थे. उन्होंने 6-7 मार्च 2013 को दर्शनशास्त्र विभाग, असम विश्वविद्यालय, सिलचर द्वारा पूर्वोत्तर में मानव सुरक्षा पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'मानव सुरक्षा' पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 20 मार्च 2013 को जादवपुर विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'दक्षिण एशिया में मानव सुरक्षा' पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

डॉ. सेबेस्टाइन एन. ने कनिंग, चीन में आयोजित चीन दक्षिण एशिया बिजनेस फोरम की बैठक के शिक्षा उप फोरम में "उच्च शिक्षा में चीन और दक्षिण एशिया का सहयोग : अवसर तथा चुनौतियाँ" विषय पर व्याख्यान दिया.

श्री अनंत स्वरूप बिजेंद्र डी गुरुंग, शोध छात्र ने 2 मार्च 2013 से 11 मार्च 2013 तक अंतरराष्ट्रीय संबंध/राजनीति विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय के सहयोग से आईसीएसएसआर नई दिल्ली द्वारा सामाजिक विज्ञान के लिए अनुसंधान क्रियाविधि पर आयोजित दस दिवसीय राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला में भाग लिया और 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय संबंध/राजनीति विज्ञान विभाग के सहयोग से आईसीएसएसआर, नई दिल्ली द्वारा संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों: भारत के पूर्वोत्तर राज्यों से परिप्रेक्ष्य में "विषय पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में "ईस्टर्न हिमालयन कौसिन्स (ईएचसीएस) : अ रोडमैप" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. वे 13-14 अप्रैल 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में सिक्किम विषविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध/राजनीति विभाग के सहयोग से फाउंडेशन फॉर नॉन वाईओलेंट (एफ़एनवीए), नई दिल्ली द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में "तिब्बत, ऊर्जा सुरक्षा और चीन : एक संक्षिप्त मूल्यांकन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

श्री विजय थापा, शोध छात्र ने 10-12 दिसंबर 2013 को इंडियन हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में भारतीय अनुसंधान और अंतरराष्ट्रीय अध्ययन संस्थान (आईआरआईआईएस) द्वारा "एशियाई सदी के प्रारम्भ : भारत में आईआर सिद्घांत और प्रयोग के सामने उभरती चुनौतियाँ" विषय पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया. उन्होने 18-22 फरबरी 2013 को वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संष्ठान परिसर, नोएडा में वीवी गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नोएडा द्वारा आयोजित अनुसंधान क्रियाविधि कार्यशाला में भाग लिया. उन्होंने 2-11 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संबंध/राजनीति विभाग के सहयोग से आईसीएसएसआर,नई दिल्ली द्वारा सामाजिक विज्ञान के लिए अनुसंधान क्रियाविधि विषय पर आयोजित राष्ट्रीय स्तर की दस दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया. उन्होने 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय सबंध/राजनीति विभाग के सहयोग से आईसीएसएसआर, नई दिल्ली द्वारा संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के परिप्रेक्ष में विषय पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में "मुक्त और बंद सीमाओं की सम्झौता और इसकी वास्तविकता" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 13-14 अप्रैल 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में विश्वविद्यलय के अंतरराष्ट्रीय संबद्ध/राजनीति विभाग के सहयोग से फाउंडेशन फॉर नॉन वॉयलेंट आल्टरनेटिव्स (एफ़एनवीए), नई दिल्ली द्वारा हिमालय के साथ तिब्बत के संबंधों पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में "प्रवाह में एक पहचान : सिक्किम और दार्जिलिंग पहाड़ों में तिब्बतीय" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

विकास शर्मा, शोध छात्र, ने 21-22 दिसंबर 2012 को त्रिपुरा में "पूर्वोत्तर भारत में जातीय एकता : मुद्दे और चुनौतियाँ" विषय पर यूजीसी द्वारा प्रायोजित और नेताजी सुभाष महाविद्यालय, गोमती, त्रिपुरा द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में "जातीय एकीकरण और अपवाद के सुरक्षित राज्य : असम के संदर्भ में एक केस स्टडि" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 27-28 फरवरी 2013 को गुवाहाटी विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद और भारतीय सामाजिक विज्ञान परिषद द्वारा 'पूर्वोत्तर भारत में राज्य, सामाजिक आंदोलन और लोकतंत्र" पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में "सीमा निर्धारण : प्रवसन और सुरक्षा का प्रश्न" पर एक पेपर प्रस्तुत किया. 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध/राजनीति विभाग के सहयोग से आईसीएसएसआर, नई दिल्ली द्वारा सांगवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के परिप्रेक्ष में' विषय पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में "सीमा निर्धारण : प्रतिवाद, प्रतिरोध और पूरकता" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 31मार्च से 1 अप्रैल 2013 तक दक्षिण कामरूप महाविद्यलय में असम के विश्वविद्यालय महिला संघ, महिला फोरम द्वारा "महिला और पर्यावरण : मुद्दे, समस्याएँ और अवसर पर एक दृष्टि" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "पर्यावरणवादऔर पर्यवरणवाद की दिशा में महिलाएँ" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

कोमल कौशिक बराल, शोध छात्र ने 21-22 दिसंबर 2012 को त्रिपुरा में "पूर्वोत्तर भारत में जातीय एकता : मुद्दे और चुनौतियाँ" विषय पर यूजीसी द्वारा प्रायोजित और नेताजी सुभाष महाविद्यालय, गोमती, त्रिपुरा द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'पूर्वोत्तर भारत में जातीय एकता; गोरखाओं के मामले में" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

श्री रवीद्र मनी प्रधान, शोध छात्र ने 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध/राजनीति विभाग के सहयोग से आईसीएसएसआर, नई दिल्ली द्वारा सांगवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के परिप्रेक्ष में विषय पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में "पूर्वी हिमालय में स्वदेशी समुदाय और सीमा पार जैव विविधता संरक्षण व्यवस्था : सिंगालीला रेंज का एक केस अध्ययन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

सुश्री रोमना लेपचा, शोध छात्र ने 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध/राजनीति विभाग के सहयोग से आईसीएसएसआर, नई दिल्ली द्वारा "संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के परिप्रेक्ष में" विषय पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में "गैर पारंपरिक सुरक्षा चुनौती के रूप में मानव तस्करी : भारत और नेपाल के बीच हो रहे सीमा पार तस्करी पर एक अध्ययन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया

श्री सुनील प्रधान, शोध छात्र ने 21-22 दिसंबर 2012 को त्रिपुरा में पूर्वोत्तर भारत में जातीय एकता : मुद्दे और चुनौतियां विषय पर यूजीसी द्वारा प्रायोजित और नेताजी सुभाष महाविद्यालय, गोमती, त्रिपुरा द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में "संबंधों की राजनीति और सिक्किम में नेपाली एकता" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया .

सुश्री टी छेरिंग डोमा केलीओन, शोध छात्र ने 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में सिक्किम विश्वविद्यालय के सहयोग से आईसीएसएसआर, नई दिल्ली द्वारा संहवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के परिप्रेक्ष में" विषय पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में "नाथू ला के माध्यम से भारत- चीन सीमा व्यापार में विकासशील रुझान" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 13-14 अप्रैल 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संबंध/राजनीति विभाग के सहयोग से फाउंडेशन फॉर नॉन वाइओलेंट आल्टरनेटिव्स (एफ़एनवीए), नई दिल्ली द्वारा हिमालय के साथ तिब्बत के संबंधों पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में "नाथू ला के माध्यम से सीमा व्यापार : ऐतिहासिक संबंधों का पुनर्जीवित और पुनर्निर्माण" शीर्षक पर भी एक पेपर प्रस्तुत किया.

आयोजित किए गए संगोष्ठी / सम्मेलन / व्याख्यान

क्र.सं.	विषय	तिथि और स्थान	आयोजक/संयोजकों के नाम
1	डॉ. कृष्ण कुमार, सहायक प्राध्यापक, वेंकटेश्वर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा "वित्तीय भूमंडलीकरण, वैश्विक असंतुलन और विच्छेदिकरण'' पर विशेष व्याख्यान	9 अप्रैल 2012, समिति कक्ष, नर्मदा	अंतरराष्ट्रीय संबंध/ राजनीति विभाग, डॉ. सेबेस्टियन एन
2	मेजर जनरल शम्मी मेहता द्वारा "राष्ट्रीय सुरक्षा के बदलते आयाम" पर विशेष व्याख्यान	6 सितंबर 2012, समिति कक्ष, नर्मदा	अंतरराष्ट्रीय संबंध/ राजनीति विभाग, डॉ. सेबेस्टियन एन
3	डॉ. मैथ्यू जोसेफ द्वारा "भारत और इसके साथ नेपाल तथा भूटान के संबंधों "पर विशेष व्याख्यान	19 अक्टूबर, 2012, समिति कक्ष, नर्मदा	अंतरराष्ट्रीय संबंध/ राजनीति विभाग, डॉ. मनीष
4	" सामाजिक विज्ञान के लिए अनुसंधान क्रियाविधि" विषय पर दस दिवसीय राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला	2 मार्च 2013 से11 मार्च 2013,सेमिनार हॉल, सिक्किम विश्वविद्यालय	अंतरराष्ट्रीय संबंध/ राजनीति विभाग और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, डॉ. सेबेस्टियन एन और पीएच न्यूटन सिंह
5	" संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों: भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों के परिप्रेक्ष्य में" विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी	22-23 मार्च 2013, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक	अंतरराष्ट्रीय संबंध/ राजनीति विभाग और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, डॉ. सेबेस्टियन एन और डॉ.टेबोरलोंग टी. खर्सीटीऊ
6	"हिमालय के साथ तिब्बत के संबंध" विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी	13-14 अप्रैल 2013, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक.	अंतरराष्ट्रीय संबंध/ राजनीति विभाग और अहिंसक वैकल्पिक के लिए फाउंडेशन फॉर नॉन वाइओलेंट आल्टरनेटिव्स (एफ़एनवीए), डॉ. मनीष

एमफ़िल पीएचडी मार्गदर्शन

डॉ. सेबेस्टियन एन

"दक्षिण एशिया में मानव तस्करी और नागरिक समाज: मैती नेपाल का एक केस अध्ययन"

(सुश्री रोमाना लेपचा को नवंबर 2012 में एमफिल की उपाधि प्रदान की गई)

डॉ. टेबोलोंग टी खसिंटीऊ

"धर्म, संस्कृति और विश्वास बढ़ाने के उपाय: पूर्वी हिमालय में उप क्षेत्रीय सहयोग की संभावनाएँ"

(श्री अनंत स्वरूप बिजेंद्र डी गुरुंग को नवंबर 2012 को एमफिल की उपाधि प्रदान की गई)

श्री पीएच न्यूटन सिंह

"राज्य, वैश्विक शासन और पुनर्वास : भूटानी शरणार्थियों की पुनर्वास प्रक्रिया समझौता"

(विजय थापा को नवंबर 2012 में एमफिल की उपाधि प्रदान की गई)

मानविकी और सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
आर्थिक अध्ययन और योजना विभाग

प्रभारी अध्यक्ष का नाम	: डॉ. रूमा कुंडू
कार्यालय दूरभाष	: 03592-251152
मोबाइल नंबर	: 9475176186
ईमेल आईडी	: rumakundu76@gmail.com

संकाय सदस्य

रूमा कुंडू (पीएचडी)अर्थशास्त्र में एमए (बर्दवान विश्वविद्यालय, 1999), अर्थशास्त्र में एम. फिल (बर्दवान विश्वविद्यालय, 2001), और अर्थशास्त्र में पीएचडी (बर्दवान विश्वविद्यालय, 2008) है. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रो में पर्यावरण अर्थशास्त्र, सांख्यिकी और अर्थमिति शामिल हैं.

डॉ. प्रद्युत गुहा एमए अर्थशास्त्र (गुवाहाटी विश्वविद्यालय, 2003), स्लेट (पूर्वोत्तर क्षेत्र) [गुवाहाटी विश्वविद्यालय, 2005], और पीएचडी (मिज़ोरम विश्वविद्यालय, 2011) हैं. उनकी विशेषज्ञात के क्षेत्रों में अर्थमितीय पद्धति और अनुप्रयोग, गणितीय अर्थशास्त्र, वित्तीय प्रणाली और संस्थाएं शामिल हैं.

डॉ. रंगलाल महापात्र अर्थशास्त्र में एमए (हैदराबाद विश्वविद्यालय, 1993), और अर्थशास्त्र मीन पीएचडी (ए एंड ए इक्नोमिक्स, उत्कल विश्वविद्यालय, 2011) है. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में कृषि अर्थशास्त्र और अंतरराष्ट्रीय व्यापार शामिल हैं.

प्रकाशन

कुंडू, रूमा. "पारंपरिक कृषि पद्धतियों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के बारे में लोगों की धारणा : एक केस स्टडी", इंडस प्रकाशन कंपनी, नई दिल्ली, आईएसबीएन 978-7387-231-0.2012

कुंडू, रूमा. "वन निर्भरता और पतन - प्राथमिक हितधारक विश्लेषण: सिक्किम से एक केस अध्ययन, संसाधन प्रबंधन: मानव और प्राकृतिक - पूर्वोत्तर क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में" आईएसबीएन 978-81-87891-47-5, रीडर्स सेवा, कोलकाता.

कुंडू, रूमा. "सेंसेक्स और चयनित अंतरराष्ट्रीय सूचकांकों के बीच अंतर संबंध के साक्ष्य का अध्ययन करने के लिए यूनिट रूट और सह

एकीकरण तकनीकों का प्रयोग", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करेंट रिसर्च, वॉल्यूम. 5, अंक 1, पृष्ठ 107-111, आईएसएसएन: 0975-833एक्स.

गुहा, पी. "वित्तीय बहिष्करण का एक स्रोत के रूप में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के विकास में क्षेत्रीय असमानता", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकनॉमिक्स एंड मेनेजेरियल थॉट्स, वॉल्यूम .3, पृष्ठ 78-86 नंबर 1, अप्रैल से सितंबर 2012, आईएसएसएन 2229-3736.

गुहा, पी. "पूर्वी सिक्किम में आपदा जागरूकता और आपदा की तैयारी: रानीपुल के संदर्भ में एक केस स्टडी" जर्नल ऑफ सोशल साइन्स, बोडोलैंड विश्वविद्यालय, वॉल्यूम.1, नंबर 1, जनवरी - जून 2013, पृष्ठ .25-36, आईएसएसएन 2320-0952.

गुहा, पी. "असम में भारत की सुधार अवधि और चाय की संगठित नीलामी", "इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करेंट रिसर्च, वॉल्यूम. 5, अंक 2, पृष्ठ 172-177, फरवरी 2013, आईएसएसएन 0975-833एक्स.

महापात्र, आर. "गन्ना किसानों के बीच लागत कुशलता के निर्धारकों: एक स्टोकेस्टिक सीमांत लागत कार्य दृष्टिकोण", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करेंट रिसर्च, 2013, 5 (3), 634-638.

"वैश्विक तकनीकी दक्षता और परिवर्तनशील प्राप्ति का पैमाना : धान उत्पादन पर निहितार्थ" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च, *2013, 1 (2), 107-117.*

संगोष्ठी/सम्मेलन

डॉ. रूमा कुंडू ने 27-29 दिसंबर 2012 को विनोद गुप्ता प्रबंधन विद्यापीठ, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर द्वारा कम्प्यूटेशनल और वित्तीय अर्थमिति (सीएफ़ई 2012) पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "सेंसेक्स और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज के सेक्टर सूचकांक के बीच अंतर संबंध के अध्ययन के लिए यूनिट रूट और सह एकीकरण तकनीकों का प्रयोग" विषय पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 18-19 जनवरी 2013 को बर्दवान विश्वविद्यालय के अर्थनीति विभाग द्वारा "विकास, पर्यावरण और सतत आजीविका" विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन-ई-कॉन्फ्रेंस 2013 में "पूर्वी सिक्किम में जैविक खेती: सतत आजीविका के लिए एक खतरा है या एक साधन" शीर्षक पर पेपर प्रस्तुत किया उन्होने 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध/राजनीति विभाग द्वारा "संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के परिप्रेक्ष में" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "सिक्किम के आसपास के क्षेत्र में सीमा पार व्यापार: औपचारिक और अनौपचारिक दोनों पहलुओं से एक नजर" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 30-31 मार्च 2012 को सिक्किम विश्वविद्यालय के सामाजिक प्रणाली और मानव विज्ञान विभाग द्वारा 'भारत में महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "महिलाओं का बलात्कार: एक पुरानी बीमारी का वैश्विक अध्ययन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 07-08 मार्च 2013 को जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली द्वारा "पूर्वी हिमालय : जलवायु परिवर्तन, आजीविका और गरीबी" विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "जलवायु परिवर्तन और पारंपरिक कृषि पद्धतियों पर इसका प्रभाव - सिक्किम का अनुभव" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

डॉ. प्रद्युत गुहा ने 4 जून 2012 को गंगटोक में एफ़आईसीसीआई द्वारा "पूर्वोत्तर क्षेत्र के विशेष संदर्भ में सिक्किम में एमएसएमई विकास" पर आयोजित कार्यशाला में "उद्यमिता में लिंग प्रभाव : मिजोरम के आईजोल जिले का एक केस अध्ययन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 22 जनवरी 2013 को अमिय कुमार दास सामाजिक परिवर्तन और विकास संस्थान, गुवाहाटी द्वारा आयोजित पूर्वोत्तर के युवा सामाजिक विज्ञानियों की बैठक में "पूर्वोत्तर में मलेरिया की चुनौतियाँ और स्वास्थ्य जागरूकता : पूर्वी सिक्किम का एक केस स्टडी" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 27 फरवरी 2013 को मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आईजोल के प्रबंधन विभाग द्वारा "पूर्वोत्तर क्षेत्र के विशेष संदर्भ में भारत में आर्थिक विकास के लिए उद्यमिता : चुनौतियाँ एवं संभावनाएं" विषय पर

आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "भारत और चीन के साथ बांग्लादेश के व्यापार की संभावनाओं पर एक तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 8 मार्च 2013 को असम विश्वविद्यालय, सिलचर के व्यवसाय प्रशासन विभाग द्वारा "पूर्वोत्तर भारत में अंतरराष्ट्रीय पर्यटन सर्किट के संवर्धन : संभावनाएँ, प्राथमिकताएं और सामरिक विकल्प" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "मिजोरम में पर्यटन उद्योग की समस्याएं और संभावनाएं और सकल घरेलू उत्पाद पर इसका प्रभाव" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 22 मार्च 2013 को पाछुंगा यूनिवर्सिटी कॉलेज, आइजोल के वाणिज्य और अर्थशास्त्र विभाग द्वारा "पूर्वोत्तर भारत के आर्थिक विकास : चुनौतियां और अवसर" विषय आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "पूर्वोत्तर भारत की सीमा पार विदेश व्यापार की तीव्रता" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध/रजीनीति विभाग द्वारा संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों से गतिशीलता' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में " सीमा व्यापार और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों : एक विश्लेषण " शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 30 मार्च 2013 को भारतीय विश्वविद्यालय संघ के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक द्वारा "भारत में महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "असम के डिब्रूगढ़ जिले की महिला चाय श्रमिकों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति पर अध्ययन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

डॉ. रंगलाल महापात्र ने 30-31 मार्च 2013 को भारतीय विश्वविद्यालय संघ के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा "भारत में महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "लैंगिक असमानता और इसके सामाजिक और आर्थिक निहितार्थ" पर प्रस्तुत किया.

अन्य शैक्षणिक गतिविधियां

डॉ. रूमा कुंडू ने 24 नवंबर से 14 दिसंबर 2012 को बर्दवान विश्वविद्यालय के यूजीसी अकादमिक स्टाफ कॉलेज में बिजनेस स्टडीज में दूसरे पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया.

डॉ. प्रद्युत गुहा ने 22 मार्च 2013 को अर्थशास्त्र विभाग, बोडोलैंड विश्वविद्यालय, असम द्वारा सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान क्रियाविधि पर आयोजित और आईसीएसएसआर द्वारा पोषित प्रशिक्षण कार्यक्रम में "गुणात्मक शोध" पर एक व्याख्यान दिया.

वर्ष की प्रमुख गतिविधियाँ

विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा इस वर्ष विभाग की कंप्यूटर प्रयोगशाला का उदघाटन किया गया.

मानविकी और सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
भूगोल और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन विभाग

अध्यक्ष का नाम : डॉ. सोहेल फिरदौस
संपर्क नंबर : +913592251137 (कार्यालय), 0980143433 (मोबाइल)
ईमेल : sfirdos@hotmail.com

छात्रों की उपलब्धियां

बसंती राय, कौसिला टिमसीना और शक्ति दुतराज (सभी एमफिल छात्र) ने 4-15मार्च 2013 को भूगोल विभाग, नेहू, शिलांग द्वारा आयोजित भूगोल में अंतरराष्ट्रीय ग्रीष्म स्कूल में भाग लिया. अमृता सिंह, बसंती राय, कर्मा आर.टी.डबल्यू. और शक्ति दुतराज ने सिक्किम नाऊ और और सिक्किम एक्सप्रेस समाचार पत्रों में लेख प्रकाशित किया.

संकाय सदस्य

सोहेल फिरदौस, सहायक प्राध्यापक एमएससी (भूगोल), एमफिल, पीएचडी (जेएनयू, नई दिल्ली) है. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में विकास अध्ययन, शहरी प्रशासन और विकास, सामाजिक और स्थानिक बहिष्करण, जनजातियाँ एवं संसाधन शामिल हैं। अपनी अभिरुचि के क्षेत्रों में पर्यावरण आंदोलन, संसाधन प्रबंधन और विकास में समुदाय की भागीदारी, जलवायु परिवर्तन शामिल हैं. उन्होंने 10 से अधिक शोध लेखों का प्रकाशन, जलवायु परिवर्तन पर एक वॉल्यूम का सह संपादन, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों / सम्मेलनों में 38 शोधपत्र प्रस्तुत, बहिष्कार, अल्पसंख्यकों के विकास, नगरीय प्रशासन और गरीबी पर सहयोगात्मक अनुसंधान का आयोजन किया हैं. वे ब्राउन विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका और मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड में एक अतिथि संकाय के रूप में कार्यरत थे.

रफीउल अहमद, सहायक प्राध्यापक, एमए (भूगोल), एम. फिल (आईआईटी, मुंबई), पीएचडी (जेएनयू, नई दिल्ली) है. उनकी विशेषज्ञता के अपने क्षेत्रों में पूर्वी हिमालय के औपनिवेशिक और साम्राज्यिक भूगोल, लिंग और क्षेत्र, क्षेत्रीय विकास और नियोजन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था शामिल हैं. उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में भौगोलिक राष्ट्रवाद और पूर्वोत्तर भारत में जातीय आंदोलन, सीमा क्षेत्र और पूर्वी हिमालय में प्रवासन, पूर्वी हिमालय में पन बिजली परियोजनाओं के राजनीतिक पारिस्थितिकी आदि शामिल हैं. उन्होंने पूर्वोत्तर भारत के "पॉलिटिकल इकॉनमी ऑफ अंडरडेव्लपमेंट ऑफ नॉर्थ-ईस्ट इंडिया" नामक पुस्तक प्रकाशित किया है. वे अब पूर्वोत्तर भारत में जातीय-प्रदेशिकी का समूह राजनैतिक क्षेत्रीय पहचानों में ऐतिहासिक परिवर्तन पर एक पुस्तक की पांडुलिपि पर काम कर रहे है.उन्होंने भारत में नागरिक समाज संगठनों के साथ अपने लंबे समय की सक्रिय भागीदारी के कारण एक बड़ी संख्या में क्षेत्र-कार्य आधारित अनुसंधान लेख प्रकाशित किए हैं.

उत्तम लाल, सहायक प्राध्यापक, एमएससी (भूगोल), एमफिल, पीएचडी (जेएनयू, नई दिल्ली) है. उनकी विशेषज्ञता का क्षेत्र सामाजिक और पर्यावरण भूगोल है और अपनी रुचिगत क्षेत्रों में और अपने क्षेत्रों में माउंटेन क्रायोस्फेयर, सांस्कृतिक पारिस्थितिकीय, जैव भूगोल, उच्च भूमि गतिशीलता, हिमालय सीमा-पार अर्थव्यवस्था और आपदा प्रबंधन शामिल हैं. उन्होने वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के जूनियर और सीनियर रिसर्च फैलोशिप प्राप्त की. उन्होने तीन शोध लेखों का प्रकाशन और पर्वतीय क्षेत्रों में वैश्वीकरण के मुद्दे पर एक खंड का सह सम्पादन किया और साथ ही उन्होने जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में इंटर यूनिवर्सिटी कंसोर्टियम के अंतर्गत क्रायोस्फेयर पर अध्ययन करते हुए सीमा व्यापार पर सहयोगात्मक अनुसंधान कार्य पूरा किया.

ईश्वरजीत सिंह एलेङ्ग्बाम, सहायक प्राध्यापक, एमएससी (भूगोल), एमफिल, पीएचडी (एएमयू, अलीगढ़) है. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र क्षेत्रीय योजना और पर्यटन भूगोल हैं, और उनकी रुचि हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की गिरावट, भूआकृतियां, प्रक्रियाएँ, और हिमालयी क्षेत्रों में खतरों का उपशमन, शहरीकरण, प्रवास, पूर्वोत्तर राज्यों में लोगों की आजीविका आदि क्षेत्रों में है. "टूरिज़म ज्योग्राफी ऑफ मणिपुर" उनकी लिखी पुस्तक हैं.

प्रकाशन

फिरदौस, सोहेल 2013. "सामाजिक स्थानिक बहिष्कारों का सामना: कोलकाता में मुसलमानों का अनुभव". अब्दुल शबान और सकीब खान (संपादक), "शहरी भारत में मुसलमान", नई दिल्ली: कान्सैप्ट पब्लिशिंग कंपनी, पृष्ठ 152-174.

फिरदौस, सोहेल 2012. "वन की गिरावट, बदलती कार्यबल संरचना और जनसंख्या पुनर्वितरण : झारखंड में बिरहर्स का मामला" इंद्र मुंशी (सं.), "आदिवासी सवाल : भूमि, वन और आजीविका के मुद्दे",नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वैन, पृष्ठ 169-181.

संजय कुमार एवं रफीउल अहमद.2012. "अत्याचार से पीड़ित समुदाय के निजी अनुभवों पर आधारित डिजाइन शिक्षण का विकास : बिहार के गया जिले के मुसहर बच्चों का एक अभिनव प्रयोग का मामला", क्रिस्टीन स्लीटर, संजय कुमार, अरविंद मिश्रा और शशीभूषण उपाध्याय (सं.), स्कूल शिक्षा, "बहुलवाद और सीमांतता : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य", नई दिल्ली ओरिएंट ब्लैकस्वैन

उत्तम लाल. 2012. "स्थिरता और पश्चिमी हिमालय में पर्यावरण की कमी: किन्नौर का एक केस स्टडी". महेन्द्र पी लामा (सं.), "जलवायु परिवर्तन और पर्वतीय क्षेत्रों में स्थिरता : क्षेत्रीय सहयोग के लिए अवसर और चुनौतियाँ", इंडस प्रकाशन कंपनी, नई दिल्ली, पृष्ठ 229-256.

संगोष्ठी / सम्मेलन

सोहेल फिरदौस ने 15-19 अक्टूबर 2012 को इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेन हैजार्डस एंड एनवायरनमेंट, कैस, चेंग्दू, चीन द्वारा "पहाड़ी पर्यावरण और विकास" आईसीएमईडी 2012 पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "सिक्किम के पूर्वी हिमालयी राज्य मे सवालिया विकास" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

उन्होने 11-13 फ़रवरी 2013 को बीएचयू, वाराणसी द्वारा "समकालीन शहरी व्यवस्था : चुनौतियां और अवसर' विषय पर आयोजित राष्ट्रिय संगोष्ठी में राष्ट्रीय संगोष्ठी में " गंगटोक के पर्यावरण शासन : "मिथक बनाम वास्तविकता" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 17-18 दिसंबर 2012 को दार्जिलिंग में पर्यावरण संरक्षण सोसाइटी के संघ (एफ़ओएसईपी) और फ्रेडरिच एबर्ट स्टीफंग (एफ़ईएस) द्वारा "जलवायु परिवर्तन और पर्वतीय क्षेत्र: जागरूकता, अनुकूलन और स्थिरता' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में "पूर्वोत्तर क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 22-24 नवंबर 2012 को टाटा समाजिक विज्ञान संस्थान, गुवाहाटी कैम्पस द्वारा "भारत के अनुसूचित क्षेत्रों में शासन, सामाजिक, आर्थिक असमानता और सामाजिक अशांति" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में "सहस्राब्दि विकास के लक्ष्यों (एमडीजी) और भारत के अनुसूचित क्षेत्रों में गरीबी उपशमन रणनीतियां : अवसर और चुनौतियाँ" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 6-7 सितंबर 2012 को जेएनयू, नई दिल्ली के क्षेत्रीय विकास अध्ययन केंद्र, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वार "भारत की 2011 की जनगणना : परिणामों की व्याख्या एवं निहितार्थ" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में "पूर्वोत्तर भारत का प्रतिनिधित्व : जनगणना 2011 से साक्ष्य" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

उत्तम लाल ने 4 सितंबर 2012 को गंगटोक में आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और भू- राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग, सिक्किम द्वारा 'जलवायु जोखिम प्रबंधन (सीआरएम) कार्यक्रम' विषय पर आयोजित यूएनएसआईडी के भारत सरकार -यूएनडीपी सहयोगी कार्यशाला में भाग लिया. उन्होने 17-18 दिसंबर 2012 को दार्जिलिंग में पर्यावरण संरक्षण सोसाइटी के संघ (एफ़ओएसईपी) और फ्रेडरिच एबर्ट स्टीफ़ंग (एफ़ईएस) द्वारा "जलवायु परिवर्तन और पहाड़ी क्षेत्र : जागरूकता, अनुकूलन और स्थिरता" विषय पर

आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में "ऊँची भूमि में जलवायु परिवर्तन की अनुकूलन क्षमता : पश्चिमी हिमालय का एक केस स्टडी" शीर्षक एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 13-14 अप्रैल को गंगटोक में सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध/राजनीति विभाग के सहयोग से फाउंडेशन ऑफ नॉन वाइलेंट अलटेरनाटिव्स (एफ़एनवीए), नई दिल्ली द्वारा हिमालय के साथ तिब्बत का संबंध' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "तिब्बत तक पद चिन्ह : समय और स्थान के साथ समुदायों को जोड़ते हुए - सिक्किम का एक केस स्टडी" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया .

संकाय विकास कार्यक्रम

उत्तम लाल ने 04.02.2013 से 01.03.2013 तक जेएनयू, नई दिल्ली के अकादमिक स्टाफ कॉलेज में आयोजित चार सप्ताह का अभिमुखी पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा किया.

वर्ष के दौरान प्रमुख नए उपकरण

एआरई जीआईएस वर्शन 10.1 और इमैजिन एडवांस एजुकेशनल किट वर्शन 2013

उपयोगिता: छात्रों और शोध कार्य के अनुप्रयोग के लिए रिमोट सेंसिंग और जीआईएस प्रैक्टिकल.

संकाय विकास कार्यक्रम

उत्तम लाल ने 04.02.2013 से 01.03.2013 तक जेएनयू, नई दिल्ली के अकादमिक स्टाफ कॉलेज में आयोजित चार सप्ताह का अभिमुखी पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा किया.

वर्ष के दौरान प्रमुख नए उपकरण

एआरई जीआईएस वर्शन 10.1 और इमैजिन एडवांस एजुकेशनल किट वर्शन 2013

उपयोगिता: छात्रों और शोध कार्य के अनुप्रयोग के लिए रिमोट सेंसिंग और जीआईएस प्रैक्टिकल.

छात्रों और शोध कार्य के अनुप्रयोग के लिए रिमोट सेंसिंग और जीआईएस प्रैक्टिकल.

विभाग ने 18.03.2013 से 23.03.2013 तक एआरई जीआईएस और एरेडस इमैजिन पर एक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया.

मानविकी और सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
मनोविज्ञान अध्ययन विभाग

विभाग प्रभारी का नाम	: डॉ. सत्यानंद पंडा
कार्यालय टेलीफोन न.	: 03592-251774
मोबाइल नंबर	: 9547909620
ईमेल आईडी	: satyanandap@yahoo.com

विभाग के बारे में

यह विभाग वर्ष 2009-2010 में सिक्किम विश्वविद्यालय में मानविकी और सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अंतर्गत शुरू किया गया था.सिक्किम विश्वविद्यालय पूरे भारत में कुछ विश्वविद्यालयों में से एक है जहां मनोविज्ञान का बीएससी-एमएससी एकीकृत पाठ्यक्रम है. विभाग अंतरविषयक दृष्टिकोण के साथ काम करता है और इस विभाग का प्रमुख उद्देश्य वैचारिक और सैद्धांतिक मनोविज्ञान पर एक मजबूत नींव के साथ अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान के सम्मिश्रण को प्रोत्साहित करना है.

विभाग का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और मानव विकास में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के साथ मानवीय व्यवहार को सिखाना और समझाना हैं. स्नातक एकीकृत बीएससी पाठ्यक्रम का उद्देश्य मनोविज्ञान के महत्वपूर्ण क्षेत्र का ज्ञान प्रदान करना और साथ ही साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रयोगशाला प्रशिक्षण के माध्यम से कौशल निर्माण और सामाजिक वास्तविकताओं के साथ स्वस्थ अंतर - संबंधों को बनाना है. एमएससी मनोविज्ञान पाठ्यक्रम व्यावसायिक दक्षता के विकास, सैद्धांतिक ज्ञान और मानव की समस्याओं से निपटने के क्षेत्र में उत्कृष्टता पर ज्यादा जोर देने के साथ पेशेवर मनोविज्ञान का एक पाठ्यक्रम की कल्पना करता है. यह पाठ्यक्रम व्यापक क्षमता और विशेष पेशेवर का विकास करने के साथ साथ विशेष क्षेत्र में शोध कौशल विकसित करते हुए मनोविज्ञाम के महत्वपूर्ण क्षेत्र में छात्रों को शिक्षित करने के लिए बनाया गया है. इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य भारतीय सामाजिक समस्याओं के विविध लोकाचारों के संदर्भ में गहन बोध क्षमता, महत्वपूर्ण सोच, उच्च नैतिक मानकों और सांस्कृतिक संवेदनशीलता का विकास करना है. इसका उद्देश्य छात्रों को महत्वपूर्ण, विश्लेषणात्मक और व्यावहारिक कौशलों से परिपूर्ण करना है ताकि भविष्य में वे शिक्षाविद के रूप में हो या चिकित्सक के रूप में अपने कॉरियर में उन कौशलों का प्रयोग कर सके. यह पाठ्यक्रम छात्रों को शोध पद्धतियों (गुणात्मक और मात्रात्मक) को जानने का अवसर भी प्रदान करेगा. व्यावहारिक और क्षेत्र कार्य क्षेत्र के समायोजन में विकास, नीति नियोजन और अभ्यास की प्रक्रिया को सीखने में सुविधा प्रदान करेगा. छात्रों के समक्ष जटिल सामाजिक प्रक्रिया और विकास को उजागर किया जाएगा जिसके लिए सामाजिक सम्बन्धों और प्रभावों के साथ साथ स्थानीय स्थितियों

और परिस्थितियों के प्रति विशिष्ट ध्यान देना आवश्यक है.

संकाय सदस्य

डॉ. सत्यानंद पंडा, सहायक प्राध्यापक, ने जुलाई 2009 में सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया. उन्होने अपनी एम. फिल और पीएचडी नैदानिक मनोविज्ञान में विशेषज्ञता के साथ पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से पूरा किया. उनकी रुचि नैदानिक, प्रयोगात्मक और स्वास्थ्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में हैं. उन्होंने नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में शोध पत्र प्रकाशित किया है और कई सम्मेलनों और कार्यशालाओं में पेपर प्रस्तुत किया हैं. विश्वविद्यालय में शामिल होने से पहले उन्होने सात साल से अधिक डा. ब्रैम अस्पताल, रायपुर, छत्तीसगढ़ में और साथ ही सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, चंडीगढ़ में नैदानिक मनोविज्ञानी के रूप में कार्य किया. शिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्रों में उनकी रुचि नैदानिक, स्वास्थ्य और प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्रों में है. उन्हें चंडीगढ़ का एक डीएडिक्सन केंद्र में ड्रग परामर्शदाता के रूप में पाँच वर्ष कार्य करने का अनुभव है. वे हरियाणा में फोर्ड फाउंडेशन द्वारा पुरुष यौन स्वास्थ्य समस्याओं पर प्रायोजित परियोजना से भी जुड़े हुए थे और उन्होने पंडित आर.एस. विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ के मनोविज्ञान विभाग में विजिटिंग संकाय के रूप में कार्य किया.

डॉ. इम्लिसोंगला लोंगकुमेर, सहायक प्राध्यापक, मार्च 2012 में विभाग में शामिल हुए. वे गुवाहाटी विश्वविद्यालय से नैदानिक मनोविज्ञान में मास्टर डिग्री और सामाजिक मनोविज्ञाम में पीएचडी की हैं. उनका डॉक्टरेट शोध प्रबंध "नागाओं के बीच अंत:समूह नजरिए और सामाजिक दूरी" विषय पर है. उनके शिक्षण और शोध की रुचि नैदानिक और सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्रों में है. वे पूर्वोत्तर भारत के मनोवैज्ञानिक एसोसिएशन का एक आजीवन सदस्य है.उन्होने पहले गुवाहाटी विश्वविद्यालय के मानिविज्ञान विभाग में एक अतिथि संकाय के रूप में, कृपा परामर्श, पुनर्वास एवं अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी में एक मनोवैज्ञानिक के रूप में और असम वैली स्कूल, बलीपारा में एक शिक्षक सह परामर्शदाता के रूप में कार्य किया था. उनको " नागालैंड में मानसिक विकारों की ओर रुख के बारे में लोक ज्ञान और लोक विश्वास" शीर्षक परियोजना में काम करने के लिए 2011 में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान की भारतीय परिषद द्वारा फैलोशिप से सम्मानित किया गया है.

डॉ. नूतन कुमार एस थिंगजाम, सहायक प्राध्यापक, 21 मार्च, 2012 को विभाग में कार्यभार ग्रहण किए. उन्होने सेंट जेवियर्स कॉलेज, मापुसा, गोवा (गोवा विश्वविद्यालय से संबद्ध) के स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग में नवंबर 2002 में व्याख्याता के रूप में अपनी शिक्षण कैरियर शुरू की. वे मई 2009 में मनोविज्ञान विभाग में व्याख्याता के रूप में पुणे विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण किए. पिछले एक दशक के दौरान उनको चार प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं जैसे इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकॉलजी (टेलर एंड फ्रांसिस पब्लिकेशन), जर्नल ऑफ क्लिनिकल साइकॉलजी (विले पब्लिकेशन), साइकॉलजीकल स्टडीस (स्प्रिंगर पब्लिकेशन) और सोश्ल बिहैवियर एंड पर्सनलिटी (न्यूजीलैंड आधारित पत्रिका) द्वारा 18 से अधिक बार पांडुलिपि समीक्षक के रूप में आमंत्रित किया गया. उनकी देखरेख में एक छात्र ने पुणे विश्वविद्यालय से अक्टूबर 2011 में मनोविज्ञान में पीएचडी पूरी की. अपने वर्तमान अनुसंधान की रुचि मुखर भाव की पहचान, भाषेतर भाव की पहचान, चेहरे के भाव की पहचान और संगीत के भाव की पहचान में हैं.

प्रकाशन

पंडा, एस (2012). "सिक्किम राज्य में मादक द्रव्यों के सेवन के मनोवैज्ञानिक सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों को समझना", *इंडियन जर्नल ऑफ साइकॉलजीकल साइन्स* 3 (1), 165-175

प्रसीदा, एम, और थिंगजाम, एन एस (2012). "भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी पेशेवरों की मंडी और कार्य संतुष्टि". *जर्नल ऑफ इंडियन बिजनेस रिसर्च*, 4,269-285

अन्य शैक्षणिक गतिविधियां

डॉ. विजेंद्र पांडे, संकाय, मनोविज्ञान विभाग, कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने 17 मई 2013 को "सापेक्ष अभाव और न्याय" विषय पर एक व्याख्यान दिया.

विभाग में परामर्श सेवा सुविधा: विभाग में परामर्श और मनोवैज्ञानिक सेवा केंद्र की स्थापना हो चुकी है.

प्रत्येक बुधवार को विभागीय संगोष्ठी : बुधवार शाम 3:00से 5:00तक के समय छात्रों के लिए उसी सप्ताह के पिछली कक्षा में समझे गए विषय वस्तु पर आधारित प्रस्तुति देने के लिए रखा जाता है. शिक्षक और छात्र प्रस्तुति को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए चर्चा में भाग लेते हैं.

सिक्किम में विभिन्न संस्थानों से संपर्क : विभिन्न मानसिक रोगियों साक्षात्कार करने और साथ ही पेशेवरों के साथ बातचीत करने के उद्देश्य से छात्र नियमित रूप से गंगटोक के विभिन्न संस्थानों जैसे सिक्किम मणिपाल विश्वविद्यालय के मनोरोग विभाग और सर थुतोब नामग्याल मेमोरियल अस्पताल, सिक्किम पुनर्वास और डीटोक्सीफिकशन सोसायटी, निमतार और मानसिक सोसाइटी का दौरा करते हैं.

पेपर प्रस्तुति में छात्रों की भागीदारी

विभाग ने मनोविज्ञान की सीमाओं में शोध कार्य के लिए एक सु-सज्जित प्रयोगशाला की स्थापना की है. छात्र नियमित रूप से आधुनिक और परंपरागत साधनों/परीक्षण के इस्तेमाल से सिक्किम विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के छात्रों पर अभ्यास करते है. विभाग के सभी छात्र और संकाय सदस्य प्रयोगशाला में पहले से तैयार किए किए गए और प्रदर्शित किए गए सख्त प्रयोगशाला के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए व्यावहारिक प्रयोग करते हैं. शिक्षण, शोध और प्रैक्टिकल आयोजन के उद्देश्य से विभाग ने विभिन्न परीक्षण/ उपकरणों जैसे खुफिया परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण, शिक्षा, भावना, धारणा, स्मृति, आदि की खरीद कर ली है. प्रयोगशाला में हाल ही में खरीदे गए कुछ आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपकरण निम्नलिखित हैं :

I. सीएएनटीएबी (कैम्ब्रिज तंत्रिका मनोवैज्ञानिक टेस्ट स्वचालित बैटरी)

II. नेक्सस-10-सिस्टम

केंटेब और नेक्सस 10 विजन में प्रेक्टिकल करते हुए छात्र

मानविकी और सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
सामाजिक प्रणाली और मानव विज्ञान विभाग

विभाग प्रभारी का नाम : डॉ. स्वाति अक्षय सचदेवा
कार्यालय दूरभाष : 03592251228
मोबाइल नंबर : 9434144111
ईमेल आईडी : swatiakshay@yahoo.com

संकाय सदस्य

डॉ. खङ्गेंबाम इंदिरा, सहायक प्राध्यापक, ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से समाजशास्त्र में एमए, एमफिल और पीएचडी की हैं. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में उसकी लोइस की सामाजिक और धार्मिक संगठन, मणिपुर की एक अनुसूचित जाति, पूर्वोत्तर भारत में शिक्षा का समाजशास्त्र, और लैंगिक मुद्दे शामिल हैं. उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में जाति और सामाजिक स्तरीकरण और अनुसूचित जाति/जनजातियों के विकास के मुद्दे शिमिल हैं.

डॉ. बीनू सुनदास, सहायक प्राध्यापक, ने जेएनयू से "दार्जिलिंग में एचआईवी/एड्स : जनसंख्या गतिशीलता और संस्थागत प्रतिक्रियाओं पर एक विश्लेषण" शीर्षक शोध प्रबंध में पीएचडी की हैं. वे "दार्जिलिंग में एचआईवी और एड्स : एक उभरती सामाजिक, राजनीतिक चुनौती" और "एक मादक मिश्रण : दार्जिलिंग में संस्कृति, अर्थशास्त्र, स्वास्थ्य और शराब" दो पुस्तकों के लेखक हैं. उन्होंने हाल ही में युवा पूर्व एशियाई शोधकर्ता कार्यक्रम के अंतर्गत एक शोधकर्ता के रूप में हिरोशिमा विश्वविद्यालय, जापान का दौरा किया.

उनको सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा मानविकी और सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ में बेस्ट टीचर 2012 से सम्मानित किया गया. उन्होंने भारत में और विदेशों में दोनों राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में कई पत्र प्रस्तुत किया हैं. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में स्वास्थ्य के समाजशास्त्र, अनुसंधान क्रियाविधि तथा लिंग और समाज शामिल हैं.

डॉ. स्वाति अक्षय सचदेवा, सहायक प्राध्यापक, ने रोहेलखंड विश्वविद्यालय से एम ए और उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय से पीएचडी की हैं. उसकी पीएचडी के शोध प्रबंध का शीर्षक "भूटिया समाज का एक संरचनात्मक विश्लेषण और सिक्किम के समाज में भूटिया महिलाओं की स्थिति" है. उन्होने अक्टूबर 2008 में सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यग्रहण किया. सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यग्रहण करने से पहले वे सिक्किम सरकारी लॉ कॉलेज में और बाद में सिक्किम सरकारी कॉलेज, तादोंग के समाजशास्त्र विभाग में पढ़ाती थी. उन्होने विस्तृत रूप से सिक्किम में आत्महत्या की समस्या पर और टीवी और रेडियो शो के पैनल पर नियमित रूप से कार्य किया. वे नशीली दवाओं की लत की समस्याओं से निपटने के लिए कई गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर काम कर रही है. उन्होने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमीनारों में पेपर प्रस्तुत किया और सकारात्मक रूप से जीने की कला पर व्याख्यान दिया. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में लैंगिक अध्ययन, राजनीतिक समाजशास्त्र, पूर्वी हिमालय और आत्महत्या और नशीली दवाओं के सेवन शामिल हैं.

प्रकाशन

इंदिरा, के (2012). "मणिपुर के लोइस में सामाजिक और धार्मिक संगठन", *जर्नल ऑफ द एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया*, वॉल्यूम 53. सं 3-4,2004, आईएसएसएन : 2277-346 एक्स.

दास, एस, शेरपा, एम.टी., सचदेवा, एस.ए, ठाकुर, एन (2012). "सिक्किम के हॉट स्प्रिंग्स (ताटोपानी): "धार्मिक आस्था,पारंपरिक विश्वास और पर्यटन को सम्मिलित करने वाला एक सामाजिक चिकित्सा अनुमान", *एशियन अकैडमिक रिसर्च जर्नल*, (एएआरजे)वॉल्यूम. 1 (4), अक्टूबर, आईएसएसएन :2278-859एक्स.

सचदेवा, एस. ए (2012). "सिक्किम के भूटिया समुदाय की रिश्तेदारी की शर्तों का विश्लेषण", *एशियन अकैडमिक रिसर्च जर्नल, (एएआरजे)* वॉल्यूम. 1 (6), दिसंबर, आईएसएसएन:2278-859एक्स.

वर्मा, एस, सचदेवा, एस, और पांडे, वी. (2013). "सिक्किम के युवाओं में आत्महत्या: एक अन्वेषन", *'शौर्यभूमि' : भाषा, सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य का एक अंतरराष्ट्रीय बहुभाषी रिसर्च जर्नल*, वॉल्यूम .1 (1) फरवरी, अप्रैल, आईएसएसएन : 2319-720एक्स.

सचदेवा, ए एस (2013). "प्रारंभिक सिक्किम में हर दिन ज्ञान और मठ शिक्षा", *क्रेस्ट: संस्कृति की विवेकानंद केंद्र संस्थान के जर्नल*, वॉल्यूम. छठी, संख्या 2, आईएसएसएन-0976-0040.

वर्मा, एस, सचदेवा, एस, और सुनदास, बी (2013). "संस्कृति, सामाजिक प्रक्रिया और आत्महत्या: एक गुणात्मक जांच", उमी नंदा विश्वास (सं.) *जर्नल ऑफ सोश्ल साइकॉलजी ऑफ हैल्थ*, नई दिल्ली, कान्सैप्ट नई दिल्ली: संकल्पना प्रकाशन कंपनी.

संगोष्ठी / सम्मेलन

इंदिरा, के ने 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग द्वारा "संघवाद विदेश नीति और सीमावर्ती राज्य: भारत के पूर्वोत्तर राज्यों से गतिशीलता" विषय पर आयोजित संगोष्ठी में "मणिपुर में सीमा पार नशीले पदार्थों की तस्करी और इसके प्रभाव" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 30-31 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में सिक्किम विश्वविद्यालय और भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा विषय पर आयोजित संगोष्ठी में "कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न : उनके सहकर्मियों की स्वीकृति और विश्वास का महत्व" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

सुनदास, बीनू ने 30-31 मार्च 2013 को सिक्किम रिट्रीट, गंगटोक में भारतीय विश्वविद्यालय संघ के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा "भारत में महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "एचआईवी/एड्स पीड़ित महिलाओं के लिए दर्शन और सामाजिक सुरक्षा समाविष्ट करना" शीर्षक एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 15-17 दिसंबर 2012 को लैंडमार्क होटल, बैंकॉक, थाईलैंड में प्रेस्डा फाउंडेशन, जापान द्वारा "एशिया में मानव शास्त्रीय स्थिरता" विषय पर आयोजित संगोष्ठी में "सिक्किम के लुप्त ऑटोच्थोन्स" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

सचदेवा ए.एस ने 30-31 मार्च 2013 को डॉ. पायल बनर्जी के साथ संयुक्त रूप से भारतीय विश्वविद्यालय संघ के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा भारत में महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "मानचित्र पर महिला : सिक्किम में संस्थानों के विश्लेषण, भाषण, और महिलाओं के प्रति आचरण" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 23-24 मार्च को श्री पीडी राय द्वारा" सिक्किम में शराब और मादक द्रव्यों के सेवन को रोकने का समाधान की खोज" विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया और "सिक्किम में किशोरी स्वास्थ्य और प्रजनन अधिकार: एक सिंहावलोकन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

पेटेंट / पुरस्कार / सम्मान / मान्यता

बीनू सुनदास ने सिक्किम विश्वविद्यालय से सामाजिक विज्ञान में वर्ष 2011-12 का सर्वश्रेष्ठ अध्यापक पुरस्कार प्राप्त किया.

एमफिल मार्गदर्शन

क्र. स.	शोध प्रबंध का शीर्षक	शोध छात्र का नाम	पर्यवेक्षक का नाम	उपाधि प्रदान का वर्ष
1.	इलायची की खेती: सिक्किम में संस्कृति, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना	डंबर कुमारी गिरि	डॉ. स्वाति ए सचदेवा	2013
2	सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों और परिवर्तन: सिक्किम में राय समुदाय का एक अध्ययन	योजना राय	डॉ. स्वाति ए सचदेवा	2013
3	भाषा, पहचान और सामाजिक परिवर्तन: सिक्किम में गुरुंग समुदाय का एक अध्ययन.	उत्तम गुरुंग	डॉ. बीनू सुनदास	2013.

स्वदेशी और लोक अध्ययन विद्यापीठ

एथ्नोबॉटनी और सामाजिक चिकित्सा अध्ययन विभाग

अध्यक्ष का नाम : डॉ. एन सत्यनारायण
कार्यालय दूरभाष : 03592-231270
मोबाइल नंबर : +91-8348566069
ईमेल आईडी : sathyan_dixit@yahoo.in

संकाय सदस्य

डॉ. बिमल कुमार घिमिरे, सहायक प्राध्यापक ने पादप जैव प्रौद्योगिकी में पीएचडी की है.उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में टिशू कल्चर, जेनेटिक परिवर्तन, जैव क्रियाशील यौगिकों और महत्वपूर्ण औषधीय पौधों पर इसकी जैविक गतिविधि शामिल हैं. उन्होंने महत्वपूर्ण औषधीय पौधों जैसे कोडोनोप्सिस एसपी, पेरीला रैमीनिया एसपी के आनुवंशिक परिवर्तन (ट्रांसजेनिक पौधों) पर और औषधीय मूल्य बढ़ाने, रोग प्रतिरोधी के लिए तथा पौधों में ए- टोकोफेरोल सामग्रियों के स्तर बढ़ाने के लिए कार्य किया.उन्होंने ड्राईमेरिया कॉर्डटा, सोलेनम एसपी सहित महत्वपूर्ण औषधीय पौधों का पुनर्जनन प्रणाली के अनुकूलन पर कार्य किया और जैव ईंधन के स्रोत के रूप मिस्सेन्थस एसपी के बारे में अध्ययन किया हैं.

डॉ. धनी राज छेत्री, सह प्राध्यापक ने पादप शरीरक्रिया विज्ञान और जैव रसायन विज्ञान में पीएचडी की है. उनकी रुचि के क्षेत्रों में जैव रसायन, एंज़ाइमोलॉजी, प्लांट स्ट्रेस फिजियोलॉजी, औषधीय पौधे शामिल हैं.उनके शोध कार्य का क्षेत्र में जैव रसायन और पौधों की एंजाइमोलॉजी शामिल है.उनकी टीम एंजाइम, ला म्यो इनोसिटोल-1-फॉस्फेट सिन्थेज़ (एमआइपी) को शुद्ध और विशेषीकृत किया है और पहली बार के लिए एक पेरिडोफाइट के साइटोसोलिक और क्लोरोप्लास्टिक अंशों के बीच की विभिन्न थर्मल सहिष्णुता को निकाला है. फेटल लिवर से एमआइपी पर किए गए उनके अध्ययन फैटी लीवर रोग, मनुष्यों में लीवर सिरोसिस आदि की समझ और सुधार करने में काफी योगदान दिया है.

डॉ. एन बिजयालक्ष्मी देवी, सहायक प्राध्यापक ने वन पारिस्थितिकी में विशेषज्ञता हासिल की हैं.उनकी रुचि कार्बन ज़ब्ती, पारिस्थितिकी तंत्र सेवा, प्लांट सॉइल इंटेरेक्शन में है. उन्होने कार्बन ज़ब्ती पर काम किया है जो ग्लोबल वार्मिंग के साथ मुकाबला करने के लिए महत्वपूर्ण रणनीतियों में से एक है. साथ ही उन्होने पारिस्थितिकी के अन्य अग्रणी क्षेत्रों जैसे मिट्टी माइक्रोबियल बायोमास, एन-मिनरलाइजेशन, सॉइल कार्बन डाई ऑक्साइड, उत्सर्जन और वन पारिस्थितिकी तंत्र में कूड़े गतिशीलता पर काम किया है. वे सीएसआईआर से रिसर्च एसोसिएटशिप (आरए) और यूजीसी से डॉ. डीएस कोठारी पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप से सम्मानित हैं.

डॉ. एन. सत्यनारायण, सहायक प्राध्यापक ने पादप आण्विक जीव विज्ञान और जीनोमिक्स में विशेषज्ञता हासिल की हैं. शोध क्षेत्र में उनकी अल्प उपयोगी फली फसलों के वर्गिकरण, विकास और प्रजनन तक विस्तृत हैं. उनके ज़्यादातर कार्य एल-डोपा के एकमात्र प्राकृतिक स्रोत जीनस म्यूकना पर केन्द्रित है जो पार्किंसंस रोग के उपचार में प्रयोग किए जानेवाले न्यूरोट्रांसमीटर दवा डोपामाइन के अग्रदूत है. इसके अलावा, उनकी टीम कई अल्प उपयोगी फसलों के लिए जीनोमिक संसाधनों के विकास के दृष्टिकोण पर आधारित अगली पीढ़ी के अनुक्रम (एनजीएस) की जांच भी करती है. उनकी शोध परियोजनाओं के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों और प्रशस्तियों से 1 करोड़ रुपये से भी अधिक निधि प्राप्त की गई है. उन्होंने कहा कि शिक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए सर एम. विश्वेश्वरैया मेमोरियल गोल्ड मेडल प्राप्तकर्ता हैं.

प्रकाशन

बिमल कुमार घिमिरे, चांग यॉन यू, हा जुंग किम और इल मिन चुंग. "जेंटेडिश्चिया ऐथिओपिका एसपीआर और जेंटेडिश्चिया एलिटियाना इंग्ल" में "गुण सूत्र प्रारूप और न्यूक्लिक एसिड की मात्रा अफ्रीकन", जर्नल ऑफ बायोटेक्नालजी, वॉल्यूम. 11 (53), पृष्ठ 11604-11609, 2012.प्रभाव कारक 0.56.

बिमल कुमार घिमिरे, चांग यॉन यू, बुरा मिन चुंग .शूटिंग जीवोत्पत्ति और सोलेनम एकुलीअतटीसिमम जैक की रिजेरेंट्स में आनुवंशिक स्थिरता का मूल्यांकन प्रत्यक्ष. प्लांट सेल ओआरजी,सीयूएलटी., वॉल्यूम 108, अंक 3, पृष्ठ 455-464, 2012.इम्पैक्ट फैक्टर 3.09.

ते सेओंग, झा, जेजी ली, हरियाणा किम, बीके घिमिरे, जद लिम, डीसी जिन, सीवाई यू . ट्रांसिएंट अशे द्वारा "आण्विक विशेषता और क्षणिक परख

द्वारा मिसकेन्थस साइनेसिस एमएस सीओएमटी जीन के दवाब संकेतन" रशियन जर्नल ऑफ प्लांट फिजियोलॉजी}2012, वॉल्यूम 1।59, स. 5, पृष्ठ 626-631।के एल. प्रभाव कारक 0.2

बालकृष्ण घिमिरे, बिमल कुमार घिमिरे, क्वेओन हेओ. एनाटॉमी ऑफ वेजीटेटीव पार्ट्स ऑफ बेर्गेनिया सिलियाता (एचएडबल्यू) स्टर्न्ब. (सेक्सीफ्रगेसी): एक संभावनापूर्ण औषधीय जड़ी बूटी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बॉटनी, पृष्ठ.136-144, 2012.

छेत्री, डीआर; गुप्ता, एस., मुखर्जी, ए.के. और अधिकारी, जे. एल-म्यू -इनोसिटोल-1-फॉस्फेट सिन्थेज़ का अंग विकसित करने में अभिव्यक्त : मानव भ्रूण जिगर से एंजाइम के अलगाव और लक्षण एप्लाइड बायोकैमिस्ट्रि एंड बायोटेक्नालॉजी, 167(8) :2269-2282 (2012) स्प्रिंगर, यूएसए. प्रभाव कारक 1.51

छेत्री, डॉ, दार्जिलिंग हिमालय में औषधीय पादप जैव विविधता. हिमालय क्षेत्र में पर्यावरण के विकास और सामाजिक परिवर्तन (सोमयाजि, एस और खवास, वी. स.) में, आकांशा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ 91-115 (2012)

संगोष्ठी / सम्मेलन

बिमल कुमार घिमिरे ने 9 अप्रैल 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय के बागान प्रबंधन और अध्ययन विभाग द्वारा "भारत में चाय का पूरबी परिदृश्य के विशेष संदर्भ में चाय संस्कृति और विज्ञान" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में "चाय और उसके जैव क्रियाशील यौगिकों के महत्व" शीर्षक एक पेपर प्रस्तुत किया.

छेत्री,डी.आर. ने मार्च, 8-9 (2013) को गंगटोक, भारत में "आर्किड संरक्षण एवं सामुदायिक आजीविका के लिए सतत विकास" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संवाद में "आर्किड के प्रचार में जैव प्रौद्योगिकी के हस्तक्षेप : दार्जिलिंग पहाड़ियों में उपलब्ध छह सेलोजाइम प्रजातियों के लिए मीडिया ऑप्टेमाइजेशन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. (पोस्टर प्रस्तुति)

एन. सत्यनारायण ने 2-7 अक्टूबर 2012 को आयोजक संस्थान आईसीआरआईएसएटी, हैदराबाद में फली आनुवंशिकी और जीनोमिक्स पर आयोजित चतुर्थ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "विंज्ड बीन (फॉस्फोकार्पस टेट्राजोनोलोबस) में प्रतिलेखन विश्लेषण : एसम्ब्ली, एनोटशन और मार्कर खोज" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया और इसके लिए उन्हे सर्वश्रेष्ठ पेपर और सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

संकाय विकास कार्यक्रम

डॉ. एन बिजयालक्ष्मी देवी ने 3-8 दिसंबर 2012 को सीईपीटी, अहमदाबाद विश्वविद्यालय में डीएसटी द्वारा जियोमेटिक्स पर प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया.

पेटेंट / ऑनर्स / मान्यता

"ड्राइमेरिया कॉर्डाटा" की पुनर्जनन प्रणाली में पेटेंट डॉ. विमल कुमार घिमिरे और उनकी टीम. पेटेंट संख्या -10-1214785 (दक्षिण कोरिया, 2012)

वर्ष के दौरान खरीदे गए प्रमुख उपकरण

क. अल्ट्रा जल शोधन प्रणाली (मिलिपोर)

ख. ट्रिनोकूलर स्टीरियो ज़ूम माइक्रोस्कोप (निकॉन)

ग. यूवी विजिबल स्पेक्ट्रोफोटोमीटर (थर्मो फिशर)

घ. ट्रिनोकूलर माइक्रोस्कोप (कार्ल जेश)

परियोजनाएं

डॉ. एन सत्यनारायण:

परियोजना का शीर्षक: महत्वपूर्ण जर्मप्लाज्म का डीएनए फिंगरप्रिंटिंग, आनुवंशिक विविधता का मूल्यांकन और मखमली सेम (एम. प्यूरिन्स) में विशेषता विशिष्ट प्रजनन के लिए पैतृक लाइनों की पहचान.

उद्देश्य: क. परियोजना के एएफ़एलपी का उपयोग कर डीएनए फिंगरप्रिंटिंग की स्वीकृति,

ख. जर्मप्लाज्म संग्रह में आनुवंशिक विविधता का आकलन,

ग. विविध परेंटल लाइनों की पहचान, और

घ. जनसंख्या के मानचित्रण की शुरूआत

अवधि: 3 वर्ष

धन के स्रोत: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार.

प्रारम्भ की तिथि : 15 सितम्बर 2012.

परियोजना का शीर्षक: एम प्यूरिन में माइक्रोसेटेलाइट मार्करों के विकास और चरित्र चित्रण - एक औषधीय एवं कृषिशास्त्रीय रूप से महत्वपूर्ण फली प्रजातियों.

उद्देश्य और संभावना : क. एमएपीजी. पीओपीएलएन के माता पिता का ट्रांसक्रिप्टोम अनुक्रम करना .

ख. प्रतिलेखन डेटा पर आधारित विशिष्ट माइक्रोसेटेलाइट मार्करों की प्रजातियों का एक सेट विकसित करना

ग. माइक्रोसेटेलाइट मार्कर का उपयोग करके लाइनों को चिह्नित करना.

घ. एसएसआर मार्करों का उपयोग करके संबन्धित नक्शा विकसित करना

अवधि: 3 वर्ष

धन के स्रोत: जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार.

प्रारम्भ और समाप्ति की तिथि : 3 मार्च, 2013.

प्रधान निरीक्षक : एन सत्यनारायण

स्वदेशी और लोक अध्ययन विद्यापीठ

संगीत विभाग

इस विभाग को संगीत में कला प्रदर्शन में 3 वर्षीय स्नातक और 2 वर्षीय स्नातकोत्तर के एकीकृत पाठ्यक्रमों के साथ जुलाई 2011 में स्थापित किया गया. विभाग के पाठ्यक्रम भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, पाश्चात्य संगीत और ध्वनिकी, विश्व संगीत, एथ्नोसंगीतशास्त्र, संगीत में सौंदर्य, संगीत प्रौद्योगिकी, संगीत और मीडिया, पूर्वी हिमालय विशेष रूप से सिक्किम का संगीत, आदि का एक जीवंत मिश्रण पर ज़ोर देता है. विश्वविद्यालय के संगीत विभाग न सिर्फ अच्छे प्रदर्शक/गायक/कलाकार बल्कि विद्वान भी बनाने के लिए इच्छुक है जो वैश्विक दर्शकों तक पहुँचानेके लिए संगीत और एथ्नोसंगीतशास्त्रों संबंधी पत्रिकाओं में अपने लेखन और प्रकाशन में भी समान रूप से दक्ष हों.

संकाय सदस्य

जयंत कुमार बर्मन ने रवींद्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता से संगीत में एमए हैं. उन्होंने रवींद्र भारती विश्वविद्यालय से कला थेरेपी (संगीत थेरेपी) प्रदर्शन में एक विशेष कोर्स किया है जहां उनका प्रेक्टिकल "मानव स्वास्थ्य के लिए एक चिकित्सा के रूप में संगीत" विषय पर था. उन्होंने कई संगीत रचनाओं में योगदान दिया है और सैकड़ों लोक गीतों और आधुनिक गीतों के लिए संगीत दिया है. पेशे के रूप से वे शास्त्रीय, अर्द्ध शास्त्रीय और लोक संगीत के गायक और संगीतकार हैं. उन्होने कालाहांडी, ओड़ीशा के सांस्कृतिक जिला परिषद द्वारा आयोजित कालाहांडी महोत्सव-2004 जैसे विभिन्न कार्यक्रम में भाग लिया और प्रदर्शन किया है. उनकी रुचि की क्षेत्र उत्तर बंगाल और पूर्वी हिमालय के लोक संगीत है. उनके वर्तमान शोध में लोक गीत, लोक वाद्ययंत्र और सामान्य रूप से पूर्वी हिमालय क्षेत्र तथा विशेष रूप से सिक्किम के मूल निवासी द्वारा इस्तेमाल किये जानेवाले और विलुप्त हो रहे दुर्लभ स्वदेशी वस्तुओं के संरक्षण और संग्रह का अध्ययन शामिल है.

समिधा वेदबाला रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता से वाद्य संगीत (सितार) में एमए हैं. वर्तमान वे रवींद्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता से "20वीं और 21 वीं सदी में सितार बाज के शैलीगत विकास" विषय पर पीएचडी कर रही हैं.

डॉ. कृष्णेंदु दत्ता ने 14 मई 2012 को विभाग में कार्यभार ग्रहण किया.वे रवींद्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता से 'परिताड़न वाद्य संगीत "पर अपनी मास्टर डिग्री (1997) उन्होने 2004 में भारतीय परिताड़न और उनके प्रयोग का अंकन करते हुए "उत्तर भारतीय तापद्धटाइट नूतन बोलीपीर उदभावन एवं तबला ओ अन्यान्न आनन्धा यंत्रेर तार प्रयोगविधि" विषय पर पीएचडी की हैं. उनको अलेक्जेंडर वॉन हुम्बोल्ट स्टीफ़ंग, बॉन, जर्मनी द्वारा सहायता प्राप्त कोलकाता के वर्तमान संगीत परिदृश्य का एक सामाजिक संगीत प्रलेखन पर काम करने के लिए एक परियोजना दी गई. उन्होंने बंगाल के लुप्तप्राय वाद्ययंत्रों के प्रलेखन, उनके प्रदर्शन, अनुप्रयोगों और निर्माण पद्धति पर गहन क्षेत्र कार्य हाथ में लिया. उन्होंने विभिन्न परियोजनाओं के अंतर्गत इसराज, श्रीखोल, और श्चिम बंगाल के नादिया जिले के पारंपरिक संगीत खिलौने के निर्माण पर शोध किया. उन्होने रवींद्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता में कमजोर और अप्रचलित हो रहे संगीत उपकरण पर काम किया.उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत समारोहों के संगीत समीक्षा का नियमित लेखक हैं और साथ ही उन्होने सर्वाधिक परिचालित बंगाली साप्ताहिक 'साप्ताहिक' और वर्तमान में कई प्रतिष्ठित संगीतकारों को एक संगीत आलोचक के रूप में लेख प्रकाशित किया. उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में भाग लिया है. उनके कई प्रकाशन है. वे बंगाल के एक प्रसिद्ध तबला वादक भी हैं.

संगोष्ठी / सम्मेलन

जयंत कुमार बर्मन ने गंगटोक में सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा आईसीसीआर एंड सांस्कृतिक मंत्रालय के सहयोग से आयोजित "हिमालय अंतरराष्ट्रीय महोत्सव-2012" में "सिक्किम के चियाब्रुंग" और "उत्तर बंगाल के राजवंशी समुदाय के संगीत और संगीत वाद्ययंत्र" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

समिधा वेदबाला ने 22-22 सितंबर 2012 को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में "भारत की लोक संस्कृति और प्रतिबिम्ब" विषय पर आयोजित संगोष्ठी में "पहाड़ गाता कहाँ" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

भाषा और भाषा विज्ञान विद्यापीठ
एशियाई भाषा विभाग (चीनी)

प्रभारी का नाम : धृति रॉय
कार्यालय दूरभाष : 03592-251462
मोबाइल नंबर : 9932861528
ईमेल आईडी : dhritivenkt@yahoo.co.in

संकाय सदस्य

सुश्री धृति रॉय, सहायक प्राध्यापक और विभाग प्रभारी ने विश्व भारती (2003) से चीनी भाषा और चीनी अध्ययन में एमए है.उन्होने पीकिंग विश्वविद्यालय, चीन में एक विस्तृत अध्ययन की विदेश विजिटिंग छात्रा के रूप में रहते समय अपनी पीएचडी का शोध प्रबंध जमा किया, जिसका सह पर्यवेक्षण प्रोफ. वांग बांगवे, विदेशी भाषा विभाग (2009-2010) द्वारा किया गया. वे बीजिंग नौर्मल विश्वविद्यालय, चीन में चीनी सरकार की छात्रवृत्ति (2008-2009) के तहत मंदारिन में गहन भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम में एक उच्च स्तरीय अध्ययन विद्यार्थी थी. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में प्राचीन चीन, शास्त्रीय चीनी साहित्य, चीनी बौद्ध धर्म, पूर्व आधुनिक भारत, चीन बौद्ध सहभागिता शामिल हैं. उनकी रुचि चीन में समकालीन सामाजिक विकास, आधुनिक चीनी साहित्य में हैं.

संगोष्ठी / सम्मेलन

धृति रॉय ने 4 नवंबर 2012 को आईसीआई न्यू स्कूल, न्यू यार्क, सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च, नई दिल्ली, जेएनयू,नई दिल्ली और दिल्ली विश्वविद्यालय द्वार चीन अध्ययन विषय पर आयोजित उभरते विद्वानों की संगोष्ठी में " पांचवीं सदी सामान्य युग ... चीनी बौद्ध मठ परंपरा का पुनर्निर्धारण ... 'शीर्षक एक पेपर प्रस्तुत किया. इस पेपर को 6 मार्च 2013 को नई स्कूल विश्वविद्यालय, न्यूयार्क के आईसीआई, नई स्कूल, न्यू यार्क, द्वारा चीन अध्ययन पर आयोजित इंटरनेशनल इमर्जिंग स्कॉलर्स की संगोष्ठी में अंतिम प्रस्तुति के लिए चयनित भारत से दो सर्वश्रेष्ठ पत्रों में से एक के रूप में चयनित किया गया.उन्होने 30-31 जनवरी 2013 को बागडोगरा एयर फोर्स स्टेशन में "चीनी भाषा समन्वित दक्षता" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय रक्षा बलों की संगोष्ठी में "चीन : भू राजनीतिक विशिष्टताएं, भाषिक जटिलताएं और राजनीतिक पेचीदगियाँ' शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

वर्ष के दौरान स्थापित प्रमुख उपकरण

चीनी भाषा प्रयोगशाला के लिए 2012 में ओरेल टेक्नोसिस्टम्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड से शिक्षण इंटरएक्टिव सॉफ्टवेयर खरीदा गया. यह एक इंटरेक्टिव भाषा शिक्षण सॉफ्टवेयर है जो छात्रों को सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के लिए और साथ ही चीनी भाषा में उच्च कुशल व्याख्या के लिए बेहतरीन सुविधा प्रदान करता है.

भाषा और भाषा विज्ञान विद्यापीठ
नेपाली भाषा और साहित्य विभाग

अध्यक्ष का नाम :डॉ. कबिता लामा
कार्यालय दूरभाष :251342
मोबाइल नंबर :9775841185
ईमेल आईडी :kavitalama@gmail.com

संकाय सदस्य

प्रो. प्रताप चंद्र प्रधान एमए (नेपाली), एमए (अंग्रेजी), पीएचडी (त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल) है. उनकी विशेषज्ञता और अभिरुचि का क्षेत्र पश्चिमी साहित्यिक आलोचना है.

डॉ. कबिता लामा एमए (नेपाली) 1991 एनबीयू से और पीएचडी (नेपाली) 1997 बीएचयू से है. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में नेपाली साहित्यिक आलोचना, नेपाली बाल साहित्य हैं.महिला अध्ययन, भाषा विज्ञान और काव्य उनकी अभिरुचि के क्षेत्र है. उन्होने नेपाली छोटी कहानियों के प्रथम खंड का अंग्रेजी में अनुवाद किया (तुलनात्मक साहित्य विभाग, एडवांस स्टडीज सेंटर, जादवपुर विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित (हिल्स की कॉल) में नेपाली छोटी कहानियों के अनुवाद का पहला खंड है..

समर सिन्हा एमए (भाषा) 2001 जेएनयू से, एमफिल (भाषा) 2003 जेएनयू से, और पीएचडी (भाषाविज्ञान) (मौखिक की प्रतीक्षा में) जेएनयू से हैं. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र सांकेतिक भाषाविज्ञान है और उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में व्याकरण की वास्तुकला, भाषिक लक्षण की सूची, लुप्तप्राय भाषा, कॉर्पस एनोटेशन और अनुवाद शामिल हैं. उनकी पीएचडी के शोध प्रबंध "भारतीय सांकेतिक भाषा का व्याकरण" भारतीय सांकेतिक भाषा और भारतीय बधिर समुदाय के एक विस्तृत व्याकरणिक अध्ययन है.यह निस्संदेह आम तौर पर प्राकृतिक मानव भाषा और विशेष तौर पर भारतीय सांकेतिक भाषाओं की हमारी समझ को बढ़ाने तथा भारत में बहरा समुदाय को सशक्तिकरण की दिशा में बढ़ाने में योगदान दिया है. उन्होंने नेपाली विषयवस्तु की टिप्पणी और भारतीय संकेत भाषा के लिए एक पद टेगसेट और एक कोश टेगसेट विकसित किया है. इसके अतिरिक्त उन्होने सभी भारतीय भाषाओं के लिए ईगल्स ढांचे पर आधारित पर एक सामान्य पीओएस टेगसेट के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है.

देवचन्द्र सुब्बा 2007 में एनबीयू से एमए (नेपाली) हैं. उनकी विशेषज्ञता का क्षेत्र इकॉक्रिटिसिज़्म है.

बलराम पांडे एमए (नेपाली) 2000 में एनबीयू से और एमफिल (नेपाली) 2002 में एनबीयू से है. उनकी विशेषज्ञता का क्षेत्र सामाजिक भाषाविज्ञान है.

प्रकाशन

प्रधान, प्रताप सी. "अछा राय रसिक (भारतीय साहित्य के निर्माता) के जीवन और कार्य", नई दिल्ली, साहित्य अकादमी (2012).

प्रधान, प्रताप सी. "आयामिक कथाकार इंद्र बहादुर राय", काठमांडू: भृकुटी अकैडमिक प्रकाशन (2012).

प्रधान, प्रताप सी. "संत कवि ज्ञान दिल दास: भारतीय नेपाली साहित्य के आदि कवि", नेपाली अकैडमीजर्नल, 8/8, नेपाली विभाग, नॉर्थ बंगाल यूनिवर्सिटी (2012)

प्रधान, प्रताप सी. "सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में तुलसीदास कृत रामचरित मानस और भानु भकतीया रामायण", कोलकाता,

विजया पब्लिशिंग हाउस, 2013

बलराम पांडे. "भारतेली नेपाली कविता: संदर्भ दियास्पोरा", दिल कुमार प्रधान द्वारा संपादित आधुनिक भारतीय नेपाली कविता में, जलपाईगुड़ि, मनमाया प्रकाशन, पृष्ठ 55-66 । आईएसबीएन 978-81-921488-3-0

बलराम पांडे. "सिक्किम का लोक नाटक में अध्ययन" संजय राय के सम्पादन में देशी और जातीय हिमालय भाषाओं पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की कार्यवाही,

साहित्य और संस्कृति, कला संकाय, भारतीय भाषा विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बी बी कोइराला फाउंडेशन के सहयोग से, 05-06 अक्टूबर 2012

परियोजनाएं

प्रो प्रताप सी. प्रधान

परियोजना का शीर्षक: रूप नारायण सिंह का सम्पूर्ण कार्य

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत परियोजना

अवधि: 2011 - 2013.

डॉ. कविता लामा

परियोजना का शीर्षक "भारतीय नेपाली बाल साहित्य में महिला लेखक : एक अध्ययन "

अवधि - एक वर्ष

अनुदान स्रोत - यूजीसी

अनुदान राशि : रू 1,01,400 / - (एक लाख एक हजार चार सौ केवल)

अवधि - 4 मार्च 2012 - 4 मार्च 2013

संगोष्ठी / सम्मेलन

डॉ. लामा ने 9 अगस्त 2012 को न्यू स्कूल, न्यू यार्क, युनान विश्वविद्यालय, कलकत्ता विश्वविद्यालय और सिक्किम विश्वविद्यालय के छात्रों और संकाय सदस्यों के साथ दार्जिलिंग के फॉर्च्यून होटल में न्यू स्कूल द्वारा आयोजित वार्तालाप सत्र में में भाग लिया.

उन्होने 27-30 अगस्त 2012 को जादवपुर विश्वविद्यालय के तुलनात्मक साहित्य विभाग में भारतीय साहित्य अनुवाद केंद्र (सीईएनटीआईएल) द्वारा तामाङ सेलो, माडलय गीत, लाहरी और सवाई पर आयोजित नेपाली-बंगला तथा नेपाली - अंग्रेजी अनुवाद कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया.

उन्होने 18-20 मार्च 2013 को होटल रेण्ड्ज़ेवौस, गंगटोक में सिक्किम अकादेमी के सहयोग से नेशनल बूक ट्रस्ट, इंडिया और मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बच्चों के लिए रचनात्मक लेखन और चित्रण पर आयोजित कार्यशाला में और साथ ही जनता सशक्तिकरण एवं विकास केंद्र नामक एनजीओ के सहयोग से समकालीन भारतीय बाल साहित्य और कहानी वाचन पर आयोजित पैनल चर्चा में भाग लिया.

समर सिन्हा ने 2 फ़रवरी 2013 को हांगकांग के चीनी विश्वविद्यालय में संकेत भाषा और बहरी अध्ययन केंद्र द्वारा "एशिया में संकेत भाषा और बहरी शिक्षा" विषय पर आयोजित तृतीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में " एक पोस्टर प्रस्तुत किया. पोस्टर का विषय था "भारतीय सांकेतिक भाषा में ध्वन्यात्मकता के ध्वनिविज्ञान"उन्होंने 11-12 फरबरी 2013 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के मानविकी

और सामाजिक विज्ञान विभाग में भाषा संकाय : डिज़ाइन और इंटरफ़ेस विषय पर "सांकेतिक भाषा में सूचकांक: लक्षणों की खोज में एक अंतरफलक की आवश्यकता" शीर्षक एक पेपर प्रस्तुत किया

बलराम पांडे ने 5-6 अक्टूबर 2012 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा विभाग द्वारा देशी और जातीय हिमालयी भाषा, साहित्य और संस्कृति विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में "सिक्किम के लोक नाट्यशाला : उत्पत्ति और विकास" शीर्षक एक पेपर प्रस्तुत किया.

उन्होंने 21-23 सितंबर 2013 को भाषा अनुसंधान और प्रकाशन केंद्र, आईसीएसएसआर, नई दिल्ली द्वारा "भारत के जनवादी भाषाई सर्वेक्षण" विषय पर आयोजित कार्यशाला में "सिक्किम की भाषा" शीर्षक एक पेपर प्रस्तुत किया. वे भी संयुक्त रूप से नेपाली साहित्य परिषद सिक्किम और संस्कृति विभाग, सिक्किम सरकार, गंगटोक द्वारा ' नेपाली भाषा में मानकीकरण और वर्तनी एकरूपता" पर आयोजित पैनल चर्चा में चर्चाविद के रूप में उपस्थित रहे.

विधि एवं शासन विद्यापीठ
विधि और विधिक न्यायशास्त्र अध्ययन विभाग

विभाग प्रभारी का नाम	: श्री वीर मयंक
कार्यालय दूरभाष	: 03592-251168
मोबाइल नंबर	: 91-8145894966
ईमेल आईडी	: veer.mayank.su @ gmail.com

संकाय सदस्य

श्री वीर मयंक, सहायक प्राध्यापक बीए, एलएलएबी, एलएलएम हैं. विभाग में कार्यग्रहण करने से पहले वे वकालत की प्रेक्टिस कर रहे थे. उन्होंने 2209 में अंतरराष्ट्रीय विधि अध्ययन केंद्र, अंतरराष्ट्रीय अध्ययन विद्यापीठ, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से अंतरराष्ट्रीय विधि के क्षेत्र में एमफ़िल की डिग्री पूरी की हैं. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय आर्थिक विधि, अंतरराष्ट्रीय व्यापार विधि और प्रतिस्पर्धा विधि शामिल हैं.

सुश्री डेनकिला भूटिया, सहायक प्राध्यापक बीए, एलएलबी, एलएलएम हैं. उन्होने मई 2012 में विभाग में कार्यग्रहण किया. उन्होने बंगलौर विश्वविद्यालय से बीए. एलएलबी. डिग्री और नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी (एनएलएसआइयू), बंगलौर से कानून में स्नातकोत्तर डिग्री (एलएलएम) प्राप्त की. वे नई दिल्ली में एक लॉ फर्म से जुड़ी थीं और उन्हें जिला न्यायालय और सिक्किम उच्च न्यायालय में वकालत का अनुभव भी है. विश्वविद्यालय में शामिल होने से पहले वे सिक्किम गवर्नमेंट लॉ कॉलेज में सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्यरात थीं.

डॉ. निधि सक्सेना, सहायक प्राध्यापक बीएससी, एलएलएम, पीएचडी हैं. उन्होने जनवरी 2013 में विभाग में कार्यभार ग्रहण किया. उन्होने 2009 में बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ से एक वर्ष की छात्रवृत्ति के साथ "साइबर अपराध - इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी का दुरूपयोग - एक विधिक अध्ययन" शीर्षक विषय पर पीएचडी की है. प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय

पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित हुए हैं. उन्होने विविध विषयों पर आयोजित अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रत्यक्ष और आभासी दोनों रूपों में सफलतापूर्वक भाग लिया. वे इंडियन सोसाइटी ऑफ अंतरराष्ट्रीय लॉ, अल इंडियन लॉ टीचर्च कॉंग्रेस,न्यू दिल्ली और कई अन्य प्रतिष्ठित लॉ सोसाइटी के सदस्य हैं. उनके शोध के क्षेत्रों में उसकी साइबर विधि, व्यापार विधि और प्रशासनिक विधि शामिल हैं. सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यग्रहन करने से पहले वे निरमा विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के विधि संस्थान में सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्य कर रही थीं. वे मोदी प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान के अध्ययन बोर्ड के और शैक्षणिक परिषद, बीबीए विश्वविद्यालय, लखनऊ की सदस्य रहीं.

प्रकाशन

निधि सक्सेना. "मानव स्टेम सेल के सहयोग से जैव प्रौद्योगिकी आविष्कार के पेटेंट की परंपरागत-न्यायिक जांच", एलिक्सीर इंटरनेशनल लॉ, 55(2013)12973-12977.

संगोष्ठी / सम्मेलन

श्री वीर मयंक ने 22-23 मार्च 2013 को भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित और सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध / राजनीति विज्ञान विभाग, गंगटोक द्वारा"संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्य : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की गतिशीलता" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "जल संसाधन के सीमा पार प्रबंधन : अधिकार आधारित दृष्टिकोण से आवश्यकता आधारित दृष्टिकोण तक परिवर्तन की आवश्यकता" शीर्षक पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया. उन्होंने 2 -11 जनवरी 2013 को निरमा विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के विधि संस्थान में आईबीए-सीएलई के अध्यक्ष, नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटी और मेनन इंस्टीट्यूट ऑफ लीगल एडवोकेसी ट्रेनिंग द्वारा विधि में शिक्षण और शोध विषय पर विधि के युवा शिक्षकों के लिए आयोजित 10 दिवसीय परिचयात्मक पाठ्यक्रम में भाग लिया.

सुश्री डेनकिला भूटिया ने 30-31 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय के सामाजिक प्रणाली एवं मानव विज्ञान विभाग द्वारा "भारत में महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा" विषय पर आयोजि सम्मेलन में "भारत में घरेलू हिंसा के खिलाफ कानूनी सुरक्षा" शीर्षक पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया.

डॉ. निधि सक्सेना ने 26 -27 अप्रैल 2013 को बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के विधि अध्ययन विद्यापीठ में मानव अधिकार कानून, न्याय और शासन विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "इलेक्ट्रॉनिक शासन और सेवा : मानव अधिकारों के परिप्रेक्ष्य में एक मूल्यांकन" शीर्षक पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया.

विभाग की अन्य गतिविधियां

श्री जय कुमार, सुश्री बोबीता लामा और सुश्री श्रद्धा अधिकारी ने 23-26 सितम्बर 2012 को राजस्थान पंचवर्षीय लॉ कॉलेज, राजस्थान विश्वविद्यालय, राजस्थान द्वारा आयोजित द्वितीय रांका यूएफ़एलवाईसी मूट कोर्ट प्रतियोगिता में भाग लिया.

श्री हर्षवर्धन, सुश्री प्रीति शर्मा, श्री महेश गजमेर और सुश्री समरमित लेपचा ने 21-23 सितम्बर 2012 को राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय न्यायिक अकादमी, गुवाहाटी द्वारा आयोजित सुराना और सुराना मूट कोर्ट प्रतियोगिता में भाग लिया.

विभाग ने 7 मार्च, 2013 को "विवाह संस्था ने अपना आकर्षण खो दिया है" पर एक अंतःविश्वविद्यालय बहस प्रतियोगिता का आयोजन किया.

श्री जय कुमार, सुश्री सुनीता पंथ और सुश्री कविता लामा ने 22-24 मार्च 2013 को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ लीगल स्टडीज, दगापुर, सिलीगुड़ी द्वारा आयोजित न्यायमूर्ति ए.एम. भट्टाचार्य मेमोरियल ऑल इंडिया मूट कोर्ट प्रतियोगिता में भाग लिया.

विभाग के छात्रों ने निम्नलिखित संस्थाओं के साथ इंटर्नशिप की :

सिक्किम उच्च न्यायालय, सिक्किम

जिला न्यायालय, पूर्वी खासी हिल्स, मेघालय

शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायोग, नई दिल्ली

राष्ट्रीय महिला आयोग, नई दिल्ली

जिला न्यायालय, गया, बिहार

जिला न्यायालय, दार्जिलिंग

सद्भावना पशु आश्रय, दार्जिलिंग

अटार्नी जनरल, भूटान कार्यालय

वरिष्ठ अधिवक्ता, पटना उच्च न्यायालय

जिला न्यायालय, नामची, सिक्किम

बुमथांग जिला न्यायालय, बुमथांग, भूटान

भूटान उच्च न्यायालय, थिम्पू

शामाकानी लाम जिंगसेई, मेघालय

जीव विज्ञान विद्यापीठ
सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग

अध्यक्ष का नाम	: डॉ. हरे कृष्ण तिवारी
कार्यालय दूरभाष	: 03592-232085
मोबाइल नंबर	: 9734445746
ईमेल आईडी	: hktiwari_2005@rediffmail.com

संकाय सदस्य

प्रोफेसर ज्योति प्रकाश तामंग उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय से एमएससी (स्वर्ण पदक), पीएच.डी. और जापान और जर्मनी से पोस्ट डॉक्टरेट हैं. उन्होंने मार्च 2012 में प्राध्यापक के रूप में विभाग में कार्यभार ग्रहण किया. उनको भारत, अमेरिका और जापान से कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं. वे कृषि विज्ञान राष्ट्रीय अकादमी, भारत के सूक्ष्म जीव वैज्ञानिक एसोसिएशन और भारत के बायोटेक रिसर्च सोसायटी के अध्येता भी हैं. वे भारत के हिमालयी क्षेत्रों के किण्वित खाद्य और पेय पदार्थों पर सूक्ष्म जीव विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी में 27 वर्षों से अधिक शोध कार्य से जुड़ें हुए है, उन्होंने डीबीटी, डीइएस, यूजीसी और अन्य एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित कई परियोजनाओं को पूरा किया हैं. उनके मार्गदर्शन में 7 छात्रों ने पीएचडी की हैं. वे भारत और विदेशों के विभिन्न वैज्ञानिक और शैक्षिक समितियों के सदस्य है.प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में उनके सौ से अधिक उच्च प्रभाव वाले लेख प्रकाशित हुए हैं. वे यूएसए के सीआरसी प्रेस से प्रकाशित कई पुस्तकों के लेखक है और प्रतिष्ठित प्रकाशकों की पुस्तकों के अध्याय भी लिखे हैं. उनके रुचिगत शोध के व्यापक क्षेत्र जातीय किण्वित खाद्य और पेय पदार्थों से संबंधित खाद्य सूक्ष्म जीव विज्ञान है.

डॉ. हरे कृष्ण तिवारी ने अपनी पीएचडी 2006 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान संस्थान से औषधि सूक्ष्म जीव विज्ञान में पूरी की है. उनकी पीएचडीके शोध प्रबंध एंटीबायोटिक प्रतिरोध के विशेष संदर्भ में स्टाफीलोकोकस औरियस के जीनरूपी और लक्षण

प्ररूपी विशिष्टताओं पर है. उन्होंने "जैव कीटनाशक के रूप में बेसिलस थर्निजेन्सिस की मच्छरों के प्रभाव "पर शोध कार्य के दौरान 1997 में डॉ. आरएमएल अवध विश्वविद्यालय से सूक्ष्म जीव विज्ञान में स्नातकोत्तर किया. शिक्षण और अनुसंधान में उनका 14 वर्षों से अधिक का अनुभव रहा है. डॉ. तिवारी ने मार्च 2012 में सूक्ष्म जीव विज्ञान के सह प्राध्यापक के रूप में सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया. इससे पहले वे मणिपाल चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय, पोखरा नेपाल में सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग में सह प्राध्यापक के रूप में कार्यरत थे. उन्होंने प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में कई मूल लेख प्रकाशित किए और एक पुस्तक का अध्याय लिखा हैं. उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों में विभिन्न लेख प्रस्तुत किए और विभिन्न वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्राप्त किए हैं. उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में चिकित्सा सूक्ष्म जीव विज्ञान, विशेष रूप से रोगजनन और रोगाणु जैसे एमआरएसए, एमडीआर, टीबी, आंतों के रोगाणु और एचआईवी के दावा प्रतिरोध तंत्र शामिल हैं.

डॉ. बिमला सिंह ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के जीव विज्ञान विद्यापीठ से पीएचडी प्राप्त की हैं. उनके वर्तमान शोध के क्षेत्रों में सिक्किम के हर्बल पौधों के रोगाणुरोधी और एंटीऑक्सीडेंट गुणों का अध्ययन शामिल है. उनके अध्यापन की रुचि जीवाणु विज्ञान, पर्यावरण सूक्ष्म जीव विज्ञान और नैदानिक सूक्ष्मजीव विज्ञान में हैं. उनके शोध पत्र समकालीन समीक्षा की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं.

डॉ. बुद्धिमान तामंग ने उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय (एनबीयू) से पीएच.डी. की है . उनके शोध के क्षेत्र में लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया और कार्यात्मक खाद्य पदार्थ हैं और उनकी शिक्षण की रुचि खाद्य सूक्ष्म जीव विज्ञान और सूक्ष्म जैविक जैव रसायन में हैं. उन्होंने समकालीन समीक्षा की अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित किए है.

डॉ. नागेन्द्र ठाकुर ने लुडविग मैक्सीमिलियन विश्वविद्यालय, जर्मनी से पीएचडी की है और लुइसियाना राज्य विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य विज्ञान केंद्र,यूएसए में दाद विषाणु विज्ञान के क्षेत्र में 3 साल के लिए पोस्ट डॉक्टरल फैलो के रूप में कार्य किया था. उन्होने कई अंतरराष्ट्रीय प्रयोगशालाओं जैसे दक्षिण कोरिया के केएआईएसटी, हांगकांग के एचकेयूएसटी और डेनमार्क के एसडीयू में कार्य किया हैं. उनके शोध के क्षेत्रों में विषाणु विज्ञान और एक्स्ट्रेमोफिलीस शामिल हैं. उनकी शिक्षण रुचि के क्षेत्रों में आण्विक विषाणु विज्ञान, आणविक जीव विज्ञान और प्रतिरक्षी विज्ञान शामिल हैं.उन्होंने अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में अपने शोध पत्र प्रकाशित किया है और दो अंतरराष्ट्रीय पेटेंट फ़ाइल किए हैं.

प्रकाशन

योजेन एच. और तामंङ, जेपी (2013). "अनाज आधारित पारंपरिक प्रक्रिया से बना एक लोकप्रिय किण्वित भोजन 'सेलरोटी' का अनुकूलन", जर्नल ऑफ साईंटिफ़िक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च 72 :43-47 (प्रभावी तत्व : 0.587)

घिमिरे, बीके, तामंङ, जेपी, यू, सी., वाई, जंग, एसजे, और चुंग, आईएम (2012). बेतुला एलनोइड्स बूच द्वार "एंटीऑक्सिडेंट, रोगाणुरोधी गतिविधि और अ-ग्लुकोसिडेस गतिविधि के निषेश द्वारा छाल निकालना और पोलिफेनोलिक योगिकों के एकत्रीकरण के साथ उसका संबंध" इम्यूनोफार्माकॉलॉजी एंड इम्यूनोटोक्सिकोलॉजी डोई: 10.3109/08923973.2012.661739.(प्रभावी तत्व : 1.829).

तामंग, जेपी, तामंग, एन, थापा, एस, दीवान, एस, तामंग, बी.एम., योंजेन, एच., राय, ए.के., छेत्री, आर, चक्रवर्ती, जे और खरेल, एन (2012). "सूक्ष्मजीवों और जातीय किण्वित खाद्य पदार्थों के पोषण के महत्व तथा पूर्वोत्तर भारत के मादक पेय पदार्थ". इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेड़ीथनल नॉलेज, 11 (1): 7-25.(प्रभावी तत्व : 0.399).

तामंग, जेपी (2012). "प्राचीन खाद्य संस्कृति: इतिहास और जातीयता. पर्वतीय क्षेत्रों में वैश्वीकरण और सांस्कृतिक प्रयोग : गतिशीलता, आयाम और निहितार्थ" (सं. लामा, एम. पी.) में. सिक्किम विश्वविद्यालय प्रेस और इंडस प्रकाशन कंपनी, नई दिल्ली, पृष्ठ 43-63.

तामंग, जेपी (2012). अध्याय 4. "पादप आधारित किण्वित खाद्य पदार्थ और एशिया के पेय पदार्थ, पादप आधारित किण्वित खाद्य पदार्थ और पेय प्रौद्योगिकी की हैंडबूक द्वितीय संस्करण" (सं. वाई. एच. हुई और ई. ऑज़गॉल एव्रनुज) सीआरसी प्रेस, टेलर और फ्रांसिस ग्रुप, न्यूयॉर्क, पृष्ठ 49-90.प्रिंट आईएसबीएन 978-1-4398-4904-0; ई-बूक आईएसबीएन : 978-1-4398-7069-

3: डीओआई : 10.1201/b12055-6.

तामंग, जेपी (2012). पूर्वोत्तर भारत में जातीय किण्वित खाद्य पदार्थों के साझा करने वाले मॉडल का प्रवेश और लाभ. पूर्वोत्तर भारत के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी (एड: मूर्ति, यूएसएन) एसोसिएट प्रकाशन कंपनी, नई दिल्ली, पृष्ठ .130-155.

भट्ट, डॉ, गोखले, एस, अंसारी, एम.टी., तिवारी, एच, गौर, ए, माथुरिया, जे. पी., घोष, ए.एन. "जोनोकोकल संक्रमण:"पश्चिमी नेपाल में नेइसेरिया गोनोर्होय के प्रतिसूक्ष्मजीवी संवेदनशीलता की रुझान" नेपाल जर्नल ऑफ मेडिकल साइंसेज, 2012 ; 1 (2): 74 8.

अनिरुद्ध भट्टाचार्य, एके चंद्रा, एच तिवारी, टाबरक मलिक. "पूर्वी उत्तर प्रदेश, भारत के के गण्डमाला स्थानिक उप हिमालय के तराई क्षेत्र के स्कूली बच्चों में सीरम थायराइड हार्मोन और थायरोट्रॉपिन के स्तर" करेंट पेडियेटर रेस, 2013, 17 (1): 27-30.

अभिषेक गौड़, विपिन चपागाइन, धर्मराज भट्ट, मो. तसवर अंसारी, शिशिर गोखले, हरे कृष्ण तिवारी "पश्चिमी नेपाल में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा इस्तेमाल किए गए मोबाइल फोन में रोगजनन वैक्टेरिया का फैलाव : नसोकॉमियल संक्रमण का एक संभावित खतरा". इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ऑक्यूपेशनल सेफ़्टी एंड हैल्थ, वॉल्यूम 3, स. 1, (2013) :5-10.

पंत, कश्मीर सिंह, बी और ठाकुर, एन (2012). शिलाजीत :कैंसर के लिए एक रामवाण स्वरूप ह्यूमिक पदार्थ. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टॉक्सिकोलॉजी एंड फर्माकोलॉजीकल रिसर्च, 4(2) : 17-25. (प्रभावी तत्व :1.1)

राजापुरे, वी. ए, टिर्वा आर, पौड्याल, एच. और ठाकुर, एन (2013). सिक्किम में यौन संचारित रोगों (एसटीडी) से संबन्धित प्रचलित और जोखिम कारक जर्नल ऑफ कम्यूनिटी हैल्थ 38 : (1) 156-162.

सायक दास, मिंगमा थेंडु शेरपा, स्वाति सचदेवा और नागेन्द्र ठाकुर. (2012). "सिक्किम की हॉट स्प्रिंग्स :(ताटोपानी):धर्म, आस्था, पारंपरिक विश्वास और पर्यटन को समन्वित करनेवाला एक सामाजिक चिकित्सा संकट" एशियन अकैडमिक रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल साइंसेस एंड ह्यूमनेटीज़, 1 (4) :80-93.

टिर्वा, आर,के., राजापुरे, वी. ए., पौड्याल, एच. और ठाकुर एन (2012). "प्रसार और जोखिम कारक सिक्किम में आंतों में संक्रमण के साथ जुड़े" .जर्नल ऑफ कॉम्यूनिटी मैडिसिन एंड हैल्थ एडुकेशन, वॉल्यूम 2 (7) : डीओआई : 10.4172/2161-711.1000174

घटानी, के., ठाकुर, एन और तामङ बी. (2012). "प्रोबायोटिक लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया कम करने के लिए संभावित कोलेस्ट्रॉल का पृथकीकरण और नाम निर्धारण". इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रिकल्चर एंड फूड साइन्स टेक्नालॉजी, वॉल्यूम 3(2) :118-123.

दास, एस, शेरपा, एम. टी., और ठाकुर, एन (2012). "सिक्किम के ताटोपानी - पूर्वोत्तर भारत में सामुदायिक स्वास्थ्य के लिए एक बैलेनोथेरोप्यूटिक संभावना". इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रिकल्चर एंड फूड साइन्स टेक्नालॉजी, वॉल्यूम 3(2) :149-152

शा, एस.पी., तामङ बी, ठाकुर, एन और तामङ, जेपी (2012). हारिया, पश्चिम बंगाल का एक पारंपरिक चावल किण्वित मादक पेय. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रिकल्चर एंड फूड साइन्स टेक्नालॉजी, वॉल्यूम 3(2) :157-160:

शेरपा, एम., दास, एस और ठाकुर, एन (2013). सिक्किम के गरम पानी के झरने का भौतिक विश्लेषण : पोलोक ताटोपानी, बोरोंग ताटोपानी और रेशी ताटोपानी. रिसेंट रिसर्च इन साइन्स एंड टेक्नालॉजी, वॉल्यूम 5 (1): 63-67.

शा, एस. पी., तामङ, जेपी और ठाकुर एन (2013). पश्चिम बंगाल के किण्वित मादक पेय हरिया के उत्पादन के लिए एक पारंपरिक चावल आधारित स्टार्टर संस्कृति. इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल, वॉल्यूम 3 (5): 45-52.

शा, एस. पी., तामङ, जेपी और ठाकुर एन (2013). "पश्चिम बंगाल का एक पारंपरिक चावल किण्वित मादक पेय हरिया के सूक्ष्मजीववैज्ञानिक अध्ययन" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट, वॉल्यूम 3 (5): 53-59.

गजमेर, वी.आर., नज़ारा, आई. एन., हेमंत, पी. और ठाकुर, एन (2013). "सिक्किम में लीवर के रोगों का प्रसार और उससे संबंधित जोखिम कारक". द जर्नल ऑफ पब्लिक हैल्थ फोटॉन, वॉल्यूम 115 : 140-146.

संगोष्ठी / सम्मेलन

डॉ. एच.के. तिवारी ने 30 सितंबर से 5 अक्टूबर 2012 को मणिपाल चिकित्सा विज्ञान कॉलेज के डाटा प्रबंधन प्रयोगशाला, पोखरा,

नेपाल में "प्रयोगशाला आधारित रोगाणुरोधी प्रतिरोध की निगरानी और डबल्यूएचओएनईटी (WHONET) का प्रयोग" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया.

संकाय विकास कार्यक्रम

डॉ. बिमला सिंह ने 4 से 29 मार्च, 2013 को अकादमिक स्टाफ कॉलेज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित और यूजीसी द्वार प्रायोजित 84 वां अभिमुखी पाठ्यक्रम में भाग लिया.

पेटेंट / पुरस्कार / सम्मान / मान्यता

प्रोफेसर डॉ. ज्योति प्रकाश तामङ को पेटेंट कार्यालय, भारत सरकार, कोलकाता द्वारा पेटेंट स. 253460, अनुदान की तिथि 24.07.2012, पेटेंट आवेदन स. 100/KOL/2003 के अनुसार 20 वर्ष के लिए पेटेंट प्रदान किया गया है. उनको 2013 में राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (एफ़आईएनएएएस) की फैलोशिप से सम्मानित किया गया था. उनको लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया सोसायटी, सिंगापुर के एशियाई संघ के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी बोर्ड के सदस्य के रूप निर्वाचित किया गया.

एमफिल / मार्गदर्शन

1. सुश्री प्रमिला कोइराला द्वारा सिक्किम के कुछ हर्बल पौधों की रोगाणुरोधी और एंटीऑक्सीडेंट गतिविधियों पर अध्ययन. पर्यवेक्षक: डॉ. बिमला सिंह.
2. श्री शंकर प्रसाद शा द्वारा पश्चिम बंगाल का एक पारंपरिक चावल किण्वित मादक पेय हरिया के सूक्ष्मजीववैज्ञानिक अध्ययन.पर्यवेक्षक: डॉ. नागेन्द्र ठाकुर.
3. सुश्री कीर्ति घटानी द्वारा प्रोबायोटिक लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया का उपयोग करते हुए कॉलेस्ट्रोल के पृथकीकरण और नाम निर्धारण पर्यवेक्षक: डॉ. बी.एम. तामङ.

आमंत्रण पर व्याख्यान प्रदान

प्रोफेसर डॉ. ज्योति प्रकाश तामङ ने 3 दिनों के लिए (27-30 जनवरी 2013) इंडोनेशिया के पद्जाजरण विश्वविद्यालय, बांडुंग के पशुपालन विभाग में दुनिया के पशु आधारित किण्वित खाद्य पदार्थों की जैव प्रौद्योगिकी पर अतिथि व्याख्यान दिया.

सहयोग

विभाग ने राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा के साथ सहयोग किया है.

प्रबंधन और वाणिज्य विद्यापीठ
प्रबंधन और वाणिज्य विभाग

विभागाध्यक्ष : डॉ. ए.एन. शंकर, सह प्राध्यापक
कार्यालय दूरभाष : 03592-251968
मोबाइल नंबर : 9434510004 और 8293829270

संकाय सदस्य

डॉ. ए.एन. शंकर, सह प्राध्यापक, सीएमडी पीजी कॉलेज, गुरु घसीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर से एम कॉम (1997) और नेहु, शिलांग के वाणिज्य विभाग से निगमित सामाजिक दायित्व (2009) पर पीएचडी हैं. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में लेखा और वित्त, निवेश प्रबंधन, ई वाणिज्य, व्यवसाय और शोध में कंप्यूटर अनुप्रयोग शामिल हैं.

डॉ. शैलेंद्र कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, एमकॉम, एमबीए, पीएचडी (व्यष्टि वित्त) है. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में वित्तीय प्रबंधन, विपणन और निवेश प्रबंधन शामिल हैं.

डॉ. प्रदीप कुमार दास, सहायक प्राध्यापक, एमए (अर्थशास्त्र), कार्मिक प्रबंधन और औद्योगिक संबंध में स्नातकोत्तर, पीएचडी (मानव संसाधन प्रबंधन) है. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में संगठनात्मक व्यवहार, मानव संसाधन प्रबंधन और औद्योगिक संबंध शामिल हैं.

श्री विवेक तामङ, सहायक प्राध्यापक एम. कॉम है और उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में लेखा और वित्त शामिल हैं.

विभाग की गतिविधियां

बाजारों के लिए ज्ञान सहित मल्टिपल कमोडिटी एक्सचेंज स्टॉक एक्सचेंज (एमसीएक्स), मुंबई की एक यूनिट के साथ शैक्षणिक तालमेल के लिए सहमति ज्ञापन में सक्रिय पहल.

उद्योग की अकादमी इंटरफेस के रूप में प्रबंधन और वाणिज्य के छात्रों के लिए आयोजित चार आमंत्रित वार्ता में भारतीय रिजर्व बैंक से दो वक्ता, राजस्व और व्यय विभाग, भारत सरकार से एक और नाबार्ड, गंगटोक से एक वक्ता को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया था.

प्रकाशन

शैलेंद्र कुमार सिंह. "उभरते भारतीय ग्रामीण बाजार में विपणन प्रतिमान". उषा किरण राय, आलोक कुमार राय, और एस के सिंह द्वारा संपादित उभरते विपणन मानदंड में,.(आईएसबीएन -978-93-82062-73-8), एक्सेल प्रकाशन, नई दिल्ली.

शैलेंद्र कुमार सिंह. "पश्चिमी और भारतीय कार्य संस्कृति पर आर्थिक मंदी का प्रभाव", आत्मबोध, (आईएसएसएन . 0972-1398) वॉल्यूम. 8, स. 2, ऑटम 2013, पृष्ठ 29-31.

सगोष्ठी / सम्मेलन

डॉ. शैलेंद्र कुमार सिंह ने 1-2 नवंबर 2012 को आईआईपीए (भारतीय लोक प्रशासन संस्थान) द्वारा "ग्रामीण उपभोक्ताओं का सशक्तीकरण : अवसर, चुनौतियां और रणनीतियां" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में "भारत के आधुनिक ग्रामीण

उपभोक्ताओं के स्वाद और मांग के बदलते संदर्भ में विपणन रणनीति" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम केंद्रीय विश्वविद्यालय, गंगटोक द्वारा "संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्य : पूर्वोत्तर भारत की गतिशीलता" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "सीमा व्यापार और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों : एक गहन विश्लेषण" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 4-5 दिसंबर 2012 कोबनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में "उभरती अर्थव्यवस्था में विपणन मानदंड" विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "उभरते भारतीय ग्रामीण बाजार में विपणन मानदंड" शीर्षक किया. उन्होने 6-7 मार्च 2013 को जामिया मिलिया इसलामिया में जलवायु परिवर्तन पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "जलवायु परिवर्तन और महिला" शीर्षक पर एक पोस्टर प्रस्तुत क्या.

डॉ. प्रदीप कुमार दास ने 15-16 मार्च 2013 को इग्नू, गंगटोक में "ओडीएल के माध्यम से उच्च शिक्षा को बढ़ाने के लिए इग्नू की भूमिका" पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया और "सिक्किम में शिक्षा: मुक्त और दूरस्थ शिक्षा" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग और आईसीएसएसआर, गंगटोक द्वारा "संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों" पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया और "भारत और म्यांमार सीमा व्यापार: चुनौतियां और संभावनाएं" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 30-31 मार्च 2013 को सामाजिक प्रणाली और मानव विज्ञान विभाग द्वारा "भारत में महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा" पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया और "भारत में महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा: कारण, परिणाम और उपचार" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

संकाय विकास कार्यक्रम

डॉ. शैलेंद्र कुमार सिंह ने 4 सितंबर 2012 को गंगटोक, सिक्किम में भारत सरकार-संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (भारत सरकार, यूएनडीपी) द्वारा सिक्किम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, भूमि राजस्व और आपदा प्रबंधन विभाग के सहयोग से यूएसएड "जलवायु *जोखिम प्रबंधन कार्यक्रम (सीआरएम)" विषय पर आयोजित अभिमुखी सह कार्यशाला में भाग लिया.*

एमफिल / पीएचडी.डी मार्गदर्शन

सुश्री बरेंड़ा फ़नाइ को सितम्बर 2012 में मिजोरम विश्वविद्यालय से डॉ. ए.एन. शंकर और डॉ. भारतेंदु सिंह के सह मार्गदर्शन में "भारत में कमोडिटी डेरिवेटिव्स पर शेयर बाजार के उतार चढ़ाव का प्रभाव" शीर्षक शोध प्रबंध के लिए एम. फिल डिग्री प्रदान किया गया.

मीडिया, संचार और सूचना विज्ञान विद्यापीठ
पत्रकारिता और जनसंचार विभाग

अध्यक्ष का नाम : डॉ. वी. कृष्ण अनंत, सह प्राध्यापक
कार्यालय दूरभाष : 03592-251702
मोबाइल नं : +91-9046711160

संकाय सदस्य

डॉ. वी. कृष्ण अनंत एमए,एमफिल और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से इतिहास में पीएचडी है उनका डॉक्टरेट अध्ययन मद्रास प्रेसीडेंसी में श्रमिक वर्ग और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर था.उन्होने डॉ. अंबेडकर लॉ यूनिवर्सिटी, तमिलनाडु से विधि में स्नातक की डिग्री भी ली हैं. उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में राजनीतिक पत्रकारिता, मीडिया कानून और नैतिकता, वैश्वीकरण और

समाचार विश्लेषण के संदर्भ में मीडिया शामिल हैं. वे तीन पुस्तकों का लेखक है. उन्होने अखबारों और पत्रिकाओं में राजनीतिक विकास और संवैधानिक मुद्दों पर काफी कुछ लिखा है. उन्होंने इन विषयों पर देश के विभिन्न हिस्सों में व्याख्यान भी दिए हैं.

मनोज कुमार दास ने असम विश्वविद्यालय, सिलचर से जनसंचार में स्नातकोत्तर और एम. फिल डिग्री हासिल किया है. उनकी डॉक्टरेट का शोध प्रबंध संस्कृति,मीडिया और प्रशासन केंद्र, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली में 'दूरदर्शित धर्म का मानव वैज्ञानिक अध्ययन" पर चल रहा है. उनकी रुचि के क्षेत्रों में मीडिया मानवविज्ञान, टेलीविजन अध्ययन, विकास समर्थित संचार (डीएससी), मीडिया नीति और स्वदेशी संचार शामिल हैं.

सुश्री जैस्मीन यिमचुंगर ने हैदराबाद विश्वविद्यालय से संचार में अपनी मास्टर डिग्री पूरी की. वे वर्तमान हैदराबाद विश्वविद्यालय के संचार विभाग से "नगालैंड में टेलीविजन और युवा संस्कृति" शीर्षक शोधप्रबंध पर पीएचडी कर रही हैं. उनकी रुचि के क्षेत्रों में पहचान और अभ्यावेदन, दृश्य समाजशास्त्र, स्वदेशी सामाजिक आंदोलनों, सांस्कृतिक अध्ययन, दर्शक अध्ययन, दूरदर्शन और नई मीडिया अध्ययन शामिल हैं.

प्रकाशन

वी. कृष्णा अनंत (2012). इंडियाअरसियाल वरलारू - सुदंथराहुकू पिरागु (तमिल में) न्यू होरीजोन मीडिया प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई, आईएसबीएन: 978-81-8493-764-0.

वी. कृष्ण अनंत (2012). कोलगेट : एक विषम बहस. इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली,अक्टूबर, 2012, वॉल्यूम XLVII, स.40, पृष्ठ 22-25.

संगोष्ठी / सम्मेलन

भूटिया, उगेन और दीपमोनी गोगोई (एमफिल स्कॉलर) ने 30 जनवरी 2012 को तेज़पुर विश्वविद्यालय में पूर्वोत्तर भारत में जातीय पहचान और जातीय संघर्ष के मुद्दे पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "हाइडल पावर प्रोजेक्ट के खिलाफ डीजोंगु के लेपचाओं के अभिकथन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

डॉ. वी. कृष्ण अनंत ने 30-31 मार्च 2013 को गंगटोक में भारतीय विश्वविद्यालय संघ के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा "भारत में महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा" विषय पर आयोजित पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में "बंकिम चंद्र चटर्जी के आनंद मठ में नारी : समकालीन प्रवचनों के लिए कुछ निहितार्थ" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

संकाय विकास कार्यक्रम

मनोज कुमार दास ने 15.2.13 से 8.3.13 तक एकेडमिक स्टाफ कॉलेज, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली द्वारा, "मीडिया अध्ययन और शासन" पर आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया.

आमंत्रण पर व्याख्यान प्रदान

डॉ. वी. कृष्णा अनंत ने 23 मई 2012 को सिक्किम विश्वविद्यालय के विधि और न्यायशास्त्र अध्ययन विभाग, गंगटोक में आयोजित जस्टिस एचआर खन्ना मेमोरियल संगोष्ठी में "संसदीय संप्रभुता बनाम न्यायिक वर्चस्व : बुनियादी संरचना के सिद्धांत पर विचार" व्याख्यान दिया. उन्होंने 17 अगस्त 2012 को एशियाई पत्रकारिता कॉलेज, चेन्नई में 'भारतीय राष्ट्रवाद और मीडिया' विषय पर व्याख्यान दिया. उन्होंने 6 अक्टूबर 2012 को उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय, सिलीगुड़ी के अकादमिक स्टाफ कालेज में "उदारीकरण और भारत में मीडिया " पर भाषण दिया. उन्होने 18 दिसंबर 2012 को भारतीदासन विश्वविद्यालय, तिरुचिरापल्ली के अकादमिक

स्टाफ कॉलेज में "मानवाधिकार और मीडिया : वैश्वीकरण के युग में अनुभव" विषय पर और 28 जनवरी 2013 को पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुचेरी के मीडिया और संचार विभाग में "आईटी अधिनियम की धारा 66 ए के विशेष संदर्भ में मीडिया नैतिकता और स्वतंत्रता" पर व्याख्यान दिया.

दास, मनोज कुमार ने 1-2 नवंबर 2012 को राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय में संस्कृति, मीडिया और प्रशासन केंद्र (सीसीएमजी) जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली और राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से शिक्षण मीडिया, सार्वजनिक नीति और विधि पर आयोजित राष्ट्रीय संकाय कार्यशाला में "मीडिया के छात्रों के लिए शिक्षण मीडिया नीति : कुछ अनुभव, कुछ प्रतिबिंब" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

वर्ष के दौरान स्थापित नए उपकरण

(I) प्रकाश उपकरण

1. बेबी लाइट्स
2. मल्टी 10
3. पलाइट स्टैंड

कटर स्टैंड

मल्टी मीडिया लैब

- कंप्यूटर टर्मिनल और कोरल ड्रॉ तथा एडोब सहित एक सर्वर

शांति, प्रतिद्वंद्व और मानव सुरक्षा अध्ययन विद्यापीठ
शांति और प्रतिद्वंद्व अध्ययन और प्रबंधन विभाग

अध्यक्ष का नाम : डॉ. नवल के. पासवान
कार्यालय दूरभाष : +91-3592-251441
मोबाइल नंबर :9775996279
ईमेल : nkpaswan@gmail.com

संकाय सदस्य

डॉ. नवल के. पासवान, सह प्राध्यापक, एम.ए., एम. फिल, पीएच.डी. है. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय संबंध और अर्थशास्त्र शामिल हैं.उनकी रुचि के क्षेत्रों में अनुसंधान क्रियाविधि, प्राकृतिक संसाधन प्रतिद्वंड और प्रबंधन, संघर्ष और सहयोग, सीमा पार प्रवासन, शरणार्थी और संघर्ष, पूर्वोत्तर भारत के सामरिक और विकास के मुद्दे शामिल हैं.

डॉ. सेल्विन पॉल एम.ए., एम. फिल, पीएच.डी. है . उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय संबंध और सुरक्षा अध्ययन हैं और उनकी रुचि के क्षेत्रों में शांति और प्रतिद्वंद्व सिद्धांत, पारंपरिक और गैर पारंपरिक सुरक्षा प्रवचन, धर्म,प्रतिद्वंड और शांति निर्माण, पर्यावरण सुरक्षा और सतत विकास, पारंपरिक ज्ञान और बौद्धिक संपदा अधिकार शामिल हैं.

डॉ. संघमित्रा चौधरी एम.ए., एम. फिल, पीएच.डी. है. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में मानवाधिकार' शांति और प्रतिद्वंद्व हैं. उनकी रुचि के क्षेत्रों में महिला और शांति निर्माण, अहिंसा पर गांधीवादी परिप्रेक्ष्य, अंतरराष्ट्रीय संगठन और प्रतिद्वंद्व संकल्प, प्रवास, शरणार्थी औरपातिद्वंद्व, प्रतिद्वंद्व प्रतिक्रिया तंत्र और तकनीक शामिल हैं.

श्री बिधान गोले एम.ए., एम.फिल है. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र राजनीतिक सिद्धांत और जातीय राष्ट्रवाद हैं और उनकी रुचि के क्षेत्रों में विकास, शांति और सुरक्षा, हिंसा को सम्झना, उग्रवाद, सामाजिक आंदोलन और आतंकवाद, आतंकवाद के परिप्रेक्ष्य, पूर्वोत्तर भारत में प्रतिद्वंद्व और शांति शामिल हैं.

प्रकाशन

कादिरोव एस. मुकादिरोविच और पासवान, नवल के. (2013), *आंतरिक दहन इंजन, एपीएच प्रकाशन निगम, नई दिल्ली (आईएसबीएन:978-93-313-1937-1, XVII + 459 पृष्ठ).*

पासवान, नवल के. मध्य एशिया में निवेश क्षमता और सहयोग: संभावनाएँ और चुनौतियां, *इंडिया क्वार्टरली*, जनवरी से मार्च 2013, 69 (1) :13-33, सेज पब्लिकेशन.

पॉल, सेल्विन, "शांति और समृद्धि के लिए भारत और पाकिस्तान के बीच क्रिकेट कूटनीति पिचिंग", सितम्बर 2012, http://www.diplomatist.com/dipo9th2012/story_002.htm,

चौधरी, संघमित्रा, "सभी के लिए सशक्तिकरण या कुछ के लिए अधिकारिता?" सिक्किम के आसपास स्थानीय हाट में महिला विक्रेताओं का एक केस अध्ययन". एसके सिंह (संपा.), "एकीकृत विपणन संचार : एक रिसर्च एजेंडा", ग्लोबल पब्लिशिंग हाउस, गुवाहाटी, 2012, (आईएसबीएन स. 978-93-81563-24-3).

हिमालयन जर्नल ऑफ सोश्ल साइन्सेस, वॉल्यूम 2, अंक स. 2, अक्टूबर 2012; पृष्ठ 32-38 (आईएसएसएन 2231-6639)

संगोष्ठी / सम्मेलन

नवल के. पासवान ने 29 मार्च 2012 को वैश्विक मानव जाति विज्ञान और नृविज्ञान संस्थान (आईजीईए), चीन के मिंजु विश्वविद्यालय (एमयूसी), बीजिंग, चीन में "दक्षिण एशिया से प्रवासियों की अवैध प्रवासन और तस्करी : भारत से एक केस स्टडी" शीर्षक पर व्याख्यान और प्रस्तुति दी. वे 11 मार्च 2013 को गंगटोक, सिक्किम में ब्रिटिश उप उच्चायुक्त (पूर्वी भारत, कोलकाता), श्री संजय वादवाणी और सुश्री सुहानी अरोड़ा (राजनीतिक आर्थिक सलाहकार) और यूनाइटेड किंगडम के प्रतिनिधियों द्वारा "सिक्किम के आर्थिक विकास की गतिशीलता" विषय पर आयोजित गोलमेज बैठक में एक चर्चाविद के रूप में उपस्थित थे. उन्होंने 3-11 मार्च 2013 के दौरान सिक्किम विश्वविद्यालय के सम्मेलन कक्ष, गंगटोक, सिक्किम में आईसीएसएसआर के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध और राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित दस दिवसीय "राष्ट्रीय स्तर की अनुसंधान क्रियाविधि कार्यशाला" में (I) एक "शोध रिपोर्ट लेखन" और (II) "प्रश्नावली और रिपोर्ट लेखन" पर व्याख्यान और प्रस्तुति दी. उन्होंने 30-31 जुलाई 2012 को अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंध भारतीय परिषद और मैकआर्थर फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच पारगमन व्यापार समझौते: स्थिति, चुनौतियां और निहितार्थ" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

पॉल सेल्विन ने (सुनीता राय के साथ संयुक्त रूप से) कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता के दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन विभाग द्वारा आयोजित एशियाई प्रशांत अध्ययन के लिए भारतीय संघ का छठा द्विवार्षिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "महिलाओं के संपत्ति के उत्तराधिकार के अधिकार में लिंग असमानता : सिक्किम में विवाहित महिलाओं पर एक केस स्टडी" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

संघमित्रा चौधरी ने 1-2 नवंबर 2012 को आईआईपीए (भारतीय लोक प्रशासन संस्थान) द्वारा "ग्रामीण उपभोक्ताओं का सशक्तिकरण : अवसर, चुनौतियां और रणनीतियाँ" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में "भारत के आधुनिक ग्रामीण उपभोक्ताओं की स्वाद और मांग के संदर्भ में विपणन रणनीति" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 4-11 नवंबर 2012 को तवीरा, पुर्तगाल, यूरोप में आयोजित इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ परम्यूलॉजी में "लोककथाओं के माध्यम से लोकोक्तियों को सिखना : असम से अध्ययन" पर एक महत्वपूर्ण नोट दिया. उन्होने 22-23 नवम्बर 2012 को गंगटोक, सिक्किम में आईटी विभाग द्वारा आयोजित सीकिटेक्स राष्ट्रीय संगोष्ठी और प्रदर्शनी में "युवा और इंटरनेट" विषयक सत्र की अध्यक्षता की. उन्होने (संयुक्त रूप से जयंत तामुली के साथ) 7-8 मार्च 2013 को जेएमआई, नई दिल्ली में "पूर्वी हिमालय : जलवायु परिवर्तन, आजीविका और गरीबी" विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "असम से साहित्यिक ग्रंथों के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों में लिंग और संघर्ष को समझना" शीर्षक एक पेपर प्रस्तुत किया.उन्होने 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्य : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की गतिशीलता" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "सीमा व्यापार और पूर्वोत्तर राज्य : एक गहन विश्लेषण" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 30-31 मार्च 2013 को "भारत में महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "पूर्वोत्तर क्षेत्र में संघर्ष और क्षति पर एक अध्ययन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

बिधान गोले ने 20 मार्च 2013 को हिमालय अध्ययन केंद्र, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय में "हिमालय और इसके निकटस्थ क्षेत्र के संदर्भ में दक्षिण एशिया में सीमा पार प्रवासन, मानव सुरक्षा और पर्यावरणवाद" पर यूजीसी प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "पूर्वोत्तर भारत के प्रतिभूतिकरण:इतिहास, पहचान और राष्ट्रीयता का प्रश्न" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 23 मार्च 2013 को इंटरनेशनल यूथ हॉस्टल, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली के भारतीय गोर्खा परिसंघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी परिषद के बैठक में आमंत्रण पर"भारत में गोरखा पहचान की जांच" शीर्षक पर एक व्याख्यान दिया.

पेटेंट / पुरस्कार / सम्मान / मान्यता

नवल के. पासवान को (मार्च-अप्रैल 2013) में "चीन और दक्षिण एशिया के बीच व्यापार क्षमता और निवेश सहयोग" पर कार्य करने के लिए दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान, सिचुआन विश्वविद्यालय, चेंग्दू, चीन में विजिटिंग फैलोशिप प्राप्त हुआ. उन्होने (मार्च *2013):* वह अपनी आगामी पुस्तक चीन-मध्य एशिया सीमा व्यापार और बुनियादी ढांचे के निर्माण: भारत के लिए निहितार्थ" शीर्षक पुस्तक को

पूरा करने के लिए भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) से यात्रा और रखरखाव अनुदान प्राप्त किया. उनको दक्षिण एशियाई अध्ययन की पत्रिका के संपादकीय बोर्ड के एक सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया. (http://escijournals.net/JSAS), ई *साइन्स जर्नल पब्लिशिंग*, पाकिस्तान (2013-15).

पॉल सेल्विन को एशियाई प्रशांत अध्ययन, कोलकाता, 2012 के लिए भारतीय संघ की सह सदस्यता से सम्मानित किया गया.

संघमित्रा चौधरी (2012 से) यूरोप के परम्यूलॉजी एसोसिएशन, पुर्तगाल की आजीवन सदस्य बनीं.

एमफिल / पीएचडी मार्गदर्शन

डिकी भूटिया को 20012 में डॉ. नवल के. पासवान के पर्यवेक्षण में "लैंगिक अंतर और मानव तस्करी: दार्जिलिंग जिले की एक केस स्टडी" पर एम. फिल की डिग्री प्रदान की गई.

बिट्टू सुब्बा को 2012 में डॉ. नवल के. पासवान के पर्यवेक्षण में "सिक्किम खाद्य सुरक्षा सम्झौता : स्यारि ब्लॉक में बीपीएल परिवारों की एक केस स्टडी" के लिए एमफ़िल की डिग्री प्रदान की गई.

सनीता राय को 2012 में डॉ. सेल्विन पॉल के पर्यवेक्षण में "सिक्किम में विवाहित महिलाओं के लिए संपत्ति कानून और इसके निहितार्थ" विषय पर एम. फिल की डिग्री प्रदान की गई.

जयंत माधव तामुली को 2012 में डॉ. संगमित्र चौधुरी के पर्यवेक्षण में "साहित्य के माध्यम से प्रतिदंड का अध्ययन : असम आंदोलन की एक केस स्टडी" विषय पर एम.फिल की डिग्री प्रदान की गई.

अश्वंत कटवाल को 2012 में श्री बिधान गोले के पर्यवेक्षण में "गोर्खालेंड संघर्ष : विश्लेषण और संकल्प का वैकल्पिक मॉडल" विषय पर एम.फिल की डिग्री प्रदान की गई.

छात्रों की शैक्षणिक गतिविधियां

अश्वन्त कटवाल(पीएचडी - द्वितीय सेमेस्टर) ने 3-4 मई 2013 को गुवाहाटी में एस. कुला महिला कॉलेज और आईसीएसएसआर द्वारा भारत के पूर्वोत्तर में संघर्ष परिवर्तन, शांति और वर्तमान के रुझान के संदर्भ में जातीय विभाजन" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "गोर्खालैंड प्रतिद्वंड : स्रोत और खतरे का अनुभव पर एक विश्लेषण" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने एल. मुहिन्द्रो सिंह (संपादित) "पूर्वोत्तर में संघर्ष परिवर्तन, शांति और जातीय विभाजन : वर्तमान के रुझान के संदर्भ में" में "गोर्खालैंड प्रतिद्वंड : स्रोत और खतरे के अनुभव पर एक विश्लेषण" शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया. कामाख्या पब्लिशिंग हाउस, गुवाहाटी, 2013 (आईएसबीएन 978-81-907756-1).

बिट्टू सुब्बा (पीएच.डी- द्वितीय सेमेस्टर) ने 2-11 मार्च 2013 को गंगटोक, सिक्किम में सिक्किम विश्वविद्यालय सम्मेलन कक्ष में आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध एवं राजनीति विभाग द्वारा आयोजित दस दिवसीय राष्ट्रीय स्तर की अनुसंधान क्रियाविधि कार्यशाला में भाग लिया. उन्होने 27 जनवरी से 4 फ़रवरी 2013 तक ओकेडीआईएससीडी, गुवाहाटी द्वारा सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान पद्धति" विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया. उन्होंने 16 नवंबर 2012 को बालिका स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चंडीगढ़ के अर्थनीति विभाग द्वारा "भारत में खाद्य सुरक्षा : मुद्दे और परिप्रेक्ष्य" विषय पर आयोजित तथा यूजीसी द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "सिक्किम के पहाड़ी राज्य में खाद्य सुरक्षा" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में "संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्य : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की गतिशीलता" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "सीमावर्ती राज्यों की दिशा में भारतीय विदेश नीति : सिक्किम 1947-75 की एक केस स्टडी" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

डिकी भूटिया (पीएचडी- द्वितीय सेमेस्टर) ने (संयुक्त रूप से सीनिल वर्मा के साथ) केप टाउन इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में "नस्ल लिंग और स्वयं : पूर्वोत्तर भारत का एक अध्ययन, 2012" पर आयोजित मनोविज्ञान के 30 वीं अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस के वैज्ञानिक कार्यक्रम में एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 2-11 मार्च 2013 को गंगटोक, सिक्किम में सिक्किम विश्वविद्यालय सम्मेलन कक्ष में आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध एवं राजनीति विभाग द्वारा आयोजित दस दिवसीय राष्ट्रीय स्तर की अनुसंधान क्रियाविधि कार्यशाला में भाग लिया.

जाफेट दारांगवन ने 2-11 मार्च 2013 को गंगटोक, सिक्किम में सिक्किम विश्वविद्यालय सम्मेलन कक्ष में आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध एवं राजनीति विभाग द्वारा आयोजित दस दिवसीय राष्ट्रीय स्तर की अनुसंधान क्रियाविधि कार्यशाला में भाग लिया. उन्होंने 22-23 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय के सम्मेलन कक्ष में आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध और राजनीति विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की अनुसंधान क्रियाविधि कार्यशाला में "सिक्किम में विकास : स्थानीय परिप्रेक्ष्य" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 12 और 22 दिसंबर 2012 को उदयपुर महाविद्यालय, उदयपुर, त्रिपुरा में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "असम के बहू जातीय उत्तर कछाड़ जिले के छठा अनुसूची शासन का विश्लेषण" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

जयंत माधव तामुली (पीएचडी- द्वितीय सेमेस्टर) ने 2-11 जनवरी 2012 को आईसीएसएसआर और अमिय कुमार दास सामाजिक परिवर्तन और विकास संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से शोध क्रियाविधि पर आयोजित पाठ्यक्रम में भाग लिया. उनको मई-जुलाई 2012 में सिक्किम स्टडीज एक्सचेंज कार्यक्रम के अंतर्गतजामिया मिलिया इस्लामियाके पूर्वोत्तर अध्ययन केंद्र में "सिक्किम में हाइडल पावर विकास : तीस्ता परियोजना का एक आकलन" विषय पर कार्य करने के लिए रेजीडेंसी फैलोशिप प्रदान किया गया. उन्होंने 26-27 फरवरी 2012 को कलकत्ता अनुसंधान ग्रुप, गुवाहाटी द्वारा "शासन और शांति निर्माण" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया. उन्होने (संयुक्त रूप से संघमित्र चौधुरी के साथ) 7-8 मार्च 2013 को जेएमआई, नई दिल्ली में "पूर्वी हिमालय : जलवायु परिवर्तन, आजीविका और गरीबी" विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "असम से साहित्यिक ग्रंथों के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों में लिंग और संघर्ष को समझना" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.उन्होंने 22-23 जनवरी 2013 को ओकेडीआईएससीडी में आईसीएसएसआर- एनईआर कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित पूर्वोत्तर के युवा वैज्ञानिकों की बैठक में "साहित्य के माध्यम से पाठ, संदर्भ और संघर्षों का अध्ययन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

सनीता राय (पीएचडी- द्वितीय सेमेस्टर) ने सनीता राय ने 17 दिसंबर 2012 को (संयुक्त रूप से पॉल सेल्विन के साथ) कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता के दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन विभाग द्वारा आयोजित एशियाई प्रशांत अध्ययन के लिए भारतीय संघ के छठे द्विवार्षिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "महिलाओं के संपत्ति के उत्तराधिकार के अधिकार में लिंग असमानता : सिक्किम में विवाहित महिलाओं पर एक केस स्टडी" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

तेनजिंग कंगफेल(एमफ़िल- द्वितीय सेमेस्टर) ने 2-11 मार्च 2013 को गंगटोक, सिक्किम में सिक्किम विश्वविद्यालय सम्मेलन कक्ष में आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध एवं राजनीति विभाग द्वारा आयोजित दस दिवसीय राष्ट्रीय स्तर की अनुसंधान क्रियाविधि कार्यशाला में भाग लिया.

टिकेन्द्र के. छेत्री (एम. फिल-चतुर्थ सेमेस्टर) ने 2-11 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय सम्मेलन कक्ष, गंगटोक, सिक्किम में आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध और राजनीति विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की शोध क्रियाविधि कार्यशाला में "सिक्किम में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 11 अप्रैल 2013 में बोडोलैंड विश्वविद्यालय, कोकराझार, असम में "प्रवासी श्रम (संविदा श्रम) और श्रम कानून और मानवाधिकार के उल्लंघन : पूर्वी सिक्किम के निर्माणाधीन पाकयोंग हवाई अड्डे का एक केस स्टडी" पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 2-11 मार्च 2013 को गंगटोक, सिक्किम में सिक्किम विश्वविद्यालय सम्मेलन कक्ष में आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय

संबंध एवं राजनीति विभाग द्वारा आयोजित दस दिवसीय राष्ट्रीय स्तर की अनुसंधान क्रियाविधि कार्यशाला में भाग लिया. उन्होंने 22 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "असम के गोरखा : भारत और नेपाल की मैत्री संधि 1950 की खुली सीमा नीति की दुर्दशा" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 12 दिसंबर 2012 को उदयपुर महाविद्यालय, उदयपुर, त्रिपुरा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "असम के गोरखाओं पर जातीय संघर्ष का प्रभाव : असम के चिराग (बीटीएडी) में गोरखाओं का का एक अध्ययन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

वासीन अहमद शाह और देबाशीष नाथ (एमफिल द्वितीय सेमेस्टर)ने संयुक्त रूप से 22-23 मार्च 2013 को "संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों: भर के पूर्वोत्तर राज्यों की गतिशीलता" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "भारत की पूर्व की ओर देखो नीति को समझना : पूर्वोत्तर भारत में बहु आयामी संघर्ष के समाधान के लिए विकास संबंधी संकट और संभावनाओं का एक गंभीर अवलोकन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

भौतिक और रसायनिक विज्ञान विद्यापीठ
रसायनिक विज्ञान विभाग

रासायनिक विज्ञान विभाग, वर्ष 2010 में भौतिक और रासायनिक विज्ञान विद्यापीठ के अंतर्गत स्थापित किया गया था. वर्तमान समय में विभाग में चार संकाय सदस्य और एक वैज्ञानिक अधिकारी है.इस विभाग में रासायनिक विज्ञान के क्षेत्र में एमएससी, एमफिल और पीएचडी पाठ्यक्रम की व्यवस्था है .विभाग में शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के अंतर्गत पारंपरिक कार्बनिक क्षेत्र, भौतिक और अकार्बनिक रसायन, जैव रसायन के विविध क्षेत्र, नैनोसाइन्स, पदार्थ विज्ञान, पर्यावरणिक, सैद्धांतिक और सुपरमोलेक्यूलर रसायन शामिल है. अनुसंधान गतिविधियों में सहायता हेतु विभाग ने 400 मेगाहर्ट्ज परमाणु चुंबकीय अनुनाद (एनएमआर), उच्च प्रदर्शन तरल क्रोमैटोग्राफी (एचपीसीएल), सिंगल क्रिस्टल और पाउडर एक्स - रे डिफ्रेक्टोमीटर (एक्सआरडी), एफ़टीआईआर,स्पेक्ट्रोस्कोपी जैसे यूवी, टीजीए, डीएससी, पोलरीमीटर, विद्युत रासायनिक विश्लेषक आदि की व्यवस्था की है. किताबों और अन्य पाठ्य सामग्रियों के अलावा विभाग में रसायन शास्त्र के क्षेत्रों जैसे अमेरिकन केमिकल सोसायटी (एसीएस), रॉयल सोसाइटी ऑफ केमेस्ट्री (आरएससी), साइन्स डायरेक्ट जर्नल आदि से संबन्धित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं का ऑनलाइन उपयोग करने की व्यवस्था है. साईंफ़ाइंडर जैसे डाटाबेस भी अब उपलब्ध हैं.

डॉ. सोमेद्र चक्रवर्ती, सहायक प्राध्यापक, ने 2007 में आईआईटी, दिल्ली से पीएचडी की डिग्री प्राप्त की. सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण करने से पहले उन्होंने 2007 और 2012 के बीच में वाशिंगटन विश्वविद्यालय, टेक्सास विश्वविद्यालय और कोलरैडो स्कूल ऑफ माइन्स से पोस्ट डॉक्टरल शोध किया था. शोध के क्षेत्रों में उनकी रुचि मोंटे कार्लो, ठोस और तरल पदार्थों के आणविक गतिशीलता सिमुलेशन,हाइड्रेट, मॉडलिंग जैसे सिस्टमों के चरण संतुलन के अध्ययन, मेटाडाइनैमिक्स जैसे सिमुलेशन, अम्ब्रेला सैंपलिंग और संक्रमण सैंपलिंग, प्रतिक्रिया समन्वय, जटिल प्रणालियों की खोज, सरल प्रणाली के ऊर्जा परिदृश्य गुण में हैं.

डॉ. सुदर्शन तामंग, सहायक प्राध्यापक, ने 2011 में ग्रेनोबल विश्वविद्यालय, फ्रांस से पीएच.डी. की है. उन्होने 2006 से 2008 तक राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में एक सीएसआईआर अनुसंधान अध्येता के रूप ढाई वर्ष तक कार्य किया और लिवरपूल विश्वविद्यालय,यूके के विनिमय कार्यक्रम (2007) में भाग लिया. उनकी रुचि के शोध क्षेत्रों में नैनोमटिरियल और सौर कोशिकाएं है

डॉ. विश्वजीत गोपाल राय, वैज्ञानिक अधिकारी, ने 2007 में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ केमिकल बायोलॉजी,कोलकाता, से पीएचडी की है और पोस्टेक, दक्षिण कोरिया, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, रिवरसाइड और क्वींस विश्वविद्यालय, कनाडा में पोस्ट डॉक्टरेट शोध किया है. उनके शोध के क्षेत्रों में प्राकृतिक उत्पादों के संश्लेषण और कार्यप्रणाली विकास शामिल है.

छात्रों की उपलब्धियां (2012-2013)

दो छात्रों ने राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) उतीर्ण की :
सुमन छेत्री (ऑल इंडिया रैंक 45) और
जे शरत कुमार (ऑल इंडिया रैंक 71)
दो छात्रों ने गेट (GATE) उतीर्ण की :
अर्णव शीत (ऑल इंडिया रैंक 520)
रिया सिन्हा रॉय (ऑल इंडिया रैंक 973)

प्रकाशन

ग्रेमी जे. स्तस्यूक, सुरदर्शन तामंग, डैनियल इंबर्ट, चिस्टेली गैटीऊ, पीटर रेज़, पास्कल फ्राइस और मेट्रीनेला मजंटी. आईएनपी/ज़ेडएनएस क्वांटम डॉट्स से संलग्न जी.डी. (3) चीलेट्स की बढ़ती शिथिलता, डाल्टन ट्रैंज़ैक्शन्स, 2013, 42, 8197-8200.

सोमेंद्र नाथ चक्रवर्ती, एरिक ग्रेज़लेक, ब्रायन बार्न्स, डेविड टी. वू और एमेण्डेउ के. सुम. "क्लथेरेट हाइड्रेट्स के बरनोई पच्चीकारी विश्लेषण", जर्नल ऑफ फ़िज़िकल कैमिस्ट्रि, सी, 2012,116,20040
एस मुखर्जी, बीजी रॉय, एस.एन. दास, एस.बी. मंडल. टेट्राहेड्रोन एलईटीटी. 2012, 53,4929-4932 2012, 53, 4929-4932.

वर्ष के दौरान विभाग में प्रमुख उपकरणों की स्थापना

- 400 मेगाहर्ट्ज परमाणु चुंबकीय अनुनाद (एनएमआर) स्पेक्ट्रोमीटर
- सुपर नोवा सिंगल क्रिस्टल एक्स - रे डिफ्रेक्टोमीटर
- HPLC सिस्टम
- हाइ रेसोल्यूशन पाउडर एक्स रे डिफ्रेक्टोमीटर
- टीजीए
- डीएससी

विभाग में उपकरणों की सूची

क्र.सं.	उपकरणों के नाम	स्थिति (1 जून 2013 के अनुसार)
1	एफ़टी - आईआर स्पेक्ट्रोमीटर	कार्यरत
2	इलेक्टर	कार्यरत
3	डिफ़रेंशिअल स्कैनिंग कैलोरीमीटर	कार्यरत
4	पाउडर एक्स रे डिफ्रेक्शन	कार्यरत
5	ट्यूब और मफ़्ल फर्नेस	कार्यरत
6	पोलरीमीटर	कार्यरत
7	माइक्रोवेव संश्लेषण प्रणाली	कार्यरत
8	400 मेगाहर्ट्ज एनएमआर स्पेक्ट्रोमीटर	कार्यरत
9	थर्मो ग्रेविमेट्रिक विश्लेषक	कार्यरत
10	हाई परफॉर्मेंस लिक्विड क्रोमैटोग्राफी (एचपीएलसी)	कार्यरत
11	मिलिपोर जल शोधन प्रणाली	कार्यरत
12	अल्ट्रा लो इमरशन कूलर	कार्यरत
13	माइक्रोप्रोसेसर रिचर्स सेंट्रीफ्यूज	कार्यरत
14	फोटोरिएक्टर	कार्यरत
15	यूवी विज़ स्पेक्ट्रोफोटोमीटर	कार्यरत
16	रोटरी वाष्पीकरण	कार्यरत
17	हाई रेसोल्यूशन मास स्पेक्ट्रोमीटर	जून 2013 में स्थापना निर्धारित
18	सिंगल क्रिस्टल एक्स - रे डिफ्रेक्टोमीटर	कार्यरत

भौतिक और रासायनिक विज्ञान विद्यापीठ
भौतिक विज्ञान विभाग

विभागाध्यक्ष	: डॉ. सुबीर मुखोपाध्याय
कार्यालय दूरभाष	: 03592-232080
मोबाइल नंबर	: 09547605900
ईमेल आईडी	: subirkm@gmail.com

संकाय सदस्य

डॉ. अजय त्रिपाठी, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय,वाराणसी,से एम.एससी. तथा फ्रीबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है. उन्होने सितम्बर 2009 में विभाग में कार्यभार ग्रहण किया. उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से भौतिकी में स्नातक तथा स्नातकोत्तर की हैं. जर्मनी के फ्रीबर्ग विश्वविद्यालय से पीएच. डी उपाधि बाद उन्होने डरहम विश्वविद्यालय, इंग्लैंड में रिसर्च एसोसिएट के रूप में भी कार्य किया. इसके बाद दिसंबर 2007 में उन्होंने लेवल विश्वविद्यालय, क्यूबेक, कनाडा में पोस्ट डॉक्टरेल अध्येता के रूप में कार्यभार ग्रहण किया. उनके शोध के मुख्य क्षेत्रों में परमाणु आण्विक और ऑप्टिकल भौतिकी शामिल हैं. उनकी पीएचडी बोस आइंस्टीन संघनन (बीईसी) पर है. उन्होंने मजबूत लेजर क्षेत्र पर भी काम किया है. उनकी शोध-रुचि लेजर शीतलक, बोस आइंस्टीन संघनन और फोटोइलेक्ट्रॉन स्पेक्ट्रोस्कोपी क्षेत्र में है.

डॉ.अमिताभ भट्टाचार्य आईआईटी कानपुर से स्नातकोतर है एवं वर्ष 1999 में रमन शोध संस्थान, बंगलौर. से पीएचडी हैं. उन्होंने 2012 में सह प्राध्यापक के रूप में सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया. उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में शीतल संघनित पदार्थ, विशेष रूप से लिक्विड क्रिस्टल, लंगमुईर मोनो लेयर्स, गिब के मोनो लेयर्स आदि शामिल हैं. वे वर्तमान में फ़ोम और फोमिंग पर कार्य रहे हैं. उन्होने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया और कई लेख प्रकाशित किए है.

डॉ. अर्चना तिवारी ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी से एमएससी और 2008 में ऑक्सफोर्ड, ब्रिटेन के विश्वविद्यालय से डीफ़िल की है. उन्होने सितंबर 2009 में सहायक प्राध्यापक के रूप में सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया. उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में कार्बन नैनोमटीरिअल और क्वांटम गणना, जैव ऊर्जा संसाधनों में उसकी उपयोगिता शामिल हैं. उनके कई प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में अनेक शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं और उन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया है.

डॉ. हेमन दिनेश सिंह ने सीसीएस विश्वविद्यालय, मेरठ से एम.एससी.तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली, से 2009 में कम्प्यूटेशनल अंतरिक्ष प्लाज्मा में पीएचडी की है. वे जुलाई 2009 से सहायक प्राध्यापक के रूप में सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यरत है.उनकी शोध-रुचि सौर स्थलीय वार्तालाप, सौर वायु विच्छोभ, कोरोनल हीटिंग, उषा सम्बन्धी कण त्वरण और नॉनलिनियर ऑप्टिकस के सैद्धांतिक और संख्यात्मक अध्ययन शामिल हैं. वर्तमान में वे खगोल विज्ञान और खगोल भौतिकी (आईयूसीएए), पुणे के इंटर यूनिवर्सिटी सेंटर में विजिटिंग एसोसिएट हैं.

डॉ. सुबीर मुखोपाध्याय ने कोलकाता विश्वविद्यालय से एम.एससी तथा साहा आणविक भौतिकी संस्थान से पीएचडी की है. उन्होंने जुलाई 2009 में विभाग में कार्यभार ग्रहण किया. उन्होंने आईओपी, भुवनेश्वर, एचआरआई, इलाहाबाद, स्टॉकहोम विश्वविद्यालय, स्वीडन और मैसाचुसेट्स विश्वविद्यालय, एमहर्स्ट, यूएसए में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में काम किया है. उनकी शोध-रुचि में एडीएस/सीएफ़टी पत्राचार, एम 2 ब्रेन और विद्युत चुंबकीय द्वंद्व की गतिशीलता शामिल है.

प्रकाशन

हैरिस, एम. त्रिपाठी, ए, कोर्निश, एसएल, और ह्यूजेस, रूबिडीयाम डी 2 लाइन पर उप डॉपलर डीएवीआईएलएल का अनुकूलन, भौतिकी जर्नल बी- मॉल. ओप्त. फ़िज़िक्स (2008) 085401

कैफर, सी., बौरॉइस, आर, यूरिश, जे, त्रिपाठी, ए, और पतवार और हेल्म एच., शीत धारिता परमाणुओं के साथ स्टर्न गार्लेक के प्रयोगों, फ़िज़िकल रिवियू, ए 80, 023409 (2009).

अर्चना तिवारी, सैकिरन वदावल्ली, अजय त्रिपाठी, और आनंद पी. पाठक.

"रमन और सिक्किम के निम्न हिमालय के माइका, क्वार्ट्ज और कोयला आधारित चट्टानों का एसईएम/ईडीएस लक्षण वर्णन", मंसौरा जर्नल ऑफ केमेस्ट्री

आईसी 2 आरडी 2013 का सम्मेलन कार्यवाही, मिस्र

संगोष्ठी / सम्मेलन

डॉ. अजय त्रिपाठी ने 11-15 मार्च 2013 को मंसौरा विश्वविद्यालय, शार्म अल - शेख में आयोजित रसायन और विकास की भूमिका विषय पर आयोजित 11वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "सिक्किम मेँ निचले हिमालय के माइका, क्वार्ट्ज और कोयला आधारित चट्टानों का रमन और एसईएम/ईडीएस लक्षण वर्णन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 14-17 दिसंबर 2012 को आईआईएसईआर, कोलकाता में आयोजित आईएसएएमपी द्विवार्षिक बैठक में "एक ऑप्टिकल डीपोल ट्रेप से चुंबकीय क्षेत्र के संवेदनशील परमाणुओं का इजेक्शन" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

डॉ. अमिताभ भट्टाचार्य ने 21-22 नवंबर 2012 को थापर विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब में "लिक्विड क्रिस्टल" पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में "सतह धाराविज्ञान और मिश्रित पृष्ठसक्रियक पॉलीइलेक्ट्रोलाइट समाधान की फोम स्थिरता" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

डॉ. अर्चना तिवारी ने 11-15 मार्च 2013 को मंसौरा विश्वविद्यालय, शार्म अल-शेख, इजिप्त में रसायन विज्ञान और विकास में इसकी भूमिका विषय पर आयोजित 11वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "सिक्किम के निचले हिमालय के माइका, क्वार्ट्ज और कोयला आधारित चट्टानों का रमन और एसईएम/ईडीएस लक्षण वर्णन" शीर्षक पर पेपर प्रस्तुत किया.

पेटेंट / पुरस्कार / सम्मान / मान्यता

अर्चना तिवारी को सिक्किम विश्वविद्यलय, गंगटोक, इंडिया द्वारा विज्ञान में सर्वश्रेष्ठ अध्यापक सम्मान -2012 प्राप्त हुआ और 11-15 मार्च 2013 को मंसौरा विश्वविद्यालय, शार्म अल-शेख, इजिप्त में रसायन विज्ञान और विकास में इसकी भूमिका विषय पर आयोजित 11वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुति सम्मान : युवा वैज्ञानिक" प्राप्त हुआ.

आमंत्रण पर व्याख्यान

अमिताभ भट्टाचार्य ने (क) जनवरी 2012 में सेंट जेवियर्स कॉलेज के भौतिकी विभाग में "लिक्विड क्रिस्टल की लंगम्यूर मोनोलेयर्स : दो आयामी प्रणाली" विषय पर (ख) भौतिकी विभाग, सेंट जेवियर कॉलेज, रांची और (ग) फरवरी 2012 को भौतिकी विभाग, सॉफ्ट सामग्री अनुसंधान केंद्र, बंगलौर में "मिश्रित सरफेकटेंट पॉलिमर सिस्टम: भूतल विकोलेस्टीसिटी और और अन्य गुण" विषय पर व्याख्यान दिया.

वर्ष के दौरान परिवर्धित प्रमुख उपकरण

सीडब्ल्यू ईपीआर, एक्स बैंड: 04/03/2013 को स्पिन माप के लिए प्रारम्भ किया गया.

एएफ़एम : 12/10/2012 को सतह विश्लेषण के लिए प्रारम्भ किया गया

रमन स्पेक्ट्रोमीटर:21/7/2012 को स्पेक्ट्रोस्कोपी विशेषता के लिए प्रारम्भ

एयर एसटीएम:31/05/2012 को सतह विश्लेषण के लिए प्रारम्भ

एफ़टीआईआर स्पेक्ट्रोफोटोमीटर: 20/6/2012 को स्पेक्ट्रोस्कोपी विशेषता के लिए प्रारंभ

परियोजनाएं

यूजीसी डीएई कंसोर्टियम, इंडोर द्वारा "क्वांटम सूचना संसाधन के लिए संभावित फुलरीन के संश्लेषण और ऑप्टिकल रीडआउट" पर तीन साल के वैज्ञानिक अनुसंधान की मंजूरी. परियोजना प्रभारी - डॉ.. अर्चना तिवारी, सह परियोजना प्रभारी -डॉ. . अजय त्रिपाठी. राशि रुपये 6,95,400 / -.

नीति नियोजन और अध्ययन विद्यापीठ

विधापीठ के अध्यक्ष	: डॉ. मनेश चौबे
फोन नंबर	: 03592-251339 (कार्यालय), 8670984192 (मोबाइल)
ईमेल	: mchoubeysu@gmail.com / mchoubey3@gmail.com

संकाय सदस्य

डॉ. मनेश चौबे, सह प्राध्यापक कृषि अर्थशास्त्र में एमएससी, पीएचडी हैं. उनकी शोध-रुचि के क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधन अर्थशास्त्र, कृषि विपणन और व्यापार, कृषि वित्त शामिल हैं. वे राष्ट्रीय छात्रवृत्ति, जूनियर रिसर्च फैलोशिप (आईएआरआई) और सीनियर रिसर्च फैलोशिप (आईसीएआर, नई दिल्ली) के प्राप्तकर्ता हैं. वे कृषि मंत्रालय, कपार्ट (सीएपीएआरटी), अंतरराष्ट्रीय पशुधन अनुसंधान संस्थान, नैरोबी, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल, नाबार्ड और ग्रामीण विकास बैंकर्स संस्थान द्वारा प्रायोजित विभिन्न परियोजनाओं के साथ जुड़े रहे . उन्होंने कृषि विश्वविद्यालय, इम्फ़ाल, असम प्रबंधन संस्थान, गुवाहाटी, उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद और ग्रामीण विकास बैंकर्स संस्थान, लखनऊ में संकाय के रूप कार्य किया. वे गरीबों की सहायता करने के लिए सलाहकार समूह (सीजीएपी) के परामर्शदाता हैं.

डॉ. संतोष कुमार राय, एमएससी, पीएचडी (बॉटनी) सहायक प्राध्यापक हैं. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में एथ्नोबॉटनी और दार्जिलिंग-सिक्किम हिमालय क्षेत्र के औषधीय पौधे शामिल हैं. उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में पूर्वी हिमालय की आबादी के परस्पर सांस्कृतिक एथ्नो बॉटनीकल अध्ययन, समुदाय आधारित भागीदारी प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, स्थानीय संसाधनों का उपयोग (गैर इमारती वन का उत्पादन) के माध्यम से उद्यम आधारित संरक्षण की विकास नीति, जैविक खेती, पर्यावरण शिक्षा, व्यवस्थित संयंत्र, वानस्पतिक अनुसंधान और पूर्वी हिमालय की जैव विविधता का आकलन शामिल हैं.

डॉ. ओम प्रसाद गड्डे, एमए, एमफिल, पीएचडी (राजनीति विज्ञान) सहायक प्राध्यापक हैं. सिक्किम विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण करने से पहले वे विश्व बैंक, राजीव गांधी फाउंडेशन और अंत: सांस्कृतिक संस्थान जैसे संगठनों से विभिन्न परियोजनाओं के लिए जुड़े हुए थे. वे प्रिंसटन विश्वविद्यालय द्वारा वित्त पोषित आजादी के बाद से भारत और पाकिस्तान में रहनेवाले प्रत्येक लोगों के बारे में जानकारी का संग्रह और दस्तावेजीकरण की परियोजना से जुड़े हुए थे. उन्होंने 7 से भी अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का संयोजन किया और समन्वित और कई संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और सम्मेलनों में भाग लिया. उन्होंने सिक्किम विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय निर्माण, प्रवेश नीति, बुनियादी ढांचे के विकास, भर्ती नीतियों, बारहवीं योजना के प्रस्ताव और सिक्किम विश्वविद्यालय में कई अन्य परियोजनाओं में काफी योगदान दिया हैं. उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में भारत में ऊर्जा क्षेत्र, बहुपक्षीय एजेंसियों, सार्क और माओवादी आंदोलन शामिल हैं.

डॉ. विमल खवास एमए (भूगोल), एम. प्लान (शहरी और क्षेत्रीय योजना) और पीएचडी (पर्यावरण अध्ययन) है.उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में क्षेत्रीय योजना और विकास, पर्यावरण अध्ययन शामिल हैं.उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में विकास अध्ययन, पर्यावरण अध्ययन,

हिमालयन अध्ययन शामिल हैं.

डॉ. बसुंधरा छेत्री, एमएससी., एम. फिल, पीएचडी (प्राणीविज्ञान) हैं. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में पारिस्थितिकी संरक्षण, जीवविज्ञान, प्राणीविज्ञान शामिल हैं. उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में पारिस्थितिकी, जैव संरक्षण, सरीसृप विज्ञान (पारिस्थितिकी और वर्गीकरण) और ईआईए संबंधित कार्य शामिल हैं. उनके वर्तमान शोधकार्य सिक्किम हिमालय में स्थानिक वितरण पैटर्न और हारपेटोफौना (उभयचर और सरीसृप) के संरक्षण पर केंद्रित है.उनके शोध हिमालय क्षेत्र में जीव पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के आकलन पर केंद्रित है.

डॉ. अब्दुल हन्नान, सहायक प्राध्यापक, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अंतर्गत क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र से पीएचडी हैं. उनके शोध का शीर्षक "लघु चाय बागान(एसटीपी) में रोजगार स्थितियाँ और घरेलू अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभाव : उत्तर बंगाल के इस्लामपुर उपखंड का एक केस स्टडी" है उसका एमफिल शोध प्रबंध का शीर्षक "उत्तर बंगाल में लघु चाय बागान के विकास में सामाजिक, पर्यावरण की कमी (पश्चिम बंगाल के इस्लामपुर उपखंड का एक केस स्टडी)" है. उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में बागान अर्थव्यवस्था और क्षेत्रीय विकास, सहकारी कृषि, लघु वित्त और समावेशी विकास, व्यापार मेला, आजीविका अध्ययन और सतत विकास शामिल है.

सुश्री सांगमु थेंडुप, एमए, एमफिल (इतिहास) हैं और उनकी विशेषज्ञता का क्षेत्र प्राचीन भारतीय इतिहास हैं. उनकी अभिरुचि के क्षेत्रों में मातहत अध्ययन, सामाजिक-धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यावरण मुद्दे, बौद्ध अध्ययन शामिल हैं.

प्रकाशन

चौबे मनेश (2012) "भारत में वित्तीय समावेश में प्रौद्योगिकी की भूमिका: चुनौतियां और नीतिगत मुद्दे", एआईएमएस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही, दिसंबर 2012, आईआईएम, बंगलौर

चौबे मनेश (2013) "बिहार में खाद्य प्रतिभूति", डेवलपमेंट मीट 2013, केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिहार, पटना, 3-4 मार्च

चौबे मनेश (2012) "सूक्ष्म वित्त संस्थानों में संयुक्त देयता समूह की गुणवत्ता और स्थिरता: कैशपोर माइक्रोक्रेडिट सेवाओं का एक केस स्टडी", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन कॉमर्स एंड मैनेजमेंट, (आईएसएसएन 0976-2183).

राय, एसके और भुजेल, आर. बी 2012. "दार्जिलिंग हिमालय क्षेत्र में औषधीय पौधें" हिमालयन रिसर्च जर्नल, 1 (1) :181-195.कलिमपोंग, भारत (आईएसएसएन : 2278-280एक्स).

आचार्य, बी. के और छेत्री, बी "सिक्किम हिमालय में पक्षियों, हर्पेटोफौना और तितलियों पर जलवायु का प्रभाव : एक प्रारंभिक जांच सिक्किम में जलवायु परिवर्तन: प्रकृति, प्रभाव और पहल" (एम.एल अरावतीया और संदीप तांबे संपादक) आईपीआर विभाग, सिक्किम सरकार, गंगटोक (आईएसबीएन: 978-81-920437-0-8). पृष्ठ 141-160.

खवास, विमल (2012). सिक्किम हिमालय में कृषि: एक भौगोलिक टिप्पणी मोहम्मद यासीन और दुर्गा पी छेत्री (संपादक), राजनीति,समाज और विकास : सिक्किम के संदर्भ में., कल्पज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 187-202

हन्नान, ए (2012). नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार : सिक्किम के समक्ष एक आगामी चुनौती सकर्मा सोमयाजि और विमल खवास (संपादक) द्वारा "हिमालय क्षेत्र में पर्यावरण, विकास और सामाजिक परिवर्तन" में. आकांशा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 191-210.

लामा, एम.पी., हन्नान, ए और अन्य (संपादक). *(2012).*"पर्वतीय क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन और स्थिरता", सिक्किम विश्वविद्यालय प्रेस और इंडस पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली.

लामा, एम. पी., गड्डे, ओ. पी. और अन्य (संपादक). (2012) "पर्वतीय क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन और स्थिरता" सिक्किम विश्वविद्यालय प्रेस और इंडस पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली.

थेंडुप, सांगमु. (2013). "प्रारंभिक बौद्ध धर्म में पर्यावरण परिप्रेक्ष्य: पर्यावरण चुनौतियों के प्रति प्रतिक्रिया". मैथ्यू कोशी पुनक्कडु (संपादक) "पारिस्थितिक चुनौतियों के प्रति धार्मिक प्रतिक्रिया" नीलाकल में आयोजित अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन में प्रस्तुत पेपर, लैम्बर्ट अकैडमिक पब्लिशिंग, 2013, 111-115.

संगोष्ठी / सम्मेलन

डॉ. मनेश चौबे 6-8 दिसंबर 2012 को आईआईएम,बंगलौर में आयोजित एआईएमएस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "भारत में वित्तीय समावेश में प्रौद्योगिकी की भूमिका : चुनौतियाँ और नीतिगत मुद्दे" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 03-04 मार्च 2013 को बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय,पटना में आयोजित "विकास मीट 2013" में "बिहार में खाद्य सुरक्षा" विषय पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

डॉ. बसुंधरा छेत्री ने 8-14 अगस्त 2012 को ब्रिटिश कोलंबिया, वैंकूवर, कनाडा के हर्पेटोफौना विश्वविद्यालय के विश्व कॉंग्रेस में "उत्कृष्ट वितरण प्रतिरूप, उनके मूल कारणों, और पूर्वी हिमालय की ऊंचाई ढलान के साथ हर्पेटोफौना के संरक्षण" विषय पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

डॉ. विमल खवास ने 19-20 मार्च 2013 को एनबीयू, सिलीगुड़ी के हिमालय अध्ययन केंद्र में "दक्षिण एशिया में सीमापार प्रवासन, मानव सुरक्षा और पर्यावरण" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "पूर्वी हिमालय में सीमा क्षेत्र के विकास में समस्याएं : दार्जिलिंग-सिक्किम हिमालय के मामले" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

डॉ. ओम प्रसाद गड्डे ने 22-23 मार्च 2013 को वैश्विक अध्ययन विद्यापीठ के अंतरराष्ट्रीय संबद्ध/ राजनीति विभाग द्वारा "संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की गतिशीलता" विषय पर आयोजित संगोष्ठी में "ऊर्जा क्षेत्र: भारत और बांग्लादेश के बीच बिजली व्यापार और एकीकरण की संभावनाएं, दृष्टि और अवसर" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

डॉ. अब्दुल हन्नान ने 22-23 मार्च 2013 को वैश्विक अध्ययन विद्यापीठ के अंतरराष्ट्रीय संबद्ध/राजनीति विभाग द्वारा संघवाद, विदेश नीति और सीमावर्ती राज्यों : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की गतिशीलता " विषय पर आयोजित संगोष्ठी में "भारत बांग्लादेश सीमा में अनौपचारिक व्यापार, आजीविका और न्यायेतर हत्याएं" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होंने 22-23 जनवरी 2013 को गुवाहाटी में अमिय कुमार दास संस्थान के सामाजिक परिवर्तन और विकास विभाग द्वारा आयोजित "पूर्वोत्तर के युवा सामाजिक वैज्ञानिकों की सभा" में "बागान क्षेत्र में चाय उत्पादन सोसाइटी (एसएचजी) पर एक आलोचनात्मक समीक्षा" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

सुश्री सांगमु थेंडुप ने 17-18 दिसंबर 2012 को दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल में फ्रेडरिक एबर्ट स्टीफ़ंग, जर्मनी के सहयोग से एफ़ओएसएसईपी, दार्जिलिंग द्वारा "जलवायु परिवर्तन और पर्वतीय क्षेत्रों : जागरूकता, अनुकूलन और स्थिरता" विषय पर आयोजित कार्यशाला में "धार्मिक पर्यावरणवाद : पर्वतीय क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के प्रति एक प्रतिक्रिया" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

अन्य शैक्षणिक गतिविधियां

डॉ. विमल खवास ने 18 अप्रैल 2012 को डेवलपमेंट एरिया, गंगटोक में राष्ट्रीय पारिस्थितिकी संस्था द्वारा आयोजित और पर्वतीय संस्था, भारत द्वारा संचालित मैकआर्थर फाउंडेशन वित्त पोषित अनुसंधान परियोजना के अंतिम कार्यशाला और नई परियोजना एवं परामर्श कार्यशाला में भाग लिया. उन्होने 19-20 नवंबर 2012 को बजट विश्लेषण और वकालत पर दो दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला में भाग लिया और इसके बाद 21 नवंबर 2012 को होटल ब्रह्मपुत्र अशोक, गुवाहाटी में पीपुल्स बजट इनिशिएटिव, बजट और शासन जवाबदेही केंद्र, नई दिल्ली द्वारा आयोजित केन्द्रीय बजट 2013-14 के क्षेत्रीय सम्मेलन में भाग लिया. उन्होने 21 जनवरी 201 को पार्क होटल, कलिम्पोंग में सिक्किम विश्वविद्यालय के सहयोग से वागेनिंजेम विश्वविद्यालय, नीदरलैंड द्वारा "पूर्वी हिमालय में जलविद्युत,पानी और विकास" विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया. उन्होने 23 जनवरी 2013 को उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय

के समिति कक्ष में उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय के सहयोग से वागेनिंजेन विश्वविद्याय द्वारा "पूर्वी हिमालय में जल विद्युत, पानी और विकास" विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया. उन्होने 25-28 जनवरी 2013 को होटल ग्रीनविच में नेपाल इंजीनियरिंग कॉलेज के सहयोग से वागेनिंजेन विश्वविद्यालय द्वारा "पूर्वी हिमालय में जल विद्युत, पानी और विकास" विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया.

डॉ. संतोष कुमार राय ने 11-13 जनवरी 2013 को कोलकाता में भारत के वानस्पतिक सर्वेक्षण द्वारा आयोजित वानस्पतिक नामकरण पाठ्यक्रम में भाग लिया.

डॉ. अब्दुल हन्नान ने 17-18 दिसंबर 2012 को दार्जिलिंग में फ्रेडरिक एबर्ट स्टीफंग, नई दिल्ली पर्यावरण संरक्षण सोसाइटी द्वारा "जलवायु परिवर्तन और पर्वतीय क्षेत्रों" विषय पर आयोजित एक कार्यशाला में "आजीविका और जलवायु परिवर्तन" पर भाषण दिया.

पेटेंट / पुरस्कार / सम्मान / मान्यता

डॉ. बसुंधरा छेत्री वर्ष 2012 से 2015 तक के लिए भारत के सिक्किम राज्य जैव विविधता बोर्ड में बतौर विशेषज्ञ समिति सदस्य मनोनीत हुई.

डॉ. विमल खवास को 18 अक्टूबर 2012 को सिक्किम विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा सिक्किम विश्वविद्यालय भवन निर्माण परियोजना (2007-12) की दिशा में किए गए योगदान के लिए प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया. वे राज्य आजीविका बोर्ड, सिक्किम सरकार के सदस्य हैं.

डॉ. अब्दुल हन्नान को 18 अक्टूबर 2012 को सिक्किम विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा सिक्किम विश्वविद्यालय के भवन निर्माण परियोजना (2009-12) की दिशा में किए गए योगदान के लिए प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया.

डॉ. ओम प्रसाद गड्डे को 18 अक्टूबर 2012 को सिक्किम विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा सिक्किम विश्वविद्यालय के भवन निर्माण परियोजना (2009-12) की दिशा में किए गए योगदान के लिए प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया.

आमंत्रण पर व्याख्यान प्रदान

डॉ. विमल खवास ने 27-29 अप्रैल 2012 को पश्चिम बंगाल सरकार, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल द्वारा आयोजित द्वितीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण कांग्रेस में "दार्जिलिंग- सिक्किम हिमालय में आपदा प्रबंधन में पारंपरिक ज्ञान" पर व्याख्यान दिया.

सतत विकास और आजीविका प्रबंधन विद्यापीठ
फूलों की खेती और बागवानी प्रबंधन विभाग

विभागाध्यक्ष	: डॉ. एस. मनिवन्णन
कार्यालय दूरभाष	: 91-3592-251485
मोबाइल नंबर	: 91-7602878189
ईमेल आईडी	: mani@gardener.com

संकाय सदस्य

डॉ. एस. मनिवन्णन, सह प्राध्यापक बागवानी में एमएससी और पीएचडी है. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में पादप पोषण, मार्कर आधारित

अध्ययन और सूक्ष्म प्रचार, ओमिक प्रौद्योगिकी और बागवानी फसलों के मूल्य संवर्धन शामिल हैं.
डॉ. सुजाता उपाध्याय, सहायक प्राध्यापक, बागवानी, में एमएससी और पीएचडी हैं. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में फल विज्ञान और बागवानी जैव प्रौद्योगिकी शामिल हैं.

डॉ. मंजू राणा, सहायक प्रोफेसर बागवानी में एमएससी और पीएचडी हैं उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में पादप पोषण, फसल उत्पादन और विकास, छोटे बागवानी फसलों में सुधार और नई फूलों की फसलों के लिए प्रोटोकॉल का विकास शामिल हैं.

डॉ. धर्मेंद्र प्रताप, सहायक प्राध्यापक, बायो-टेक्नोलॉजी में एमएससी एवं पादप आण्विक विषाणु विज्ञान में पीएचडी में है. उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में पादप जैव प्रौद्योगिकी, पादप विषाणु विज्ञान और जैव ईंधन शामिल हैं.

प्रकाशन

प्रताप, डी., राज, एस. के., कुमार, एस., स्नेही, एस.के., गौतम, के. के और शर्मा, ए.के (2012). कोट प्रोटीन- मेडिएटेड ट्रान्सगेनिक रेजीस्टेंस इन टोमेटो अगेन्स्ट अ आईबी सबग्रूप कुकुम्बर मोजेक वाइरस स्ट्रेन. फोटोपैरासिटीका, खंड . 49, स. 4, 375-82. प्रभावी तत्व 0.6
प्रताप, डी. कुमार, एस., स्नेही, एस.के. और राज, एस के. (2012). ककड़ी मोज़ेक वायरस की जैविक और आणविक विशेषता भारत में टोमेटो का शूस्ट्रिंग बीमारी का कारण है जिसका सीएमवी के यूरोपीय या पूर्व एशियाई आइसोलेट्स से करीब आत्मीयता है. इंडियन जर्नल ऑफ वाइरोलॉजी, खंड 23, स. 1, 57-63. प्रभावी तत्व : 1.1.

संगोष्ठी / सम्मेलन

सुजाता उपाध्याय ने 6-9 नवम्बर 2012 को पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना में आयोजित भारत के बागवानी सोसायटी, नई दिल्ली के पांचवें भारतीय बागवानी कांग्रेस (एक अंतरराष्ट्रीय बैठक), में "सिक्किम में बड़ी इलायची पर क्षेत्रीय अध्ययन-२०१२" विषय पर एक पेपर प्रस्तुत किया. उन्होने 8-9 मार्च 2013 को चिंतन भवन गंगटोक में "ऑर्किड संरक्षण और सामुदायिक आजीविका के सतत विकास, एनआरसी ऑर्किड, पाक्योंग,सिक्किम" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय वार्ता में "भारत में ऑर्किड संवर्धन पर सुझाव" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

मंजू राणा ने 9 अप्रैल 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय में चाय बोर्ड, भारत द्वारा प्रायोजित "चाय संस्कृति और विज्ञान : भारतीय चाय के वर्तमान परिदृश्य के संदर्भ में" विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया.

अन्य शैक्षणिक गतिविधियां

धर्मेंद्र प्रताप ने 4-29 मार्च 2013 को जेएनयू के शैक्षणिक स्टाफ कॉलेज, नई दिल्ली में आयोजित 84वें अभिमुखी पाठ्यक्रम में भाग लिया. उन्होंने 23-27 फरबरी 2013 को गंगटोक, सिक्किम में आयोजित अंतरराष्ट्रीय पुष्प प्रदर्शनी और पुष्प खेती के सम्मेलन में भाग लिया.

एस. मनिवन्नान ने 1 मार्च 2013 को तडोंग, गंगटोक में पूर्वोत्तर पहाड़ी क्षेत्र के आईसीएआर शोध परिसर- सिक्किम केंद्र द्वारा ' पादप विविधता के सरक्षण और कृषकों के अधिकार अधिनायम" विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया.

मंजू राणा ने 8-9 मार्च 2013 को गंगटोक, सिक्किम में "ऑर्किड संरक्षण और सामुदायिक आजीविका के सतत विकास,एनआरसी ऑर्किड, पाक्योंग,सिक्किम" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय वार्ता में "भारत में ऑर्किड संवर्धन पर सुझाव" शीर्षक पर एक पेपर प्रस्तुत किया.

सुजाता उपाध्याय ने 4-31 जनवरी 2013 को बनारस हिन्दी विश्वविद्यालय, वाराणसी में आयोजित 63वें अभिमुखी पाठ्यक्रम में भाग लिया. उन्होने 19-26 सितंबर 2013 को एनआरसी ऑर्किड, पाक्योंग द्वारा ऑर्किडों का संरक्षण विषय पर आयोजित आदर्श प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लिया.

पेटेंट / पुरस्कार / सम्मान / मान्यता

धर्मेंद्र प्रताप को भारतीय वाइरोलॉजिकल सोसायटी, नई दिल्ली की सदस्यता प्राप्त हुई.

एस. मनिवन्णन को पादप प्रोटिओमिक्स की अंतरराष्ट्रीय सोसायटी की सदस्यता प्राप्त हुई.

सुजाता उपाध्याय को 8-9 मार्च 2013 को "ऑर्किड संरक्षण और सामुदायिक आजीविका के सतत विकास,एनआरसी ऑर्किड, पाक्योंग,सिक्किम" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय वार्ता में "भारत में ऑर्किड संवर्धन पर सुझाव" शीर्षक पर एक मैखिक प्रस्तुति में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ.

व्याख्यान

एस मनिवन्णन ने 11-12 अक्टूबर 2013 को गंगटोक में पूर्वोत्तर हिमालय क्षेत्र के आईसीएआर शोध परिसर, सिक्किम केंद्र द्वारा "ब्रिजिंग शोध का विस्तार : रणनीतियाँ और नीतियां" विषय पर आयोजित हितधारकों की कार्यशाला में "प्रौद्योगिकी और पहाड़ी बागवानी में इसके प्रयोग" पर व्याख्यान दिया.

मंजू राणा ने 22 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय के आईपीआर प्रकोष्ठ द्वारा बौद्धिक संपदा अधिकार पर आयोजित पहली कार्यशाला में "बौद्धिक संपदा अधिकार - एक परिचय" पर व्याख्यान दिया.

वर्ष के दौरान परिवर्धित प्रमुख उपकरण

आईसीपी-एमएस जो मिट्टी, पौधे और पानी में रहने वाले खनिज तत्वों का विश्लेषण करने के लिए प्रयोग किया जाता है.

इसैन्श्यल ऑइल एक्सट्राक्टर जो पौधों में आवश्यक तेलों और सुगंध यौगिकों निकालने और बढ़ाने के लिए प्रयोग किया जाता है.

सतत विकास और आजीविका प्रबंधन विद्यापीठ
बागान प्रबंधन और अध्ययन विभाग

प्रभारी अध्यक्ष का नाम : डॉ. नीलाद्री बाग
कार्यालय दूरभाष : 03592250060
मोबाइल नंबर : +918900457301
ईमेल आईडी : niladribag@rediffmail.com / scntinchettri@gmail.com

संकाय सदस्य

डॉ. अरुण छेत्री बॉटनी में एमएससी, पीएचडी हैं. और उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में पादप पारिस्थितिकी और वर्गीकरण, पादप विविधता, पारिस्थितिकीय निकेत मॉडलिंग शामिल हैं.

डॉ. नीलाद्री बाग वनस्पति विज्ञान में एमएससी,पीएचडी हैं और उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में कोशिकानुवंशिकी और पादप प्रजनन, प्लांट टिशू कल्चर और पादप विकास शामिल हैं.

विभाग की प्रमुख उपलब्धियां

उच्च उपकरणों के साथ एक विश्लेषणात्मक प्रयोगशाला और एक प्लांट टिशू कल्चर प्रयोगशाला स्थापित किए गए थे. विभाग को इसकी गतिविधियों को और अधिक सशक्त करने और आगे के शोध सहयोग हेतु भारत की चाय बोर्ड से प्रतिवर्ष रू. 3 लाख का वार्षिक सहायता अनुदान प्राप्त होता है. विभाग ने श्री राजा बनर्जी (चाय विशेषज्ञ), दार्जिलिंग के प्रसिद्ध मकईबारी चाय बागान के मालिक के साथ एक इंटरैक्टिव कार्यक्रम का आयोजन किया. वाणिज्य और उद्योग विभाग, सिक्किम सरकार, और मानव संसाधन विकास विभाग, सिक्किम सरकार ने विभाग को अपने विद्यार्थियों के लिए प्रशिक्षण, प्रदर्शन और अनुसंधान का लाभ उठाने के लिए टेमी चाय बागान की सुविधाओं को प्राप्त करने की अनुमति दी है.

प्रकाशन

अरुण छेत्री, एसके बारिक, बिक्रम सिंह, डी. अधिकारी और एम लिंगदोह. (2012). कोर्नस कौसा एफ़. बूएर्गर एक्स हेन्स सबएसक्यू. कौसा (कोरनाकी), अ न्यू रिकॉर्ड फ्रम इंडिया. टाइवनिया 57(10:77-81

बिक्रम सिंह, अरुण छेत्री, दिब्येंदु अधिकारी और सरोज कुमार बारिक. (2012). वर्गीकरण इतिहास, पुनराविष्कार और भारत से स्ट्रेब्लस इलिसिफोलियस (मोरेकेई) के खतरे की स्थिति का आकलन. जर्नल ऑफ बॉटनीकल रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्सस, 6(2) : 611-614.

नीलाद्री बाग, चंद्र, एस., पालनी, एल.एम.एस और नंदी, एस. के (2012). 'मग्गर' बांस (डेन्ड्रोकेलामास हेमिल्टोनि) और पुनर्जीवित पौधों के क्षेत्र के प्रदर्शन में दैहिक भ्रूणोद्भव करेंट साइन्स, 102 (9): 1279-1287.

बाग, ए, ज्याला, एन.एस. और बाग, एन (2012). आनुवंशिक बहुरूपताओं और कैंसर के खतरे पर भारतीय अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ कैंसर 49 (1): 144-162.

केंद्रीय सेवाएँ
केन्द्रीय पुस्तकालय

प्रमुख का नाम : डॉ. तमाल कुमार गुहा
कार्यालय दूरभाष : +91.3592.251060
कार्यालय फैक्स : +91.3592.251886
मोबाइल नंबर : +91.99321.34100
ईमेल आईडी : tkguha@yahoo.com

संक्षिप्त परिचय

समीक्षाधीन अवधि के दौरान विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय सभी छात्रों, संकाय सदस्यों और विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को किताबें जारी करना शुरू कर दिया गया.

पुस्तकालय में वर्तमान 33 हजार पुस्तकें, 1178 ब्रेल पुस्तकें और विभिन्न शैक्षणिक विषयों पर 561 सीडी/डीवीडी संग्रह हैं. इसके अलावा पुस्तकालय में पू-स्नातक पाठ्यक्रमों से संबंधित 2,723 पुस्तकों का संग्रह है. वर्ष 2013 में पुस्तकालय में 209 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित पत्रिकाएँ उपलब्ध हो रही है. वर्तमान केन्द्रीय पुस्तकालय में कुल 21 राष्ट्रीय और स्थानीय दैनिक समाचार पत्र उपलब्ध हो रहे हैं. पुस्तकालय ने मार्च 2013 में विभिन्न विषयों पर 9,600 से अधिक पुस्तकों की खरीद की है.

पुस्तकालय सभी कार्य दिवसों पर सुबह 9:30 से शाम 5:30 बजे तक और शनिवार को सुबह 9.30 से दोपहर 1:30 तक खुला रहता है. वर्तमान संकाय सदस्यों को 10 पुस्तकें और सामान्य लोग सहित अन्य उपयोगकर्ताओं को 5 पुस्तकें 21 दिन की अवधि के लिए जारी की जा रही हैं. सभी उपयोगकर्ताओं को स्वयं चैक इन/चैक आउट प्रणाली की सुविधा के लिए एक आरएफआईडी चिप एम्बेडेड पुस्तकालय कार्ड अलग से जारी किया गया है. केन्द्रीय पुस्तकालय में अब उपयोगकर्ता किओस्क के माध्यम से किताबें जारी कर सकते हैं.

इसके अलावा, विश्वविद्यालय के शैक्षणिक समुदायों को उनकी विशेष आवश्यकता के आधार पर आवश्यक संदर्भ/जानकारी सेवाएं भी प्रदान की जाती हैं. इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय ने विश्वविद्यालय के शैक्षणिक समुदायों के साथ-साथ सिविल सोसाइटी के सदस्यों के लिए भी संदर्भ और इंटरनेट सेवाओं का विस्तार किया है.

ऑनलाइन संसाधन

यूजीसी इनफ्लिबनेट केन्द्र (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की एक स्वायत्त इंटर यूनिवर्सिटी सेंटर) और डेलकॉन (बायोटैक्नोलॉजी लाइब्रेरी कंसोर्टियम विभाग) के सहयोग से विश्वविद्यालय के इन भागीदारी के माध्यम से अमेरिकन केमिकल सोसायटी, अमरीकी भौतिकी संस्थान, अमेरिकी भौतिक सोसाइटी, वार्षिक समीक्षा, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, राजनीतिक और आर्थिक सप्ताहिकी, एमरल्ड, भौतिकी संस्थान, जेसीसीसी, जेएसटीओआर, निम्बस मैथसाइन्सनेट, नेचर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, प्रोजेक्ट यूक्लिड, प्रोजेक्ट म्यूस, रॉयल सोसाइटी ऑफ कैमिस्ट्रि, स्प्रिंगर लिंक, टेलर और फ्रांसिस, विज्ञान वेब, वीली ब्लैकवेल आदि सहित पूर्ण पाठ और सार संक्षेप सेवा उपलब्ध हैं. वर्तमान उपरोक्त सहायता संघ के माध्यम से विभिन्न शैक्षणिक विषयों के 7000 से भी अधिक ई-जर्नल/ ई-संसाधन उपलब्ध हैं.

इन संसाधनों के अलावा, पुस्तकालय ने समीक्षाधीन अवधि के दौरान विश्वविद्यालय के अनुसंधान गतिविधियों की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए एससीआईफ़ाइंडर, इकनॉमिक आउटलुक (सीएमआईई रिपोर्ट्स) और इंडिया स्टेट डेटाबेस की सदस्यता ली है.इसके अलावा, पुस्तकालय ने विश्वविद्यालय के शैक्षणिक समुदायों को उनके गुणात्मक अनुसंधान कार्य के लिए संकाय सदस्यों के उपयोग के लिए एक प्रसिद्ध साहित्य/लेख के नकल- विरोधी सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराया है.

विज्ञान पुस्तकालय

शैक्षिक समुदाय की जरूरतों को पूरा करने के लिए लगभग 1500 विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों के संग्रह के साथ एक शाखा पुस्तकालय तादोंग स्थित साइन्स ब्लॉक में बनाया गया है. इस शाखा पुस्तकालय में भी राष्ट्रीय और स्थानीय दैनिक समाचार पत्र उपलब्ध होता है.

सैटेलाइट पुस्तकालय

विश्वविद्यालय के पुस्तकालय नेटवर्क के एक भाग के रूप में विश्वविद्यालय के संबद्ध कॉलेजों में उपग्रह पुस्तकालय स्थापित किए गए. विश्वविद्यालय ने उन कॉलेजों को अपने संकाय सदस्यों और छात्रों की तत्काल जरूरत को पूरा करने के लिए 1740 पुस्तकें प्रदान की . हालांकि, कॉलेजों को एक ही बार के लिए दान के रूप में उन पुस्तकों को हस्तांतरण किया जाने का निर्णय लिया गया.

आईसीटी बुनियादी ढांचा और लाइब्रेरी ऑटोमेशन

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार ने सिक्किम विश्वविद्यालय को इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के प्रयोग की सुविधा के लिए विशेष 1 जीबीपीएस कॉनेक्टिविटी की मंजूरी दी है. नवंबर 2010 से यह कॉनेक्टिविटी स्थापित की जा रही है. वर्तमान में, पूरा पुस्तकालय भवन वाई-फाई से जुड़ा हुआ है और उपयोक्ता को अपने लैपटॉप के माध्यम से इंटरनेट सुविधाओं का उपयोग करने की अनुमति दी जाती है.इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में पूरी तरह से इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों कॉ प्राप्त करने के लिए लगभग 10 कंप्यूटर टर्मिनल हैं.

पुस्तकालय के अपने प्रबंधन सॉफ्टवेयर में सूची डेटा रेट्रो परिवर्तित करने का कार्य प्रगति पर है. वर्तमान लगभग 20,000 पुस्तकों को सूचीबद्ध किया गया जिसमें में से 17,000 पुस्तकें पहले से ही आरएफआईडी टैग किया गया.

सिक्किम विश्वविद्यालय पुस्तक मेला 2013

पुस्तकालय मे 18-20 मार्च 2013 को सिक्किम विश्वविद्यालय पुस्तक मेला 2013 का आयोजन किया.सिक्किम मणिपाल विश्वविद्यालय के कुलपति ब्रिगेडियर (डॉ.)सोमनाथ मिश्रा द्वारा समारोह का उद्घाटन किया गया. (इस तीन दिवसीय समारोह में 12 पुस्तक विक्रेताओं और प्रकाशकों ने भाग लिया और विश्वविद्यालय के शैक्षणिक समुदाय, कॉलेजों और जनता द्वारा बहुत सराहा गया.

छात्र कल्याण डीन

छात्र कल्याण डीन	: डॉ. धनीराज छेत्री
टेलीफोन	: 03592-231198
ईमेल आईडी	: dhanirajc@gmail.com

छात्रों की गतिविधियां

सांस्कृतिक गतिविधियां

पांचवें स्थापना दिवस समारोह के एक भाग के रूप में 13 अगस्त 2012 को फ्रीस्टाइल नृत्य प्रतियोगिता 'सावनी झरी' का आयोजन किया गया. विश्वविद्यालय, संबद्ध महाविद्यालयों और अन्य संस्थानों के छात्रों ने पारंपरिक और पश्चिमी दोनों प्रकार के नृत्य प्रदर्शन किया.

विश्वविद्यालय के छात्रों ने 8-10 नवंबर 2012 को झारखंड, रांची के केन्द्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित "आखरा-आदिवासी भारत अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव" में भाग लिया.

खेल गतिविधियां

विश्वविद्यालय के छात्रों ने 1-15 अगस्त 2012 को 65 वें स्वतंत्रता दिवस ओपन फुटबॉल टूर्नामेंट में भाग लिया.

अन्य गतिविधियां

विश्वविद्यालय के छात्रों ने 31/08/2012 से 14/09/2012 तक आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लिया.

30 मार्च 2013 को चांसलर जस्टिस (श्रीमती) रूमा पाल के साथ वार्तालाप सत्र.

परीक्षा विभाग

परीक्षा नियंत्रक (प्रभारी) : डा. सुरेश गुरुंग
टेलीफोन नंबर : 03592-251540
ईमेल आईडी : suskgurung@gmail.com

विश्वविद्यालय अपने बहुत कम संख्या में कर्मचारियों के होने के बावजूद परीक्षा की अंतिम तिथि से 20 दिनों के भीतर परिणाम घोषित करने का दावा करता है.

मानसून सेमेस्टर परिणाम 2012

मानसून सेमेस्टर 2012 में 5756 परीक्षार्थी विभिन्न परीक्षाओं में शामिल हुए और जिसमें से 89.21 प्रतिशत छात्र अगले सेमेस्टर के लिए उत्तीर्ण हुए हैं.

यूजीसी नेट परीक्षा

विश्वविद्यालय ने जून और दिसंबर 2012 की यूजीसी-नेट परीक्षा का आयोजन किया जिसका विवरण निम्नलखित हैं :

विवरण	प्राप्त कुल आवेदन	परीक्षार्थियों की कुल संख्या	एसयू केंद्र से उत्तीर्ण कुल परीक्षार्थी	सिक्किम से उत्तीर्ण परीक्षार्थी
जून 2012	556	487	51	32
दिसंबर 2012	565	478	31	16

वित्त विभाग

विश्वविद्यालय को मानव संसाधन विकास मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माध्यम से भारत सरकार से उदार समर्थन मिला. आलोच्य वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय को बारहवीं योजना के तहत 51.72 करोड़ रुपये सहायता अनुदान प्राप्त हुआ. वर्ष के दौरान 34.75 करोड़ रुपये व्यय था. विश्वविद्यालय की वार्षिक लेखा से पूरा विवरण मिल सकता है, फिर भी व्यय और प्राप्तियों का एक संक्षिप्त सारांश नीचे सारणीबद्ध है :

प्राप्तियां *		व्यय *	
मद	राशि राशि [रुपये लाख में]	मद	राशि [रुपये लाख में]
शुरुआती शेष	672.40	आवर्ती	
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुदान	5,172.50	वेतन	810.41
शैक्षणिक प्राप्तियां	147.85	फ़ेलोशिप	38.22
अर्जित ब्याज	101.30	शैक्षणिक व्यय	334.20

		प्रशासनिक - व्यय	660.37
		स्थापना और अन्य व्यय	58.27
		आवर्ती उप कुल (ए)	1,901.47
		अनावर्ती	
		पुस्तकें	348.19
		प्रयोगशाला उपकरण	880.85
		अन्य बुनियादी सुविधाएं (कंप्यूटर, नेटवर्किंग, फर्नीचर, फिक्चर, कार्यालय उपकरण आदि)	340.34
		अन्य बुनियादी सुविधाएं (कंप्यूटर, नेटवर्किंग, फर्नीचर, फिक्चर, कार्यालय उपकरण आदि)	340.34
		अनावर्ती उप कुल (बी)	1,569.38
		(सी) समायोजित योजनाएं	4.23
		(ए + बी + सी) कुल	3,475.08
		अप्रयुक्त राशि सी/ओ	2,618.97
कुल	6,094.05	कुल	6,094.05

* प्रदर्शित आंकड़े सांविधिक लेखा परीक्षा के अधीन हैं.

2007 में स्थापित एक नया विश्वविद्यालय होने के कारण यहाँ कोई गैर-योजना अनुदान नहीं है.2012-13 के लिए योजना अनुदान के आवंटन के लिए 5,300 लाख रुपये अनुमोदित की गई, जिसमें सभी मदों पर संभावित आवंटन शामिल हैं. परिसर के निर्माण की प्रक्रिया शुरू होने के कारण इस वर्ष के दौरान सभी योजना के तहत 5172.50 लाख रुपये एकत्रित राशि प्रदान की गई. इस वर्ष (2012-2013) के दौरान प्राप्त कुल अनुदान राशि की 3475.08 लाख रुपये उपयोग हुआ जो 57 प्रतिशत था . पूंजीगत परिसंपत्तियों के निर्माण की दिशा में व्यय 1569.38 लाख रुपये और रुपए व्यय 1569.38 लाख और आंतरिक राजस्व रुपए 249.15 लाख रुपये थे.

विश्वविद्यालय ने आलोच्य वर्ष में अपने वित्तीय प्रशासन में कड़ी मितव्ययिता के उपाय शुरू किए. विश्वविद्यालय का कार्य दूर तक फैली हुए 19 किराये के इमारतों में चलने और गैर सजातीय भौगोलिक स्थानों में बिखरे होने के कारण किराये पर लिए गए इमारतों के किराये, सुरक्षा सेवाओं, आंतरिक परिवहन, बिजली और दूरसंचार सेवाओं पर अपेक्षाकृत अधिक प्रशासनिक व्यय उठाना पड़ा जो एक चिंतनीय विषय है.

स्वास्थ्य केन्द्र

चिकित्सा अधिकारी	:डा. मंजूश्री थापा मंगर
कार्यालय के फोन नंबर	:03592-2251056
मोबाइल नंबर	: 8388066478
ईमेल आईडी	:manjushreethapa@mailcity.com

स्वास्थ्य केन्द्र का संक्षिप्त विवरण

स्वास्थ्य केन्द्र वर्ष 2012 के मई महीने में एक चिकित्सा अधिकारी और एक नर्स को लेकर शुरू किया गया था. वर्तमान में यह केंद्र कंचनजंघा प्रबंधन खंड, छठा मील, तादोंग, गंगटोक के सटे भवन में स्थापित है. चिकित्सा अधिकारी जेआईपीएमईआर, पांडिचेरी से एमबीबीएस हैं. विश्वविद्यालय में शामिल होने से पहले वे 6 साल तक राज्य क्षय रोग प्रकोष्ठ में चिकित्सा अधिकारी थी.

स्वास्थ्य केन्द्र में उपलब्ध सुविधाएं

बाह्य रोगी क्लिनिक

आउट पेशेंट छात्रों, कर्मचारियों और उनके आश्रितों का आउट पेशेंट क्लिनिक में देखभाल किया जाता है. कार्य दिवस में सुबह 9.30 से शाम 5.30 तक लघु प्रक्रिया भी की जाती है.

आपातकालीन सुविधा

छात्रों, कर्मचारियों और उनके आश्रितों को स्वास्थ्य केन्द्र में और 24x7 टेलीफोनिक परामर्श के माध्यम से आपातकालीन सेवाएं दी जाती हैं.

रोगी के लिए सुविधाएं

छात्रों, कर्मचारियों और उनके आश्रितों को क्लिनिक में ही चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती हैं.

औषधालय

केंद्र में सभी आवश्यक खाने वाली और इंजेक्टेबल दवाएं मौजूद हैं. औषध चिकित्सा अधिकारी के परामर्श के अनुसार स्टाफ नर्स द्वारा प्रदान किया जाता है.

एम्बुलेंस सुविधा

एम्बुलेंस / पूल वाहन आपातकालीन चिकित्सा प्रयोजनों के लिए प्रदान की जाती है.

हिन्दी प्रकोष्ठ

हिंदी अधिकारी	: श्री शैलेश शुक्ला
टेलीफोन नंबर	: 08759411563
ईमेल आईडी	: poetshailesh@gmail.com

हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा सम्पन्न कार्य

वार्षिक रिपोर्ट 2011-12 का हिंदी अनुवाद

वार्षिक लेखा 2011-12 का हिंदी अनुवाद

हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए गए.

सिक्किम विश्वविद्यालय की मासिक समाचार पत्रिका "एसयू क्रॉनिकल" का हिंदी अनुवाद.

विश्वविद्यालय के तिमाही राजभाषा प्रगति रिपोर्ट तैयार करना.

विश्वविद्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की नियमित मासिक बैठक

सिक्किम विश्वविद्यालय ने कुलपति की अध्यक्षता में शिक्षण विभाग, प्रशासन, वित्त विभाग, परीक्षा विभाग और पुस्तकालय के प्रतिनिधियों को लेकर एक राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की मासिक बैठकें नियमित रूप से आयोजित की जाती है.

हास्य कवि सम्मेलन

11 अगुस्त 2012 को एक हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें देश भर से आए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय कवियों जैसे डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, श्री राजेंद्र राजा और श्री बागी चाचा ने अपनी कविता सुनाई. इनके अलावा तिरू प्रसाद नेपाल, बिजय सुब्बा और अमर बनिया लाहोरो जैसे स्थानीय कवियों ने भी अपनी कवितायें सुनाईं.

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी प्रकोष्ठ ने 31 अगस्त से 14 सितंबर 2012 तक 15 दिवसीय हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया. इस कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह 31 अगस्त 2012 को आयोजित किया गया. इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सिक्किम के वरिष्ठ पत्रकार श्री सुभाष दीपक और विशिष्ट अतिथि के रूप में दूरदर्शन, आइजोल के सहायक निदेशक श्री विनय राज तिवारी ने उपस्थित होकर समारोह की गरिमा बढ़ाईं. उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता सिक्किम विश्वविद्यालय के कार्यकारी कुलसचिव प्रो. जे.पी. तामङ ने की. इस पखवाड़े के दौरान हिंदी प्रकोष्ठ ने गायन, नृत्य, कविता पाठ, और विभिन्न भाषाओं में स्वरचित कहानी पाठ आदि विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया. समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सिलीगुड़ी के पत्रकार श्री गोपाल शॉ, विशिष्ट अतिथि के रूप में सिलीगुड़ी के पत्रकार श्री इरफान-ए-आज़म और सिक्किम विश्वविद्यालय के नेपाली विभाग के प्राध्यापक प्रो. प्रताप चन्द्र प्रधान उपस्थित थे.

हिन्दी परीक्षा की तैयारी के लिए कर्मचारियों के लिए हिंदी कक्षाएं

राजभाषा विभाग के हिंदी शिक्षण योजना के अधीन प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ जैसे विभिन्न पाठ्यक्रमों में जनवरी 2013 तक विश्वविद्यालय के 36 संकाय सदस्य और प्रशासनिक कर्मचारियों का नामांकन हुआ. हिन्दी प्रकोष्ठ ने इन पाठ्यक्रमों में मनोनीत कर्मचारीयों के लिए कक्षाओं का आयोजन किया.

प्रशिक्षण, कार्यशाला और सेमिनार में प्रतिभागिता

श्री शैलेश शुक्ला, हिंदी अधिकारी ने 15-19 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित हिंदी अधिकारियों के लिए 5 दिवसीय अभिमुखीकरण कार्यक्रम में भाग लिया. उन्होंने 6-8 नवंबर 2012 को गोवा में राजभाषा एवं प्रबंधन विकास परिषद द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी में भाग लिया. उन्होने 2-4 मार्च 2013 को कोहिमा, नागालैंड में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा "वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली" विषय पर आयोजित तीन दिवसीय संगोष्ठी में भाग लिया.

सुश्री जुतिका गोस्वामी, हिंदी अनुवादक ने 11-13 जुलाई 2012 को नैनीताल में राजभाषा अकादमी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित तीन दिवसीय विशेष हिंदी संगोष्ठी और कार्यशाला में भाग लिया. उन्होने 4-8 फरवरी 2013 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, मालिगाँव द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय कंप्यूटर में हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया.

संपादक - मंडल

प्रो प्रताप चंद्र प्रधान	-	अध्यक्ष
डॉ. अप्पला नाग शंकर	-	सदस्य
डॉ. धृति रॉय	-	सदस्य
श्रीमती परविंदर कौर	-	सदस्य
डॉ. एन सत्यनारायण	-	सदस्य
डॉ. मनीष श्रीवास्तव	-	सदस्य
डॉ. सुबीर मुखोपध्याय	–	सदस्य

हिंदी अनुवाद

श्री शैलेश शुक्ला

सुश्री जुतिका गोस्वामी